7-11-89

तीनों सम्बन्धों की सहज और श्रेष्ठ पालना

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले–

आज विश्व-स्नेही बापदादा चारों ओर के विशेष बाप-स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। बाप का स्नेह और बच्चों का स्नेह दोनों एक-दो से ज्यादा ही है। स्नेह मन को और तन को अलौकिक पंख लगाए समीप ले आता है। स्नेह ऐसा रूहानी आकर्षण है जो बच्चों को बाप की तरफ आकर्षित कर मिलन मनाने के निमित्त बन जाता है। मिलन मेला चाहे दिल से, चाहे साकार शरीर से–दोनों अनुभव स्नेह की आकर्षण से ही होता है। रूहानी परमात्म-स्नेह ने ही आप ब्राह्मणों को दिव्य जन्म दिया। आज अभी-अभी रूहानी स्नेह की सर्च-लाइट द्वारा चारों ओर के ब्राह्मण बच्चों की स्नेहमयी सूरतें देख रहे हैं। चारों ओर के अनेक बच्चों के दिल के स्नेह के गीत, दिल का मीत बापदादा सुन रहे हैं। बापदादा सर्व स्नेही बच्चों को चाहे पास हैं, चाहे दूर होते भी दिल के पास हैं, स्नेह के रिटर्न में वरदान दे रहे हैं –

''सदा खुशनसीब भव! सदा खुशनुमा भव। सदा खुशी की खुराक द्वारा तन्दुरूस्त भव! सदा खुशी के खजाने से सम्पन्न भव!''

रूहानी स्नेह ने दिव्य जन्म दिया, अब वरदाता बापदादा के वरदानों से दिव्य पालना हो रही है। पालना सभी को एक द्वारा, एक ही समय, एक जैसी मिल रही है। लेकिन मिली हुई पालना की धारणा नम्बरवार बना देती है। वैसे विशेष तीनों संबंध की पालना अति श्रेष्ठ भी है और सहज भी है। बापदादा द्वारा वर्सा मिलता, वर्से की स्मृति द्वारा पालना होती–इसमें कोई मुश्किल नहीं। शिक्षक द्वारा दो शब्दों की पढ़ाई की पालना में भी कोई मुश्किल नहीं। सतगुरू द्वारा वरदानों के अनुभूति की पालना–इसमें भी कोई मुश्किल नहीं। लेकिन कई बच्चों के धारणा की कमजोरी के कारण समय-प्रति-समय सहज को मुश्किल बनाने की आदत बन गई है। मेह-नत करने के संस्कार सहज अनुभव करने से मजबूर कर देते हैं और मजबूर होने के कारण, धारणा की कमजोरी के कारण परवश हो जाते हैं। ऐसे परवश बच्चों की जीवनलीला देख बापदादा को ऐसे बच्चों पर रहम आता है। क्योंकि बाप के रूहानी स्नेह की निशानी यही है–कोई भी बच्चे की कमी, कमजोरी बाप देख नहीं सकते। अपने परिवार की कमी अपनी कमी होती है, इसलिए बाप को घृणा नहीं लेकिन रहम आता है। बापदादा कभी-कभी बच्चों की आदि से अब तक की जन्मपत्री देखते हैं। कई बच्चों की जन्म-पत्री में रहम-ही-रहम होता है और कई बच्चों की जन्मपत्री राहत देने वाली होती है। अपनी आदि से अब तक की जन्मपत्री चेक

करो। अपने आपको देख करके जान सकते हो–तीनों संबंध के पालना की धारणा सहज और श्रेष्ठ है? क्योंकि सहज चलना दो प्रकार का है–एक है वरदानों से सहज जीवन और दूसरी है लापरवाही, डोंटकेयर–इससे भी सहज चलते हैं। वरदानों से वा रूहानी पालना से सहज चलने वाली आत्मायें केयरफुल होंगी, डोंटकेयर नहीं होंगी। लेकिन अटेन्शन का टेन्शन नहीं होगा। ऐसी केयरफुल आत्माओं का समय, साधन और सरकमस्टांश प्रमाण ब्राह्मण परिवार का साथ, बाप की विशेष मदद सहयोग देती है। इसलिए सब सहज अनुभव होता है। तो चेक करो–यह सब बातें मेरी सहयोगी हैं? इन सब बातों का सहयोग ही सहजयोगी बना देता है। नहीं तो कभी छोटा सा सरकमस्टांश, साधन, समय, साथी आदि भले होते चींटी समान हैं लेकिन छोटी चींटी महारथी को भी मूर्च्छित कर देती है। मूर्च्छित अर्थात् वरदानों की सहज पालना की श्रेष्ठ स्थिति से नीचे गिरा देती है। मजबूर और मेहनत–यह दोनों मूर्च्छित की निशानी हैं। तो इस विधि से अपनी जन्मपत्री को चेक करो। समझा क्या करना है? अच्छा-

सदा तीनों संबंधों की पालना में पलने वाले, सदा सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्टता की झलक फैलाने वाले, सदा फास्ट पुरुषार्थी बन स्वयं को फर्स्ट जन्म में फर्स्ट अधिकार प्राप्त कराने वाले, ऐसे खुशनसीब बच्चों को वरदाता बाप का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से मुलाकात

सभी दूर-दूर से आये हैं। सबसे दूर से तो बापदादा आते हैं। आप कहेंगे-हमको तो मेहनत लगती है। बापदादा के लिए भी, बेहद में रहने वाले और हद में प्रवेश हो–यह भी तो न्यारी बात हो जाती है। फिर भी लोन लेना होता है। आप लोग टिकट लेते हो बाप लोन लेता है। सभी को वरदान मिले? चाहे ७-८ तरफ से आये हो लेकिन हर जोन का कोई-न-कोई है ही। इसलिए सब ज़ोन यहाँ हाजिर हैं। विदेश भी और देश भी है। इन्टरनेशनल ग्रुप हो गया ना। अच्छा।

तामिलनाडु ग्रुप

सबसे बड़ा ग्रुप तामिलनाडु है। तामिलनाडु की विशेषता क्या है? स्नेह के वायब्रेशन को कैच करते हैं। बाप से स्नेह अविनाशी लिफ्ट बन जाती है। सीढ़ी पसन्द है या लिफ्ट पसन्द है? सीढ़ी है मेहनत, लिफ्ट है सहज। तो स्नेह में कभी भी अलबेले नहीं होना, नहीं तो लिफ्ट जाम हो जायेगी। क्योंकि अगर लाइट बन्द हो जाती है तो लिफ्ट का क्या हाल होता है? लाइट बन्द होने से, कनेक्शन खत्म होने से जो सुख की अनुभूति होनी चाहिए वह नहीं होती। तो स्नेह में अलबेलापन है तो बाप से करेन्ट नहीं मिलेगी, इसलिए फिर लिफ्ट काम नहीं करेगी। स्नेह अच्छा है, अच्छे में अच्छा करते रहना। तो इस लिफ्ट की गिफ्ट को साथ ले जाना।

मैसूर ग्रुप

मैसूर की विशेषता क्या है? मैसूर निवासी बच्चों को बापदादा गिफ्ट दे रहे हैं–''संगमयुग की सुहावनी मौसम का फल''। संगमयुग का फल क्या है? मौसम का फल जो होता है वह मीठा होता है। बिना मौसम का फल कितना भी बढ़िया हो लेकिन अच्छा नहीं होता। तो मैसूर निवासी बच्चों को संगमयुग के मौसम का फल है ''प्रत्यक्षफल''। अभी-अभी श्रेष्ठ कर्म किया और अभी-अभी कर्म का प्रत्यक्ष फल मिला। इसलिए सदा अपने को इस नशे की स्मृति में रखना कि हम संगमयुग के मौसम का प्रत्यक्षफल खाने वाले हैं, प्राप्त करने वाले हैं। वैसे भी वृद्धि अच्छी कर रहे हैं। तमिलनाडु में भी वृद्धि बहुत अच्छी हो रही है।

ईस्टर्न ज़ोन ग्रुप

ईस्ट से क्या निकलता है? सूर्य निकलता है ना। तो ईस्टर्न ज़ोन वालों को बापदादा एक विशेष पुष्प दे रहे हैं। वह है विशेषता के आधार पर। ''सूर्यमुखी'' जो सदा ही सूर्य की सकाश में खिला हुआ रहता है। मुख सूर्य की तरफ होता है इसिलए सूर्यमुखी कहा जाता है और उसकी सूरत भी देखेंगे तो जैसे सूर्य की किरणें होती हैं–ऐसे चारों ओर उसकी पंखुड़ी किरणों के समान सर्किल में होती हैं। तो सदा ज्ञान-सूर्य बापदादा के सम्मुख रहने वाले, कभी भी ज्ञान-सूर्य से दूर होने वाले नहीं। सदा समीप और सदा सम्मुख। इसको कहते हैं सूर्यमुखी फूल। तो ऐसे सूर्यमुखी पुष्प के समान सदा ज्ञान-सूर्य के प्रकाश से स्वयं भी चमकने वाले और दूसरों को भी चमकाने वाले–यह है ईस्टर्न ज़ोन की विशेषता। वैसे भी देखो ज्ञान सूर्य ईस्टर्न ज़ोन से प्रगट हुआ है। प्रवेशता तो हुई ना! तो ईस्टर्न ज़ोन वाले सबको अपने राज्य, दिन में ले जाने वाले, रोशनी में ले जाने वाले हैं।

बनारस ग्रुप

बनारस की विशेषता क्या है? हर एक में रूहानी रस भरने वाले। बिना रस नहीं, रस के बिना नहीं हैं। लेकिन सर्व में रूहानी रस भरने वाले, सभी को परमात्म-स्नेह का, प्रेम का रस अनुभव कराने वाले। क्योंकि जब बाप के प्रेम के रस में भरपूर हो जाते हैं तो और सर्व रस फीका लगता है। आत्माओं में परमात्म-प्रेम का रस भरने वाले। क्योंकि वहाँ भक्ति का रस बहुत है। भक्ति के रस वालों को परमात्म-प्रेम रस का अनुभव कराने वाले। सदा ज्यादा रस किसमें होता है? बनारस वाले सुनाओ। रसगुल्ले में। देखो नाम ही पहले रस से शुरू होता है। तो सदा ज्ञान का रसगुल्ला खाने वाले और खिलाने वाले। तो सदैव अमृतवेले पहले मन को, मुख को रसगुल्ले से मीठा बनाने वाले और औरों को भी मन से और मुख से मीठा बनाने वाले। इसलिए बनारस को मिठाई दे रहे

हैं–रसगुल्ला।

बम्बई ग्रुप

बाम्बे को पहले से ही वरदान मिला हुआ है–नरदेसावर अर्थात् सभी को साहूकार बनाने वाला। नरदेसावर का अर्थ ही है जो सदा धन से सम्पन्न रहता है। बाम्बे वालों की विशेषता है–''गरीब को साहूकार बनाने वाले'' जो बाप का टाइटल है–''गरीब निवाज।'' तो बाम्बे वालों को भी बापदादा टाइटल दे रहे हैं –''गरीब-निवाज़ बाप के बच्चे, गरीबों को साहूकार बनाने वाले।'' इसलिए सदा स्वयं भी खजानों से सम्पन्न और औरों को भी सम्पन्न बनाने वाले। इसलिए विशेषता है गरीब निवाज़ बाप के सहयोगी साथी। तो बाम्बे वालों को टाइटल दे रहे हैं। मिठाई नहीं, टाइटल।

कुल्लू-मनाली ग्रुप

कुल्लू मनाली की विशेषता क्या है? कुल्लू में देवताओं का मेला लगता है जो और कहीं नहीं लगता। तो कुल्लू और मनाली वालों को देवताओं के मिलन का स्थान कहा जाता है। तो देवता का अर्थ ही है ''दिव्यगुणधारी''। दिव्यगुणों की धारणा का यादगार देवता रूप है। तो देवताओं के प्यार का, मिलन का सिम्बल इस धरनी का है। इसलिए बापदादा ऐसे धरनी के निवासी बच्चों को विशेष दिव्यगुणों का गुलदस्ता गिफ्ट में दे रहे हैं। इसी दिव्यगुणों के गुलदस्ते द्वारा चारों ओर आत्मा और परमात्मा का मेला करते रहेंगे। वह देवताओं का मेला करते हैं, आप दिव्यगुणों के गुलदस्ते द्वारा आत्मा-परमात्मा का मेला मना भी रहे हो लेकिन और ज़ोर-शोर से मेला मनाओ जो सब देखें। देवताओं का मेला तो देवताओं का रहा लेकिन यह मेला तो सर्वश्रेष्ठ मेला है। इसलिए दिव्यगुणों के खुशबूदार गुलदस्ते की गिफ्ट को सदा अपने साथ रखो।

मीटिंग वालों के प्रति

मीटिंग वाले किसलिए आये हैं? सेटिंग करने। प्रोग्राम की सेटिंग, स्पीकर्स की सेटिंग। सीटिंग कर सेटिंग करने के लिए आये हो। जैसे स्पीच के लिए सेट किया है या प्रोग्राम बनाया है, ऐसे ही स्पीकर्स या जो भी आने वाले ऑब्जर्वर हैं, उन्हों को अभी से ऐसे श्रेष्ठ वायब्रेशन दो जो वह सिर्फ स्पीच की स्टेज थोड़े टाइम के लिए सेट नहीं करें लेकिन सदा अपने श्रेष्ठ स्टेज पर सेट हो जाएं। इसलिए बापदादा मीटिंग वालों को अविनाशी सेटिंग की मशीन गिफ्ट में देते हैं जिससे सेट करते रहना। आजकल तो मशीनरी युग है ना। मनुष्यों द्वारा जो कार्य बहुत समय लेता है वो मशीनरी द्वारा सहज और जल्दी हो जाता है। तो अभी अपने सेटिंग की मशीनरी ऐसे प्रयोग में लाओ जो बहुत जल्दी-से-जल्दी सेटिंग होती जाए। क्योंकि अपनी सुनहरी दुनिया वा सुखमय दुनिया के प्लैन अनुसार सीट तो सबकी सेट करनी है ना। प्रजा को भी सेट करना है तो प्रजा की प्रजा को भी सेट करना है। राजे-रानी तो सेट हो रहे हैं लेकिन रॉयल फैमिली है, साहूकार फैमिलीज़ हैं, फिर प्रजा है, दास-दासी हैं–कितनी सेटिंग करनी है! तो अब सेटिंग की मशीनरी को मीटिंग वाले विशेष फास्ट बनाओ। फास्ट बनाना अर्थात् अपने को फास्ट पुरूषार्थी बनाना। यह उसका स्विच है। मशीन का स्विच होता है ना। तो फास्ट मशीनरी का स्विच है–फास्ट पुरूषार्थी बनना अर्थात् फास्ट सेटिंग की मशीनरी को ऑन करना। बड़ी जिम्मेवारी है। तो अभी अपने राजधानी के सेटिंग की मशीनरी को फास्ट करो।

डबल विदेशी ग्रुप

डबल विदेशी बच्चे आजकल सेटेलाइट की योज़ना कर रहे हैं। बाप को प्रत्यक्ष करने की धुन में बहुत अच्छे आगे बढ़ रहे हैं। इस-लिए बापदादा 'सदा सेट डबल लाइट रहने' की गिफ्ट दे रहे हैं। वो सेटेलाइट का प्रोग्राम करने का सोच रहे हैं और बापदादा सदा सेट डबल लाइट की गिफट दे रहे हैं। सदा अपनी डबल लाइट की स्थिति में सेट रहने वाले–ऐसे डबल विदेशी बच्चों को बापदादा दिलाराम अपने दिल का स्नेह गिफ्ट में दे रहे हैं।

अमेरिका निवासी बच्चे विशेष याद कर रहे हैं। बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से विश्व में सेवा करने का साधन अच्छा बना है। यू.एन. भी सेवा की साथी बनी हुई है। भारत सेवा का फाउण्डेशन है। इसलिए भारत का भी विशेष सर्विसएबुल साथी (जगदीश जी) गये हुए हैं। फाउण्डेशन भारत है और प्रत्यक्षता के निमित्त विदेश। प्रत्यक्षता का आवाज दूर से भारत में नगाड़ा बनकर के आयेगा। बच्चों के वायब्रेशन आ रहे हैं। वैसे तो लंदन निवासी भी साथी हैं, आस्ट्रेलिया वाले भी विशेष सेवा के साथी हैं, अफ्रीका भी कम नहीं। सभी देशों का सहयोग अच्छा है। बापदादा देश-विदेश के हर एक निमित्त बने हुए सेवाधारी बच्चों को अपनी-अपनी विशेषता प्रमाण विशेष यादप्यार दे रहे हैं। हर एक की महिमा अपनी-अपनी है। एक-एक की महिमा वर्णन करें तो कितनी हो! लेकिन बाप-दादा के दिल में हर एक बच्चे की विशेषता की महिमा समाई हुई है।

मधुबन निवासी सेवाधारी भी सेवा के हिम्मत की मदद देने वाले हैं। इसलिए जैसे बाप के लिए गाया हुआ है–''हिम्मते बच्चे मददे बाप'', इसी रीति से जो भी सेवा चलती है, सीज़न चलती है–तो मधुबन निवासी भी हिम्मत के स्तंभ बनते हैं और मधुबन वालों की हिम्मत से आप सबको रहने, खाने, सोने, नहाने की मदद मिलती है। इसलिए बापदादा सभी मधुबन निवासी बच्चों को हिम्मत की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

11-11-89

दिव्यता–संगमयुगी ब्राह्मणों का श्रृंगार है

आज दिव्य बुद्धि विधाता, दिव्य दृष्टि दाता अपने दिव्य जन्मधारी, दिव्य आत्माओं को देख रहे हैं। बापदादा ने हर एक बच्चे को दिव्य जीवन अर्थात् दिव्य संकल्प, दिव्य बोल, दिव्य कर्म करने वाली दिव्य मूर्तियां बनाया है। दिव्यता आप संगमयुगी बच्चों का श्रेष्ठ श्रृंगार है। एक है साधारणता, दूसरा है दिव्यता। दिव्यता की निशानी आप सभी जानते हो। दिव्य-जीवनधारी आत्मा किसी भी आत्मा को अपने दिव्य नयनों द्वारा अर्थात् दृष्टि द्वारा साधारणता से परे दिव्य अनुभूतियां करायेगी। सामने आने से ही साधारण आत्मा अपनी साधारणता को भूल जायेगी। क्योंकि आजकल के समय अनुसार वर्तमान के साधारण जीवन से मैजारिटी आत्मायें सन्तुष्ट नहीं हैं। आगे चलकर यह आवाज सुनेंगे कि यह जीवन कोई जीवन नहीं है, जीवन में कुछ नवीनता चाहिए। ''अलौकिकता'' ''दिव्यता'' जीवन का विशेष आधार है–यह अनुभव करेंगे। कुछ चाहिए, कुछ चाहिए–इस 'चाहिए' की प्यास से चारों ओर ढूंढेंगे। जैसे स्थूल पानी की प्यास में तड़पता हुआ मानव चारों ओर पानी की बूंद के लिए तड़पता है, ऐसे दिव्यता की प्यासी आत्माएं चारों ओर अंचली लेने के लिए तड़फती हुई दिखाई देंगी। तड़पती हुई कहाँ पहुंचेंगी? आप सबके पास। ऐसे दिव्यता के खजाने से भरपूर बने हो? हर समय दिव्यता अनुभव होती है वा कभी साधारण, कभी दिव्य? जब बाप ने दिव्य दृष्टि, दिव्य बुद्धि का वरदान दे दिया तो दिव्य बुद्धि में साधारण बातें आ नहीं सकती। दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण तन से साधारण कर्म कर नहीं सकता। चाहे देखने में लोगों के लिए साधारण कर्म हो। दूसरों के समान आप सब भी व्यवहार करते हैं, व्यापार करते हैं वा गवर्मेन्ट की नौकरी करते हैं, मातायें खाना बनाती हैं। देखने में साधारण कर्म है लेकिन इस साधारण कर्म में भी आपका और लोगों से न्यारा ''अलौकिक'' दिव्य कर्म हो। महान अन्तर इसलिए सुनाया कि दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण तन से साधारण कर्म नहीं करते, मन से साधारण संकल्प नहीं कर सकते, धन को साधारण रीति से कार्य में नहीं लगा सकते। क्योंकि तन, मन और धन–तीनों के ट्रस्टी हो, इसलिए मालिक बाप की श्रीमत के बिना कार्य में नहीं लगा सकते। हर समय बाप की श्रीमत दिव्य कर्म करने की मिलती है। इसलिए चेक करो कि सारे दिन में साधारण बोल और कर्म कितना समय रहा और दिव्य अलौकिक कितना समय रहा? कई बच्चे कहाँ-कहाँ बहुत भोले बन जाते हैं। चेक करते हैं लेकिन भोलेपन में। समझते हैं–सारे दिन में कोई विशेष गलती तो की नहीं, बुरा सोचा नहीं, बुरा बोला नहीं। लेकिन यह चेक किया कि दिव्य वा अलौकिक कर्म किया? क्योंकि साधारण बोल वा कर्म जमा नहीं होता, न मिटता है, न बनता है। वर्तमान का दिव्य संकल्प वा दिव्य बोल और कर्म भविष्य का जमा करता है। जमा का खाता बढ़ता नहीं है। तो जमा करने के हिसाब में भोले बन जाते हैं–खुश रहते हैं कि मैंने वेस्ट नहीं किया। लेकिन सिर्फ इसमें खुश नहीं रहना है। वेस्ट नहीं किया लेकिन बेस्ट कितना बनाया? कई बार बच्चे कहते हैं –मैंने आज किसको दुख नहीं दिया। लेकिन सुख भी दिया? दु:ख नहीं दिया–इससे वर्तमान अच्छा बनाया। लेकिन सुख देने से जमा होता है। वह किया वा सिर्फ वर्तमान में ही खुश हो गये? सुखदाता के बच्चे सुख का खाता जमा करते। सिर्फ यह नहीं चेक करो कि दुख नहीं दिया लेकिन सुख कितना दिया। जो भी सम्पर्क में आये मास्टर सुखदाता द्वारा हर कदम में सुख की अनुभूति करे। इसको कहा जाता है दिव्यता वा अलौकिकता। तो चेकिंग भी साधारण से गुह्य चेकिंग करो। हर समय यह स्मृति रखो कि एक जन्म में २१ जन्मों का खाता जमा करना है। तो सब खाते चेक करो–तन से कितना जमा किया? मन के दिव्य संकल्प से कितना जमा किया? और धन को श्रीमत प्रमाण श्रेष्ठ कार्य में लगाकर कितना जमा किया? जमा के खाते तरफ विशेष अटेन्शन दो। क्योंकि आप विशेष आत्माओं का जमा करने का समय इस छोटे से जन्म के सिवाए सारे कल्प में कोई समय नहीं है। और आत्माओं का हिसाब अलग है। लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए –''अब नहीं तो कब नहीं''। तो समझा क्या करना है? इसमें भोले नहीं बनो। पुराने संस्कारों में भोले मत बनो। बापदादा ने रिजल्ट देखी। कितनी बातों की रिजल्ट में जमा का खाता बहुत कम है, उसका विस्तार फिर सुनायेंगे।

सभी स्नेह में सब कुछ भुलाकर के पहुंच गये हैं। बापदादा भी बच्चों का स्नेह देख एक घड़ी के स्नेह का रिटर्न अनेक घड़ियों की प्राप्ति का देता ही रहता है। आप सभी को इतने बड़े संगठन में आने के लिए क्या-क्या पक्का कराया। पहले तो पटरानी बनाना पड़ेगा, ४ दिन ही रहना पड़ेगा। आना-जाना ही पड़ेगा। तो सब बातें सुनते हुए भी स्नेह में पहुंच गये। यह भी अपना लक्क समझो जो इतना भी मिल रहा है फिर भी जड़ मूर्तियों के दर्शन के समान खड़े-खड़े रात तो नहीं बिताते हो ना। तीन पैर पृथ्वी तो सबको मिली है ना। यहाँ भी आराम से बैठे हो। जब आगे वृद्धि होगी तो स्वत: ही विधि भी परिवर्तन होती रहेगी। लेकिन सदैव यह अनुभव करो कि जो भी मिल रहा है, वह बहुत अच्छा है। क्योंकि वृद्धि तो होनी ही है और परिवर्तन भी होना ही है। तो सभी को आराम से रहना-खाना मिल रहा है ना। खाना और सोना-दो चीजें ही चाहिए। माताओं को तो बहुत खुशी होती है क्योंकि बना बनाया भोजन यहाँ मिलता है। वहाँ तो बनाओ, भोग लगाओ–फिर खाओ। यहाँ बना हुआ, भोग लगा हुआ भोजन मिलता है। इसलिए माताओं को तो अच्छा आराम है। कुमारों को भी आराम मिलता है। क्योंकि उन्हों के लिए भी बड़ी प्राब्लम खाना बनाने की ही है। यहाँ तो

आराम से बना हुआ भोजन खाया ना। सदैव ऐसे इज़ी रहो। जिसके संस्कार इज़ी रहने के होते हैं, उनको हर कार्य सहज अनुभव होने के कारण इजी रहते हैं। संस्कार टाइट हैं तो सरकमस्टांस भी टाइट हो जाते हैं, संबंध-सम्पर्क वाले भी टाइट व्यवहार करते हैं। टाइट अर्थात् खींचातान में रहने वाले। तो सभी ड्रामा के हर दृश्य को देख-देख हर्षित रहने वाले हो ना। वा कभी अच्छे-बुरे के आकर्षण में आ जाते हो? न अच्छे में, न बुरे में–किसी में आकर्षित नहीं होना है, सदैव हर्षित रहना है। अच्छा।

सदा हर कदम में दिव्यता अनुभव करने वाले और कराने वाले दिव्य मूर्तियों को, सदा अपने जमा के खाते हो बढ़ाने वाले नालेज-फुल आत्माओं को, सदा हर समस्या को इज़ी स्थिति द्वारा इज़ी पार करने वाले–ऐसे समझदार बच्चों को, अनेक आत्माओं के जीवन की प्यास को बुझाने वाले मास्टर ज्ञान सागर श्रेष्ठ आत्माओं को, ज्ञान सागर बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

बाम्बे ग्रुप

बाम्बे निवासी बच्चे सर्व खजानों से सम्पन्न हो ना। सदा अपने को सम्पन्न आत्मा हूँ–ऐसे अनुभव करते हो ना? सम्पन्नता, सम्पूर्णता की निशानी है। सम्पूर्णता की चेकिंग अपनी सम्पन्नता से कर सकते हो। क्योंकि सम्पूर्णता माना सर्व खजानों से फुल होना। जैसे चन्द्रमा जब सम्पन्न होता है तो सम्पन्नता उसकी सम्पूर्णता की निशानी होती है। इससे और आगे नहीं बढ़ेगा, बस इतनी ही सम्पूर्णता है। जरा भी किनारी कम नहीं होती है, सम्पन्न होता है। तो आप सभी ज्ञान, योग, धारणा, सेवा–सभी में सम्पन्न, इसी को ही सम्पूर्णता कहा जाता है। इससे जान सकते हो कि सम्पूर्णता के समीप हैं या दूर हैं! सम्पन्न हो अर्थात् सम्पूर्णता के समीप हो। तो सब समीप हो? कितने समीप हो? ८ तक, १०० तक या १६००० तक। ८ की समीपता, फिर १०० की समीपता और फिर १६००० की समीपता। कितने समीपता वाले हैं–यही चेक करना है। अच्छा है। फिर भी दुनिया के कोटों से आप बहुत-बहुत भाग्यवान हो। वह तड़पने वाले हैं और आप सम्पन्न आत्मायें हो। प्राप्ति स्वरूप आत्मायें हो। यह खुशी है ना। रोज़ अपने से बात करो कि हमारे सिवाए और कौन खुश रह सकता है? तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि समीप हैं, सम्पन्न हैं। अभी तो समीप मिलना भी हो गया। जैसे स्थूल में समीप अच्छा लगता है, वैसे स्थिति में भी सदा समीप अर्थात् सदा सम्पन्न बनो। अच्छा।

गुजरात-पूना ग्रुप

सभी दृष्टि द्वारा शक्तियों के प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना। जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना–शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम? दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो? क्योंकि कैच करने के अभ्यासी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। आगे चलकर वाणी द्वारा सबको परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे तो क्या करेंगे? वरदानी दृष्टि द्वारा, महादानी दृष्टि द्वारा महादान, वरदान देंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति–सुख वा आनंद की शक्ति सब प्राप्त होती है। जड़ मूर्तियों के आगे जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना। फिर भी भक्त आत्माओं को कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है। तब तो जाते हैं ना। कैसे प्राप्ति होती है? उनके दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख वायब्रेशन लेते हैं। कोई भी देवता या देवी की मूर्त में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ देखेंगे। फेस (Face) की तरफ अटेन्शन जाता है क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलता है, नयनों द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह तो हैं जड़ मूर्तियां। लेकिन किसकी हैं? आप चैतन्य मूर्तियों की जड़ मूर्तियां हैं। यह नशा है कि हमारी मूर्तियां हैं? चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियां बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना, यह प्रैक्टिस करो। शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइन्स की शक्ति का कितना प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं लेकिन साइंस की शक्ति निकली किससे? साइलेन्स की शक्ति से ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है, तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। तो बाप के दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तो फिर जमा किया हुआ समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया। जो कमाते हैं और खाकरके खत्म कर देते हैं उनका कभी जमा नहीं होता। और जिसका जमा का खाता नहीं होता उसको समय पर धोखा मिलता है। धोखा मिलेगा तो दुख की प्राप्ति होगी। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे। फिर दुख होगा, पश्चाताप होगा। इसलिए अभी से बाप की दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो। तो जमा करना आता है? जमा होने की निशानी क्या होगी? नशा होगा। जैसे साहूकार लोगों के चलने, बैठने, उठने में नशा दिखाई देता है और जितना नशा होता उतनी खुशी होती है। तो यह है रूहानी नशा। इस नशे में रहने से खुशी स्वतः होगी। खुशी ही जन्म सिद्ध अधिकार है। सदा खुशी की झलक से औरों को भी रूहानी झलक दिखाने वाले बनो। इसी वरदान को सदा स्मृति में रखना। कुछ भी हो जाए–खुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आयेगी और जायेगी लेकिन खुशी नहीं जाये। क्योंकि खुशी हमारी चीज़ है, समस्या परिस्थिति है, दूसरे के तरफ से आई हुई है। अपनी चीज़ को तो सदा साथ रखते हैं ना। पराई चीज़ तो आयेगी भी और जायेगी भी। परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। अपनी चीज को खोना नहीं होता है। तो खुशी को खोना नहीं। चाहे यह

शरीर भी चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। खुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया मिलेगा। पुराना जायेगा नया मिलेगा, तो गुजरात और महाराष्ट्र वाले इस महानता में सदा रहना। खुशी में महान बनना। अच्छा।

आंध्र प्रदेश-कनार्टक ग्रुप

इस ड्रामा के अन्दर विशेष पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं–ऐसे अनुभव करते हो? जब अपने को विशेष आत्मा समझते हैं तो बनाने वाला बाप स्वत: याद रहता है, याद सहज लगती है। क्योंकि 'संबंध' याद का आधार है। जहाँ संबंध होता है वहाँ याद स्वत: सहज हो जाती है। जब सर्व संबंध एक बाप से हो गये तो और कोई रहा ही नहीं। एक बाप सर्व संबंधी है–इस स्मृति से सहजयोगी बन गये। कभी मुश्किल तो नहीं लगता? जब माया का वार होता है तब मुश्किल लगता है? माया को सदा के लिए विदाई देने वाले बनो। जब माया को विदाई देंगे तब बाप की बधाइयां बहुत आगे बढ़ायेंगी। भक्ति मार्ग में कितनी बार मांगा कि दुआयें दो, ब्लैसिंग दो। लेकिन अभी बाप से ब्लैसिंग लेने का सहज साधन बता दिया है–जितना माया को विदाई देंगे उतनी ब्लैसिंग स्वत: मिलेंगी। परमात्म-दुआयें एक जन्म नहीं लेकिन अनेक जन्म श्रेष्ठ बनाती हैं। सदा यह स्मृति में रखना कि हम हर कदम में बाप की, ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते सहज उड़ते चलें। ड्रामा में विशेष आत्मायें हो, विशेष कर्म कर अनेक जन्मों के लिए विशेष पार्ट बजाने वाले हो। साधारण कर्म नहीं विशेष कर्म, विशेष संकल्प और विशेष बोल हों। तो आंध्र वाले विशेष सेवा यही करो कि अपने श्रेष्ठ कर्म द्वारा, अपने श्रेष्ठ परिवर्तन द्वारा अनेक आत्माओं को परिवर्तन करो। अपने को आइना बनाओ और आपके आइने में बाप दिखाई दे। ऐसी विशेष सेवा करो। तो यही याद रखना कि मैं दिव्य आइना हूँ मुझ आइने द्वारा बाप ही दिखाई दे। समझा। अच्छा।

15-11-89

सच्चे दिल पर साहेब राज़ी

आज विश्व की सर्व आत्माओं के उपकारी बापदादा अपने श्रेष्ठ पर-उपकारी बच्चों को देख रहे हैं। वर्तमान समय अनेक आत्मायें उपकार के लिए इच्छुक हैं। स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो। आप पर-उपकारी बच्चों को आत्माओं की पुकार सुनाई देती है वा स्व-उपकार में ही बिजी हो? विश्व के राज्य अधिकारी सिर्फ स्व-उपकारी नहीं बनते। पर-उपकारी आत्मा ही राज्य-अधिकारी बन सकती है। उपकार सच्चे दिल से होता है। ज्ञान सुनाना यह (सिवाए दिल के) मुख से भी हो सकता है। ज्ञान सुनाना-यह विशाल दिमाग की बात है वा वर्णन के अभ्यास की बात है। तो दिल और दिमाग–दोनों में अन्तर है। कोई भी किसी से स्नेह चाहते हैं तो वह दिल का स्नेह चाहते हैं। बापदादा का टाइटल दिलवाला है–दिलाराम है। दिमाग दिल से स्थूल है, दिल सूक्ष्म है। बोलचाल में भी सदैव यह कहते हो कि सच्ची दिल से कहते हैं–सच्ची दिल से बाप को याद करो। यह नहीं कहते कि सच्चे दिमाग से याद करो। कहा भी जाता है-सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। विशाल दिमाग पर राज़ी नहीं कहा जाता है। विशाल दिमाग–यह विशेषता जरूर है, इस विशेषता से ज्ञान की प्वाइंटस को अच्छी तरह धारण कर सकते हैं। लेकिन दिल से याद करने वाले प्वाइंट अर्थात् बिन्दू रूप बन सकते हैं। वह प्वाइंट रिपीट कर सकते हैं लेकिन पाइंट (बिन्दू) रूप बनने में सेकण्ड नम्बर होंगे, कभी सहज कभी मेहनत से बिन्दू रूप में स्थित हो सकेंगे। लेकिन सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआओं की प्राप्ति के कारण स्थूल रूप में चाहे दिमाग कईयों के अन्तर में इतना विशाल न भी हो लेकिन सच्चाई की शक्ति से समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुग, यथार्थ कार्य स्वत: ही करेगा। क्योंकि जो यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प हैं वह दुआओं के कारण ड्रामा अनुसार समय प्रमाण वही टचिंग उनके दिमाग में आयेगी। क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि (बाप) को राज़ी किया हुआ है। जिसने भगवान को राज़ी किया वह स्वत: ही राजयुक्त, युक्तियुक्त होता है।

तो यह चेक करो कि मैं विशाल दिमाग के कारण याद और सेवा में आगे बढ़ रहा हूँ वा सच्ची दिल और यथार्थ दिमाग से आगे बढ़ रहा हूँ। पहले भी सुनाया था कि दिमाग से सेवा करने वाले का तीर औरों के भी दिमाग तक लगता है। दिल वालों का तीर दिल तक लगता है। जैसे स्थापना की, सेवा की आदि में देखा–पहला पूर (ग्रुप) सेवा का, उन्हों की विशेषता क्या रही? कोई भाषा वा भाषण की विशेषता नहीं थी। जैसे आजकल बहुत अच्छे भाषण करते हो, कहानियां और किस्से भी बहुत अच्छे सुनाते हो। ऐसे पहले पूर वालों की भाषा नहीं थी लेकिन क्या था? सच्चे दिल का आवाज था। इसलिए दिल का आवाज अनेकों को दिलाराम का बनाने में निमित्त बना। भाषा गुलाबी (मिक्सचर) थी। लेकिन नयनों की भाषा रूहानी थी। इसलिए भाषा भल कैसी भी थी लेकिन कांटों से गुलाब तो बन ही गये। वह पहले पूर के सेवा की सफलता और वर्तमान समय की वृद्धि–दोनों को चेक करो तो अन्तर दिखाई देता है ना। बात मैजारिटी की होती है। दूसरे-तीसरे पूर में भी कोई-कोई दिल वाले हैं लेकिन मैनारिटी हैं। आदि की पहेली अब तक चल रही है। कौन सी पहेली? मैं कौन? अभी भी बापदादा कहते–अपने आपसे पूछो मैं कौन? पहेली हल करना आता है

ना वा दूसरा बतावे तब हल कर सकते हो–दूसरा बतायेगा तो भी उसकी बात को चलाने की कोशिश करेंगे कि ऐसे नहीं है, वैसे है...। इसलिए अपने आपको ही देखो।

कई बच्चे अपने आपको चेक करते हैं लेकिन देखने की नज़र दो प्रकार की है। उसमें भी कोई सिर्फ विशाल दिमाग की नज़र से चेक करते हैं, उनका अलबेलेपन का चश्मा होता है। हर बात में यही दिखाई देगा कि जितना भी किया–त्याग किया, सेवा की, परिवर्तन किया–इतना ही बहुत है। इन-इन आत्माओं से मैं बहुत अच्छी हूँ। इतना करना भी कोई सहज नहीं है। थोड़ी-बहुत कमी तो नामीग्रामियों में भी है। इस हिसाब से मैं ठीक हूँ। यह है अलबेलाई का चश्मा। दूसरा है स्वउन्नति का यथार्थ चश्मा। वह है सच्ची दिल वालों का। वह क्या देखते हैं? जो दिलवाला बाप को सदा पसन्द है वही संकल्प, बोल और कर्म करना है। यथार्थ चश्मे वाले सिर्फ बाप और आप को देखते हैं। दूसरा वा तीसरा क्या करता–वह नहीं देखते। मुझे ही बदलना है इसी धुन में सदा रहते हैं। ऐसे नहीं–दूसरा भी बदले तो मैं बदलूँ। या ८०% मैं बदलूं २०% तो वह बदले–इतने तक भी वह नहीं देखेंगे। मुझे बदलकर के औरों को सहज करने के लिए एक्जैम्पुल बनना है। इसलिए कहावत है 'जो ओटे सो अर्जुन।' अर्जुन अर्थात् अलौकिक जन। इसको कहा जाता है यथार्थ चश्मा वा यथार्थ दृष्टि। वैसे भी दुनिया में मानव जीवन के लिए मुख्य ठो बातें!षैं -Mठि ।'अA?७झ्ज़`qध्रझझ्झB``pAझ्@ध्@ड्झ्झ@ड्झLpड़्झ@ड़झBpडझ०झ@०डझpqध@झा ड०रहना चाहिए। अच्छा!

विदेश से भी बहुत आशिक आ गये हैं। जब बहुत आते हैं तो बांटना तो पड़ेगा ना। समय भी बांटना पड़े। रात को दिन तो बनाते ही हैं, और क्या करेंगे। इसमें भी महादानी बनो। बाप का स्नेह नम्बरवार होते भी सबसे नम्बरवन है। कभी भी यह नहीं समझना कि मेरे से बाप का प्यार कम है, और किसी से ज्यादा है। नहीं। सबसे ज्याद है। मुख के बोल में कभी किसी से ज्यादा भी बोल लेते हैं, कभी कम भी होता। लेकिन दिल का प्यार बोल में नहीं बंटता है। बाप की नजरों में हर एक बच्चा नम्बरवन है। अभी नम्बर आउट कहाँ हुए हैं? जब तक आउट हो, तब तक हर एक नम्बरवन है, कोई भी नम्बरवन हो सकता है। सुनाया ना - नम्बरवन तो ब्रह्मा सदा है ही। लेकिन फर्स्ट डिवीजन - बाप के साथ फर्स्ट नम्बर में आना अर्थात् फर्स्ट डिवीजन। उन्हों को भी नम्बरवन कहेंगे। तो जब तक फाइनल रिजल्ट आउट नहीं हुई है, तब तक बापदादा चाहे जानते भी है कि वर्तमान समय के प्रमाण लास्ट हैं लेकिन फिरभी लास्ट नहीं समझते। कभी भी लास्ट सो फस्ट बन सकता है, मार्जिन है। कभी-कभी क्या होता है - जो बहुत तेज चलते हैं, वह नजदीक टाइम पर थक जाते हैं; और जो धीरे-धीरे चलते हैं, कभी रुकते नहीं, तरीके से चलते हैं। तो वह रुक जाते हैं और वह पहुँच जाते हैं। इसलिए अभी बाप की नजर में सब नम्बरवन हैं। जब रिजल्ट आउट होगी, तब कहेंगे - यह लास्ट है, यह फर्स्ट है। अभी नहीं कह सकते। इसलिए सिफट अपने में निश्चय रख उड़ते चलो।

बापदादा का आगो उड़ाने का दिल का प्यार सभी से है। कभी दो शब्द किससे कम बोला तो कम प्यार नहीं है। जो दिल में भी बाप के प्यार की श्रेष्ठ शुभ कामनायें सदा भरी हुई हैं। दो बेल भी कहते - ''उड़ते चलो'', तो इसमें भी प्यार का सागर समाया हुआ है। कोई नहीं कह सकता कि बाबा मुझे ज्यादा प्यार करता। अगर कोई कहता है तो कहो - मुझे आपसे भी प्यारा करता! और करते हैं, ऐसे ही नहीं कहते। दिल खुश कहते हैं। सिर्फ दिल खुश करने के लिए नहीं कहते। बाप तो जानते हैं कि कितने भटके हुए, थके हुए, उलझे हुए फिर से ५००० वर्ष के बाद मिले हैं! बाप ने ढूँढ-ढूँढ कर तो निकाला है। साऊथ, नार्थ, ईस्ट, वेस्ट - सबसे निकाला है। तो जिसको ढूँढ कर निकाला हो तो उससे कितना प्यार होगा! नहीं तो ढूँढते ही नहीं। और सागर के पास प्यार की कमी है क्या? यह तो दिलाराम जाने कि हर एक को दिल से प्यार कितना है! क्या भी हो लेकिन प्यार में सभी पास हो। बाप से प्यार का सर्टिफिकेट तो बाप ने पहले ही दे दिया है। अच्छा!

चारों ओर के अति स्नेह भरे दिल के साज सुनाने वाले दिलाराम के दिलरुबाओं को, सदा हर कर्म में 'सन शोज फादर' करने वाले, सदा हर बोल द्वारा, बाप से सम्बन्ध जोड़ने वाले, सदा अपनी रुहानी दृष्टि से रूहों को बाप का अनुभव कराने वाले, ऐसे बाप को प्रत्यक्ष करने वाले, बापा के दिलतख्त-जीत, मायाजीत, जगत-जीत बच्चों को दिलाराम बाप का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से पर्सनल मुलाकात

याद की शक्ति सदा हर कार्य में आगे बढ़ाने वाली है। याद की शक्ति सदा के लिए शक्तिशाली बनाती है। याद के शक्ति की अनुभूति सर्व श्रेष्ठ अनुभूति है। यही शक्ति हर कार्य में सफलता का अनुभव कराती है। इसी शक्ति के अनुभव से आगो बढ़ने वाली आत्मा हूँ - यह स्मृति में रख जितना आगे बढ़ना चाहो बढ़ सकते हो। इसी शक्ति से विशेष सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

19.11.89

तन, मन, धन और जन का भाग्य

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले –

आज सच्चे साहेब अपने साहेबज़ादे और साहेबज़ादियों को देख रहे हैं। बाप को कहते ही हैं – 'सत्य'। इसलिए बापदादा द्वारा स्थापन किये हुए युग का नाम भी सतयुग है। बाप की महिमा भी सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु कहते हैं। सत्य की महिमा सदा ही श्रेष्ठ रही है, सत बाप द्वारा आप सभी सत्य नारायण बनने के लिए सच्ची कथा सुन रहे हो। ऐसा सच्चा साहेब अपने बच्चों को देख रहे हैं कि कितने बच्चों ने सच्चे साहेब को राज़ी किया है? सच्चे साहेब की सबसे बड़ी विशेषता है – वह दाता, विधाता, वरदाता है। राज़ी रहने वाले बच्चों की निशानी – सदा दाता राज़ी है, इसलिए ऐसी आत्मायें सदा अपने को ज्ञान के खज़ाने, शक्तियों के खज़ाने, गुणों के खज़ाने, सब खज़ानों से अपने को भरपूर अनुभव करेंगी, कभी भी अपने को खज़ानों से खाली नहीं समझेंगी। कोई भी गुण वा शक्ति वा ज्ञान के गुह्य राज़ से वंचित नहीं होंगी। गुणों की वा शक्तियों की परसेंटेज हो सकती है लेकिन कोई गुण वा कोई शक्ति ऐसी आत्मा में हो ही नहीं – यह नहीं हो सकता। जैसे समय प्रमाण कई बच्चे कहते हैं कि मेरे में और शक्तियाँ तो हैं लेकिन यह शक्ति वा गुण नहीं है। तो 'नहीं' शब्द निषेध होगा। ऐसे दाता के बच्चे सदा धनवान होंगे अर्थात् भरपूर वा सम्पन्न होंगे। दूसरी महिमा है – 'भाग्यविधाता'। तो भाग्य-विधाता साहेब के राज़ी की निशानी – ऐसे मास्टर भाग्य विधाता बच्चों के मस्तक पर सदा भाग्य का सितारा चमकता रहता है अर्थात् उनकी मूर्त और सूरत से सदा रूहानी चमक दिखाई देती है। मूर्त से सदा राज़ी रहने के फीचर्स दिखाई देंगे, सूरत से सदा रूहानी सीरत अनुभव होगी। इसको कहते हैं मस्तक में चमकता हुआ भाग्य का सितारा। हर बात में तन, मन, धन, जन – चारों रूप से अपना भाग्य अनुभव करेंगे। ऐसे नहीं कि इनमें से कोई एक भाग्य के प्राप्ति की कमी महसूस करेंगे। मेरे भाग्य में तीन बातें तो ठीक हैं, बाकी एक बात की कमी है – ऐसे नहीं।

तन का भाग्य – तन का हिसाब-किताब कभी प्राप्ति वा पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न

अनुभव नहीं होगा, तन कभी भी सेवा से वंचित होने नहीं देगा। कर्मभोग के समय भी ऐसे भाग्यवान किसी-न-किसी प्रकार से सेवा के निमित्त बनेंगे। कर्मभोग को चलायेगा लेकिन कर्मभोग के वश चिल्लायेगा नहीं। चिल्लाना अर्थात् कर्मभोग का बार-बार वर्णन करना वा बार-बार कर्मभोग की तरफ़ बुद्धि और समय लगाते रहना। छोटी-सी बात को बड़ा विस्तार करना – इसको कहते हैं 'चिल्लाना' और बड़ी बात को ज्ञान के सार से समाप्त करना – इसको कहते हैं 'चलाना'। तो सदा यह बात याद रखो – योगी जीवन के लिए चाहे छोटा कर्मभोग हो, चाहे बड़ा हो लेकिन उसका वर्णन नहीं करो, कर्मभोग की कहानी का विस्तार नहीं करो। क्योंकि वर्णन करने में समय और शक्ति उसी तरफ़ होने के कारण हेल्थ कानशियस हो जाते हैं, सोल कानशियस (आत्म-अभिमानी) नहीं। यही हेल्थ कानशियसनेस रूहानी शक्ति से धीरे-धीरे नरवस बना देती है, इसलिए कभी भी ज़्यादा वर्णन नहीं करो। योगी जीवन कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाला है। यह है – तन के भाग्य की निशानियाँ।

मन का भाग्य – मन सदा हर्षित रहेगा। क्योंकि भाग्य के प्राप्ति की निशानी हर्षित रहना ही है। जो भरपूर होता है वह सदा ही मन से मुस्कराता रहता है। मन के भाग्यवान सदा इच्छा-मात्रम्-अविद्या की स्थिति वाले होते हैं। भाग्यविधाता के राज़ी होने के कारण सर्व प्राप्ति सम्पन्न अनुभव करने के कारण मन का लगाव वा झुकाव व्यक्ति वा वस्तु के तरफ़ नहीं होगा। इसको ही सार रूप में कहते हो 'मन्मनाभव'। मन को बाप के तरफ़ लगाने में मेहनत नहीं होगी लेकिन सहज ही मन बाप के मुहब्बत के संसार में रहेगा। 'एक बाप दूसरा न कोई' – इसी अनुभूति को मन का भाग्य कहते हैं।

धन का भाग्य – ज्ञान धन तो है ही लेकिन स्थूल धन का भी महत्त्व है। धन के भाग्य का अर्थ यह नहीं कि ब्राह्मण जीवन में लाखों-पति वा करोड़पति बनेंगे। लेकिन धन के भाग्य की निशानी है कि संगमयुग पर जितना आप ब्राह्मण आत्माओं को खाने-पीने और आराम से रहने के लिए आवश्यकता है, उतना आराम से मिलेगा। और साथ-साथ धन चाहिए सेवा के लिए। तो सेवा के लिए भी कभी समय पर कमी वा खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। कैसे भी, कहाँ से भी सेवा के समय पर भाग्यविधाता बाप किसको निमित्त बना ही देते हैं। धन के भाग्यवान कभी भी अपने 'नाम' की वा 'शान' की इच्छा के कारण सेवा नहीं करेंगे। अगर

'नाम-शान' की इच्छा है तो ऐसे समय पर भाग्यविधाता सहयोग नहीं दिलायेगा।

'आवश्यकता' और 'इच्छा' में रात-दिन का अन्तर है। सच्ची आवश्यकता है और सच्चा मन है तो कोई भी सेवा के कार्य में, कार्य तो सफ़ल होगा ही लेकिन भण्डारी में और ही भरपूर हो जायेगा, बचेगा। इसलिए गायन है – ''शिव के भण्डारे और भण्डारी सदा भरपूर''। तो सच्ची दिल वालों की और सच्चे साहेब के राज़ी होने की निशानी है – 'भण्डारा भी भरपूर, भण्डारी भी भरपूर'। यह है धन के भाग्य की निशानी। विस्तार तो बहुत है लेकिन सार में सुना रहे हैं।

जन का भाग्य – जन अर्थात् ब्राह्मण परिवार वा लौकिक परिवार, लौकिक सम्बन्ध में आने वाली आत्मायें वा अलौकिक सम्बन्ध में आने वाली आत्मायें। तो जन द्वारा भाग्यवान की पहली निशानी है – जन के भाग्यवान आत्मा को जन द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की प्राप्ति रहेगी। कम से कम ९५ प्रतिशत आत्माओं से प्राप्ति का अनुभव अवश्य होगा। पहले भी सुनाया था कि ५ प्रतिशत आत्माओं का हिसाब-किताब भी चुक्तू होता है, इसलिए उन्हों द्वारा कभी स्नेह मिलेगा, कभी परीक्षा भी होगी। लेकिन ५ प्रतिशत से ज़्यादा नहीं होना चाहिए। ऐसी आत्माओं से भी धीरे-धीरे शुभ भावना शुभ कामना द्वारा हिसाब से चुक्तू करते रहो। जब हिसाब चुक्तू हो जायेगा तो किताब भी खत्म हो जायेगा ना! फिर हिसाब-किताब रहेगा ही नहीं। तो भाग्यवान आत्मा की निशानी है – जन के रहे हुए हिसाब-किताब को सहज चुक्तू करते रहना और ९५ प्रतिशत आत्माओं द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की अनुभूति करना। जन के भाग्यवान आत्मायें, जन के सम्पर्क-सम्बन्ध में आते 'सदा प्रसन्न रहेगी', प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त – यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित्त के अन्दर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को 'प्रश्नचित्त' कहा जाता है और प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा 'क्यों की क्यू' (लाइन) लगी रहती है। इसलिए उस क्यू को समाप्त करने में ही समय चला जाता है और यह क्यू फिर ऐसी होती है जो आप छोड़ने चाहो तो भी नहीं छोड़ सकते, समय देना ही पड़ेगा। क्योंकि इस क्यू का रचता आप हो, जब रचना रच ली तो पालना करनी पड़ेगी, पालना से बच नहीं सकते। चाहे कितने भी मज़बूर हो जाओ, लेकिन समय, एनर्जी देनी ही पड़ेगी। इसलिए इस व्यर्थ रचना को कण्ट्रोल करो। यह बर्थ कण्ट्रोल करो। समझा ? हिम्मत है ? जैसे लोग कह

देते हैं ना कि यह तो ईश्वर की देन है, हमारी थोड़ी ही ग़लती है। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें फिर कहती हैं – ड्रामा की नूंध है। लेकिन ड्रामा के मास्टर क्रियेटर, मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म को श्रेष्ठ बनाते चलो। अच्छा!

टीचर्स ने सुना! सच्चा साहेब मेरे ऊपर कितना राज़ी है, इसका राज़ तो सुना ना! राज़ सुनने से सभी टीचर्स राज़युक्त बनी वा दिल में आता है कि इस भाग्य की मेरे में कमी है? कभी धन की खींचातान में, कभी जन की खींचातान में – ऐसी जीवन का अनुभव तो नहीं करती हो ना! सुनाया था एक ही स्लोगन विशेष निमित्त टीचर्स प्रति, लेकिन है सभी के प्रति। हर बात में बाप की श्रीमत प्रमाण 'जी हज़ूर-जी हज़ूर' करते रहो। बच्चों का 'जी हज़ूर' करना और बाप का बच्चों के आगे 'हाज़िर हज़ूर' होना। जब हज़ूर हाज़िर हो गया तो किसी भी बात की कमी नहीं रहेगी, सदा सम्पन्न हो जायेंगे। दाता और भाग्यविधाता – दोनों की प्राप्तियों के भाग्य का सितारा मस्तक पर चमकने लगेगा। टीचर्स को तो ड्रामा अनुसार बहुत भाग्य मिला हुआ है। सारा दिन सिवाए बाप और सेवा के और काम ही क्या है! धंधा ही यह है। प्रवृत्ति वालों को तो कितना निभाना पड़ता है। आप लोगों को तो एक ही काम है, कई बातों से स्वतंत्र पंछी हो। समझते हो अपने भाग्य को? कोई सोने का पिंजरा, हीरों का पिंजरा तो नहीं बना देते? बनाते भी खुद हैं, फँसते भी खुद हैं। बाप ने तो स्वतंत्र पंछी बनाया, उड़ता पंछी बनाया। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो। समझा? हरेक को भाग्य की विशेषता अवश्य मिली हुई है। प्रवृत्ति मार्ग वालों की विशेषता अपनी, टीचर्स की विशेषता अपनी, गीता-पाठशाला वालों की विशेषता अपनी – भिन्न-भिन्न विशेषताओं से सभी विशेष आत्मायें हो। लेकिन सेवाकेन्द्र पर रहने वाली निमित्त टीचर्स को बहुत अच्छा चांस है। अच्छा।

सदा सर्व प्रकार के भाग्य को अनुभव करने वाले अनुभवी आत्माओं को, सदा हर कदम में 'जी हज़ूर' करने वाले बाप के मदद के अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा प्रश्नचित के बदले प्रसन्नचित रहने वाले – ऐसे प्रशंसा के योग्य योगी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल ग्रुप

सभी अपने को महावीर और महावीरनियां समझते हो? महावीर तो हो लेकिन सदा महावीर हो? या कभी महावीर, कभी थोड़ा कमज़ोर हो जाते हो?

सदा के महावीर अर्थात् सदा लाइट हाउस और माइट हाउस। ज्ञान है लाईट और योग है माइट। तो महावीर अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा भी और योगी तू आत्मा भी। ज्ञान और योग – दोनों शक्तियाँ – लाइट और माइट सम्पन्न हों, इसको कहते हैं – 'महावीर'। किसी भी परिस्थिति में ज्ञान अर्थात् लाइट की कमी नहीं हो और माइट अर्थात् योग की कमी नहीं हो। अगर एक की भी कमी है तो परिस्थिति में सेकण्ड में पास नहीं हो सकेंगे, टाइम लग जायेगा। पास तो हो जायेंगे लेकिन समय पर पास नहीं हुए तो वह पास क्या हुए! जैसे स्थूल पढ़ाई में भी अगर एक सब्जेक्ट में भी फेल हो जाते हैं तो फिर से एक वर्ष पढ़ना पड़ता है। साल के बाद फिर पास होते हैं। तो समय गया ना! ऐसे जो ज्ञानी और योगी तू आत्मा, लाइट और माइट – दोनों स्वरूप नहीं हैं, उसकी भी परिस्थिति से पास होने में समय लग जाता है। अगर समय पर पास न होने के संस्कार पड़ जाते हैं तो फ़ाइनल में भी वह संस्कार फुल पास होने नहीं देते। तो पास होने वाले तो हैं लेकिन समय पर पास होने वाले नहीं। जो सदा समय पर फुल पास होता है, उसको कहते हैं पास-विद्-ऑनर। पास-विद्-ऑनर अर्थात् धर्मराज भी उसको ऑनर देगा। धर्मराजपुरी में भी सजायें नहीं होंगी, ऑनर होगा। गायन होगा कि यह पास-विद्-ऑनर हैं।

तो पास-विद्-ऑनर होने के लिए विशेष अपने को कोई बात में, कोई भी संस्कार में, स्वभाव में, गुणों में, शक्ति में कमी नहीं रखना। सब बातों में कम्पलीट बनना अर्थात् पास-विद्-ऑनर बनना। तो सभी ऐसे बने हो या बन रहे हो ? (बन रहे हैं)। इसीलिए ही विनाश रुका हुआ है। आपने रोका है। विश्व के विनाश अर्थात् परिवर्तन के पहले ब्राह्मणों की कमियों का विनाश चाहिए। अगर ब्राह्मणों की कमियों का विनाश नहीं हुआ तो विश्व का विनाश अर्थात् परिवर्तन कैसे होगा। तो परिवर्तन के आधारमूर्त्त आप ब्राह्मण हैं।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल वालों को तो पहले तैयार होना चाहिए। आप अन्त लाने वाले तैयार नहीं हो, इसलिए आतंकवादी तैयार हो गये हैं। तो सभी पहला नम्बर लेने वाले हो या जो भी मिले उसमें राज़ी रहेंगे ? अनेकों से तो अच्छे हैं ही – ऐसा तो नहीं सोचते हो ? अच्छे तो हो ही लेकिन अच्छे ते अच्छा बनना है। कोटों में कोई बन गये – यह बड़ी बात नहीं है, लेकिन कोई में भी कोई बनना है। इसलिए सदा एवररेडी। अन्त में रेडी – नहीं, एवररेडी माना सदा रेडी रहने वाले। अगर

कहेंगे बन रहे हैं तो पुरुषार्थ तीव्र नहीं होगा।

बापदादा पंजाब ज़ोन को सदा आगे रखते हैं। इसलिए एवररेडी रहना। बाप की नज़र पहले पंजाब पर पड़ी ना। तो जब बाप की नज़र पहले पड़ी तो आना भी पहले नम्बर में है। फाउण्डेशन वाले हो। तो फाउण्डेशन सदैव पक्का रहता है, अगर कच्चा हुआ तो सारी बिल्डिंग कच्ची हो जाती है। तो सदा इसी वरदान को याद रखना कि हर परिस्थिति में पास-विद्-ऑनर बनने वाले हैं। इसकी विधि है – एवररेडी रहना। अच्छा!

पंजाब ज़ोन तथा यू०पी० ग्रुप

ज्ञान सागर बाप से निकली हुई ज्ञान गंगायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो? यू०पी० में गंगा का महत्त्व क्यों है? क्योंकि और कोई नदी को पतित-पावनी नहीं कहते हैं, गंगा को ही पतित पावनी कहते हैं। जमुना नदी को पतित-पावनी नहीं कहते, उसे चरित्र-भूमि कहते हैं। पंजाब में भी नदियां बहुत हैं। नदी जहाँ से निकलेगी तो हरा-भरा कर देगी ना! हरियाली, खुशहाली। तो आप सबका भी काम है सबको हरा-भरा बनाना। जो आत्मायें सुख-शान्ति के रस से सूखे हुए हैं, ऐसे सूखे हुए को फिर से हरा बनाना, हरियाली लाना – यही आपका काम है। जहाँ सूखा होता है वहाँ मानव कंगाल बन जाता है और जहाँ हरियाली होती है वहाँ मानव खुशहाल हो जाता है। तो नई दुनिया हरियाली की दुनिया है और पुरानी दुनिया सूखी दुनिया है। आप सब तो बहती हुई भरपूर नदियां हो ना! तो चलते-फिरते अपने हर कदम से आत्माओं को हरा-भरा बनाओ।

इस समय सबका विशेष अटेन्शन पंजाब की तरफ़ है। किस बात के लिए? अकाले मृत्यु के लिए। सबसे ज़्यादा अकाले मृत्यु पंजाब में हो रहे हैं। तो आप सभी अकाले मृत्यु से बचाने वाले हो ना। ऐसी आत्माओं को अमर ज्ञान दे अमर बनाओ तो जन्म-जन्म अकाले मृत्यु से बच जाएं। सतयुग में अकाले मृत्यु नहीं होगा, अपनी इच्छा से शरीर छोड़ेंगे। जैसे यह पुराना वस्त्र अपनी इच्छा से बदली करते हैं, मजबूरी से नहीं। ऐसे यह शरीर रूपी वस्त्र भी अपनी इच्छा से बदली करें। जैसे कपड़े का समय पूरा हो जाता है, पुराना हो जाता है तो बदल देते हो। ऐसे समय प्रमाण, आयु के प्रमाण शरीर परिवर्तन करेंगे। तो आप बच्चों को ऐसी दुःखी आत्माओं को यह खुशखबरी सुनानी चाहिए कि हम आपको २१ जन्मों के लिए

अकाले मृत्यु से बचा सकते हैं। आजकल अकाले मृत्यु का ही डर है। डर से खा भी रहे हैं, चल भी रहे हैं, सो भी रहे हैं। ऐसी आत्माओं को खुशी की बात सुनाकर भय से छुड़ाओ। मानो यह शरीर चला भी जाता है, तो भी भय से नहीं मरेंगे क्योंकि यह खुशी होगी कि हम अकाले मृत्यु से बचाने वाले हैं, कुछ साथ में ले जा रहे हैं, खाली नहीं जा रहे हैं। तो यह सेवा करते हो या डरते हो कि हमें गोली न लग जाए? सभी बहादुर हो ना! अपने शान्ति और सुख के वायब्रेशन से लोगों को सुख-चैन की अनुभूति कराओ। कैसा भी आतंकवादी हो – वह भी प्रेम और शान्ति की शक्ति के आगे परिवर्तन हो जायेगा। आप लोगों के पास ऐसा कोई आता है तो क्या करते हो? प्यार से परिवर्तन करते हो ना? अपना भाई बना देते हो ना!

सदा ही अपने को 'शक्तिशाली' आत्मायें हैं – इस अनुभूति में रहो। शक्तिशाली आत्माओं के आगे चाहे माया के विघ्न हों, चाहे व्यक्ति द्वारा वा प्रकृति द्वारा विघ्न आयें लेकिन अपना प्रभाव नहीं डाल सकते हैं। तो ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बने हो या कमज़ोर हो? अगर एक भी शक्ति की कमी होगी तो हार हो सकती है। समय पर छोटा-सा शस्त्र भी अगर किसके पास नहीं है तो नुकसान हो जाता है। एक भी शक्ति कम होगी तो समय पर धोखा मिल सकता है। इसलिए मास्टर सर्वशक्तिवान हैं – शक्तिवान नहीं, यही टाइटल याद रखना। सदा खुशहाल रहना और औरों को भी खुशहाल बनाना। कभी भी मुरझाना नहीं। तन भी खुश, मन भी खुश और धन भी खुशी से कमाने वाले और खुशी से कार्य में लगाने वाले। जहाँ खुशी है वहां एक सौ भी हज़ारों के समान होता है, खुशहाली आ जाती है। और जहाँ खुशी नहीं वहाँ एक लाख भी एक रुपया है। तो तन-मन-धन से खुशहाल रहने वाले हैं। दाल-रोटी भी – ३ ६ प्रकार का भोजन अनुभव हो। तो यही वरदान याद रखना कि हम सदा खुशहाल रहने वाले हैं। मुरझाना काम माया के साथियों का है और खुशहाल रहना काम बाप के बच्चों का है।

अपने को गरीब कभी नहीं समझना। सबसे साहूकार हम हैं। दुनिया में साहूकार देखना हो तो आपको देखें। क्योंकि सच्चा धन आपके पास है। विनाशी धन तो आज है, कल नहीं होगा। लेकिन अविनाशी धन आपके पास है। तो सबसे साहूकार आप हो। चाहे सूखी रोटी भी खाते हो, तो भी साहूकार हो

क्योंकि खुशी की खुराक सूखी रोटी में भरी हुई है। उसके आगे और कोई खुराक नहीं। सबसे अच्छी खुराक खाने वाले, सुख की रोटी खाने वाले आप लोग हो। इसलिए सदा खुशहाल हो। कभी यह नहीं सोचना कि अगर साहूकार होते तो यह करते! साहूकार होते तो आते ही नहीं, वंचित रह जाते। तो ऐसे खुशहाल रहना जो आपको खुशहाल देख और भी खुशहाल हो जाएँ। अच्छा! सबसे बड़ा ज़ोन तो मधुबन ही है। सब ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों का असली घर – मधुबन ही है ना। आत्माओं का घर परमधाम है लेकिन ब्राह्मणों का घर मधुबन है। तो अमृतसर या लुधियाना के नहीं हो, पंजाब या हरियाणा के नहीं हो लेकिन अपनी परमानेंट एड्रैस (स्थायी पता) मधुबन है। बाकी सब सेवा स्थान हैं। चाहे प्रवृत्ति में रहते हो, तो भी सेवा स्थान है, घर नहीं है। स्वीट होम मधुबन है। ऐसे समझते हो ना! या वही घर याद आता है? अच्छा!

O O O

23.11.89

वरदाता को राज़ी करने की सहज विधि

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले –

आज वरदाता बाप अपने वरदानी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। वरदाता के बच्चे वरदानी सब बच्चे हैं लेकिन नम्बरवार हैं। वरदाता सभी बच्चों को वरदानों की झोली भर कर के देते हैं। फ़िर नम्बर क्यों ? वरदाता देने में नम्बरवार नहीं देते हैं क्योंकि वरदाता के पास अखुट वरदान हैं जो जितना लेने चाहे खुला भण्डार है। ऐसे खुले भण्डार से कई बच्चे सर्व वरदानों से सम्पन्न बनते हैं और कोई बच्चे यथा-शक्ति तथा सम्पन्न बनते हैं। सबसे ज़्यादा झोली भरकर देने में भोलानाथ, 'वरदाता' रूप ही है। पहले भी सुनाया है – दाता, भाग्यविधाता और वरदाता। तीनों में से 'वरदाता' रूप से भोले भगवान कहा जाता है। क्योंकि वरदाता बहुत जल्दी राज़ी हो जाते हैं। सिर्फ राज़ी करने की विधि जान जाते हो तो सिद्धि अर्थात् वरदानों की झोली से सम्पन्न रहना बहुत सहज है। सबसे सहज विधि वरदाता को राज़ी करने की जानते हो ? उनको सबसे प्रिय कौन लगता है ? उनको 'एक' शब्द सबसे प्रिय लगता, जो बच्चे 'एकव्रता' आदि से अब तक हैं वही वरदाता को अति प्रिय हैं।

एकव्रता अर्थात् सिर्फ पतिव्रता नहीं, सर्व सम्बन्ध से 'एकव्रता' । संकल्प में भी, स्वप्न में भी दूजा-व्रता न हो। एक-व्रता अर्थात् सदा वृत्ति में एक हो। दूसरा – सदा मेरा तो एक दूसरा न कोई – यह पक्का व्रत लिया हुआ हो। कई बच्चे एकव्रता बनने में बड़ी चतुराई करते हैं। कौन-सी चतुराई ? बाप को ही मीठी बातें सुनाते कि बाप, शिक्षक, सत्गुरु का मुख्य सम्बन्ध तो आपके साथ है लेकिन साकार शरीरधारी होने के कारण, साकारी दुनिया में चलने के कारण कोई साकारी सखा वा सखी सहयोग के लिए, सेवा के लिए, राय-सलाह के लिए साकार में ज़रूर चाहिए, क्योंकि बाप तो निराकार और आकार है, इसलिए सेवा साथी है। और तो कुछ नहीं है। क्योंकि निराकारी, आकारी मिलन मनाने के लिए स्वयं को भी आकारी, निराकारी स्थिति में स्थित होना पड़ता है। वह कभी-कभी मुश्किल लगता है। इसलिए समय के लिए साकार साथी चाहिए। जब दिमाग में बहुत बातें भर जायेंगी तो क्या करेंगे ? सुनने

वाला तो चाहिए ना ! एकव्रता आत्मा के पास ऐसी बोझ की बातें इकट्ठी नहीं होतीं जो सुनानी पड़ें। एक तरफ़ बाप को बहुत ख़ुश करते हो – बस, आप ही सदैव मेरे साथ रहते हो, सदा बाप मेरे साथ है, साथी है। फ़िर उस समय कहाँ चला जाता है ? बाप चला जाता या आप किनारे हो जाते हो ? हर समय साथ है वा ६-८ घण्टा साथ है। वायदा क्या है ? साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, यह वायदा पक्का है ना ! ब्रह्मा बाप से तो इतना वायदा है कि सारे चक्र में साथ पार्ट बजायेंगे ! जब ऐसा वायदा है, फ़िर भी साकार में कोई विशेष साथी चाहिए ?

बापदादा के पास सबकी जन्मपत्री रहती है। बाप के आगे तो कहेंगे आप ही साथी हो। जब परिस्थिति आती है फ़िर बाप को ही समझाने लगते कि यह तो होगा ही, इतना तो चाहिए ही.....। इसको एकव्रता कहेंगे ? साथी हैं तो सब साथी हैं, कोई विशेष नहीं। इसको कहते हैं – एकव्रता। तो वरदाता को ऐसे बच्चे अति प्रिय है। ऐसे बच्चों की हर समय की सर्व ज़िम्मेवारियाँ वरदाता बाप स्वयं अपने ऊपर उठाते हैं। ऐसी वरदानी आत्मायें हर समय, हर परिस्थिति में वरदानों के प्राप्ति सम्पन्न स्थिति अनुभव करती हैं और सदा सहज पार करती हैं और पास विद् ऑनर बनती हैं। जब वरदाता सर्व ज़िम्मेवारियाँ उठाने के लिए एवररेडी है फ़िर अपने ऊपर ज़िम्मेवारी का बोझ क्यों उठाते हो ? अपनी ज़िम्मेवारी समझते हो तब परिस्थिति में पास विद् ऑनर नहीं बनते लेकिन धक्के से पास होते हो। 'किसी के साथ' का धक्का चाहिए। अगर बैटरी फुल चार्ज नहीं होती तो कार को धक्के से चलाते हैं ना। तो धक्का अकेला तो नहीं देंगे, साथ चाहिए। इसलिए वरदानी नम्बरवार बन जाते हैं। तो वरदाता को एक शब्द प्यारा है – 'एकव्रता'। एक बल एक भरोसा। एक का भरोसा दूजे का बल – ऐसा नहीं कहा जाता। 'एक बल एक भरोसा' ही गाया हुआ है। साथ-साथ एकमत, न मनमत न परमत, एकरस – न और कोई व्यक्ति, न वैभव का रस। ऐसे ही एकता, एकान्तप्रिय। तो 'एक' शब्द ही प्रिय हुआ ना। ऐसे और भी निकालना।

बाप इतना भोला है जो एक में ही राज़ी हो जाता है। ऐसे भोलानाथ वरदाता को राज़ी करना क्या मुश्किल लगता है ? सिर्फ 'एक' का पाठ पक्का करो। ५-७ में जाने की ज़रूरत नहीं है। वरदाता को राज़ी करने वाले अमृतवेले से रात तक हर दिनचर्या के कर्म में वरदानों से ही पलते हैं, चलते हैं और उड़ते हैं। ऐसे वरदानी आत्माओं

को कभी कोई मुश्किल चाहे मन से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से अनुभव नहीं होगी। हर संकल्प में, हर सेकण्ड, हर कर्म में, हर कदम में 'वरदाता' और 'वरदान' सदा समीप, सम्मुख साकार रूप में अनुभव होगा। वह ऐसे अनुभव करेगा जैसे साकार में बात कर रहे हैं। उनको मेहनत अनुभव नहीं होगी। ऐसी वरदानी आत्मा को यह विशेष वरदान प्राप्त होता है, जो वह, निराकार-आकार को जैसे साकार अनुभव कर सकते हैं! ऐसे वरदानियों के आगे हज़ूर सदा हाज़िर है, सुना? वरदाता को राज़ी करने की विधि और सिद्धि – सेकण्ड में कर सकते हो? सिर्फ एक में दो नहीं मिलाना, बस। फ़िर सुनायेंगे – एक के पाठ का विस्तार।

बापदादा के पास सभी बच्चों के चरित्र भी हैं तो चतुराई भी है। रिज़ल्ट तो सारी बापदादा के पास है ना। चतुराई की बातें भी बहुत इकट्ठी हैं। नई-नई बातें सुनाते हैं। सुनते रहते हैं। सिर्फ बापदादा नाम नहीं लेते हैं इसलिए समझते हैं बाप को मालूम नहीं पड़ता। फ़िर भी चांस देते रहते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे रीयल समझ से भोले हैं। तो ऐसे भोले नहीं बनो। अच्छा।

विदेश का भी चक्र लगा कर बच्चे पहुँच गये हैं। (जानकी दादी, डॉक्टर निर्मला और जगदीश भाई विदेश का चक्र लगाकर आये हैं) अच्छी रिज़ल्ट है। और सदा ही सेवा की सफ़लता में वृद्धि होनी ही है। यू०एन० का भी विशेष सेवा के कार्य में सम्बन्ध है। नाम उन्हों का, काम तो आपका ही हो रहा है। आत्माओं को सहज सन्देश पहुँच जाए – यह काम आपका हो रहा है। तो वहाँ का भी प्रोग्राम अच्छा हुआ। रशिया भी रहा हुआ था, उनको भी आना ही था। बापदादा ने तो पहले ही सफ़लता का यादप्यार दे दिया था। भारत के एम्बसडर बन कर गये तो भारत का नाम बाला हुआ ना! चक्रवर्ती बन चक्र लगाने में मज़ा आता है ना! कितनी दुआयें जमा करके आये! निर्मल-आश्रम (डॉ० निर्मला) भी चक्र ही लगाती रहती है। वैसे तो सब सेवा में लगे हुए हैं लेकिन समय के प्रमाण विशेष सेवा होती तो विशेष सेवा की मुबारक देते हैं। सेवा के बिना तो रह नहीं सकते हो। लंदन, अमेरिका, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया – आप लोगों ने यह ४ ज़ोन बनाये हैं ना। पाँचवाँ है भारत। भारत वालों को पहले चांस मिला है मिलने का। जो करके आये और जो आगे करेंगे – सब अच्छा है और सदा ही अच्छा रहेगा। चारों ही ज़ोन के सभी डबल विदेशी बच्चों को आज विशेष यादप्यार

दे रहे हैं। रशिया भी एशिया में आ जाता है। सेवा का रेसपाण्ड अच्छा मिल रहा है। हिम्मत भी अच्छी है तो मदद भी मिल रही है और मिलती रहेगी। भारत में भी अभी विशाल प्रोग्राम करने का प्लैन बना रहे हैं। एक-एक को, विशेषता और सेवा की लगन में मगन रहने की मुबारक और यादप्यार। अच्छा।

सर्व बच्चों को सदा सहज चलने की सिद्धि को प्राप्त करने की सहज युक्ति जो सुनाई, इसी विधि को सदा प्रयोग में लाने वाले प्रयोगी और सहजयोगी, सदा वरदाता के वरदानों से सम्पन्न वरदानी बच्चों को, सदा 'एक' का पाठ हर कदम में साकार स्वरूप में लाने वाले, सदा निराकार आकार बाप के साथ की अनुभूति से सदा साकार स्वरूप में लाने वाले, ऐसे सदा वरदानी बच्चों को बापदादा का दाता, भाग्यविधाता और वरदाता का यादप्यार और नमस्ते।

मुलाकात दादी जानकी जी से

जितना सभी को बाप का प्यार बाँटते हैं उतना ही और प्यार का भण्डार बढ़ता जाता है। जैसे हर समय प्यार की बरसात हो रही है – ऐसे ही अनुभव होता है ना! एक कदम में प्यार दो और बार-बार प्यार लो। सबको प्यार ही चाहिए। ज्ञान तो सुन लिया है ना! तो एक ऐसे बच्चे हैं जिनको प्यार चाहिए और दूसरे हैं जिनको शक्ति चाहिए। तो क्या सेवा की? यही सेवा की ना – किसको प्यार दिया बाप द्वारा और किसको शक्ति बाप से दिलाई। ज्ञान के राज़ों को तो जान गये हैं। अभी चाहिए उन्हों में उमंग-उत्साह सदा बना रहे, वह नीचे-ऊपर होता है। फ़िर भी बापदादा डबल विदेशी बच्चों को आफ़रीन (शाबाश) देते हैं – भिन्न धर्म में चले तो गये ना! भिन्न देश, भिन्न रस्म – फ़िर भी चल रहे हैं और कई तो वारिस भी निकले हैं। अच्छा!

महाराष्ट्र-पूना ग्रुप

सभी महान आत्मायें बन गये ना! पहले सिर्फ अपने को महाराष्ट्र निवासी कहलाते थे, अभी स्वयं महान बन गये। बाप ने हरेक बच्चे को महान बना दिया। विश्व में आपसे महान और कोई है? सबसे नीचे भारतवासी गिरे और उसमें भी जो ८४ जन्म लेने वाली ब्राह्मण आत्मायें हैं, वह नीचे गिरी। तो जितना नीचे गिरे उतना अभी ऊँचा उठ गये। इसलिए कहते हैं ब्राह्मण अर्थात् ऊँची चोटी।

जो ऊँचाई का स्थान होता है उसको चोटी कहा जाता है। पहाड़ों की ऊँचाई को भी चोटी कहते हैं। तो यह ख़ुशी है कि क्या-से-क्या बन गये! पांडवों को ज़्यादा ख़ुशी है या शक्तियों को? (शक्तियों को) क्योंकि शक्तियों को बहुत नीचे गिरा दिया था। द्वापर से लेकर पुरुष तन ने ही कोई-न-कोई पद प्राप्त किया। धर्म में भी अभी-अभी फीमेल्स भी महामण्डलेश्वरियाँ बनी हैं। नहीं तो महामण्डलेश्वर ही गाये जाते थे। जब से बाप ने माताओं को आगे किया है तब से उन्होंने २-४ मण्डलेश्वरियाँ रख दी हैं। नहीं तो धर्म के कार्य में माताओं को कभी भी आसन नहीं देते थे। इसीलिए माताओं को ज़्यादा ख़ुशी है और पांडवों का भी गायन है। पांडवों ने जीत प्राप्त कर ली। नाम पांडवों का आता है लेकिन पूजन ज़्यादा शक्तियों का होता है। पहले गुरुओं का कर चुके हैं, अभी शक्तियों का करते हैं। जागरण गणेश वा हनुमान का नहीं करते, शक्तियों का करते हैं। क्योंकि शक्तियाँ अभी खुद जग गई हैं। तो शक्तियाँ अपने शक्ति रूप में रहती हैं ना! या कभी-कभी कमज़ोर बन जाती हैं? माताओं को देह के सम्बन्ध का मोह कमज़ोर करता है। थोड़ा-थोड़ा बाल बच्चों में, पोत्रे-धोत्रों में मोह होता है। और पांडवों को कौन-सी बात कमज़ोर करती है? पांडवों में अहंकार के कारण क्रोध जल्दी आता है। लेकिन अब तो जीत हो गई ना! अब तो शान्त स्वरूप पांडव हो गये और मातायें निर्मोही हो गईं। दुनिया कहे कि माताओं में मोह होता है और आप चैलेन्ज करो कि हम मातायें निर्मोही हैं। ऐसे ही पांडव भी शान्त स्वरूप, कोई भी आये तो यह कमाल के गीत गाये कि यह सब इतने शान्त स्वरूप बन गये हैं जो क्रोध का अंश मात्र भी दिखाई नहीं देता। नैन-चैन तक भी नहीं आवे। कई ऐसे कहते हैं – क्रोध तो नहीं है, थोड़ा जोश आता है। तो वह क्या हुआ! वह भी क्रोध का ही अंश हुआ ना। तो पांडव विजयी हैं अर्थात् बिल्कुल संकल्प में भी शान्त, बोल और कर्म में भी शान्तस्वरूप। मातायें सारे विश्व के आगे अपना निर्मोही रूप दिखाओ। लोग तो समझते हैं यह असम्भव है और आप कहते हो – सम्भव भी है और बहुत सहज भी है। लक्ष्य रखो तो लक्षण ज़रूर आयेंगे। जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जायेगी। धरनी में मात-पिता के प्यार का पानी पड़ा हुआ है, इसलिए फल सहज निकल रहा है। अच्छा है। बापदादा सेवा और स्व-उन्नति – दोनों को देखकर ख़ुश होते हैं सिर्फ सेवा को देख कर के नहीं। जितनी सेवा में वृद्धि उतनी स्व-उन्नति में भी – दोनों -साथ-साथ हों। कोई इच्छा नहीं, जब आपे ही सब

मिलता है तो इच्छा क्या रखें। बिना कहे, बिना मांगे इतना मिल गया है जो मांगने की इच्छा की आवश्यकता नहीं। तो ऐसे सन्तुष्ट हो ना! यही टाइटल अपना स्मृति में रखना कि सन्तुष्ट हैं और सर्व को सन्तुष्ट कर प्राप्ति स्वरूप बनाने वाले हैं। तो 'सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना' – यह है विशेष वरदान। असन्तुष्टता का नाम निशान नहीं। अच्छा।

गुजरात-पूना ग्रुप

सभी दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना! जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम। दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो? क्योंकि कैच करने के अनुभवी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। और आगे चल कर वाणी द्वारा सबको परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे, तो क्या करेंगे? वरदानी दृष्टि द्वारा, महादानी दृष्टि द्वारा महादान देंगे, वरदान देंगे। तो पहले जब स्वयं में अनुभव होगा तब दूसरों को करा सकेंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। जड़ मूर्तियों के आगे भी जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना! फ़िर भी भक्त आत्माओं को कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है, तब तो जाते हैं। कैसे प्राप्ति होती है? उनकी दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख कर वायब्रेशन लेते हैं। कोई भी देवता या देवी की मूर्ति में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ़ देखेंगे। हरेक का अटेन्शन सूरत की तरफ़ जाता है। क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलते हैं, नयनों के द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह आप चैतन्य मूर्तियों की जड़ मूर्तियाँ हैं। आप सबने चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियाँ बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना – यह प्रैक्टिस करो। शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइंस की शक्ति का प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं। लेकिन साइंस की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही निकली है ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति

करायेगी। पद्मगुणा तो इतनी शक्ति जमा करो। बाप की दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तब समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया। जो कमाते हैं और खा के खत्म कर देते हैं उनका कभी जमा का खाता नहीं रहता और जिसके पास जमा का खाता नहीं होता है उसको समय पर धोखा मिलता है। धोखा मिलेगा तो दु:ख की प्राप्ति होगी। अगर साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्त्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे फ़िर दु:ख होगा। पश्चाताप् होगा ना। इसलिए अभी से बाप की दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो।

सभी को जमा करना आता है ना! जमा हो रहा है, उसकी निशानी क्या है? उसे नशा होगा! जैसे साहूकार लोगों की साहूकारी की निशानी का पता उनके नशे से पड़ता है। उनके चलने में, बैठने में, उठने में नशा दिखाई देता है। और जितना नशा होगा उतनी ख़ुशी होगी। तो आप भी सदा ख़ुश रहते हो ना! 'ख़ुशी' जन्म-सिद्ध अधिकार है। तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि हम सदा जमा के नशे में रहने वाले, सदा ख़ुशी की झलक से औरों को भी रूहानी झलक दिखाने वाले हैं। कुछ भी हो जाए – ख़ुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आयेगी और जायेगी लेकिन ख़ुशी नहीं जाये। क्योंकि ख़ुशी हमारी चीज़ है, समस्या परिस्थिति है, दूसरे के तरफ़ से आई हुई है। अपनी चीज़ को सदा साथ रखते हैं। पराई चीज़ तो आयेगी भी जायेगी भी। परिस्थिति माया की है, अपनी नहीं है। तो ख़ुशी को खोना नहीं। चाहे यह शरीर भी चला जाए लेकिन ख़ुशी नहीं जाए। ख़ुशी से शरीर भी जायेगा तो बढ़िया मिलेगा, पुराना जायेगा तो नया मिलेगा। डरना नहीं कि पता नहीं क्या बनेंगे। अच्छे-से-अच्छा बनेंगे। अच्छा!

गुजरात ग्रुप

ब्राह्मण जीवन में लास्ट जन्म होने के कारण शरीर से चाहे कितने भी कमज़ोर हैं या बीमार हैं, चल सकते हैं वा नहीं भी चल सकते हैं लेकिन मन की उड़ान के लिए पंख दे दिये हैं, शरीर से चल नहीं सकते लेकिन मन से उड़ तो सकते हैं ना! क्योंकि बापदादा जानते हैं कि ६ ३ जन्म भटकते-भटकते

कमज़ोर हो गये। शरीर तमोगुणी हो गये हैं। तो कमज़ोर हो गये, बीमार हो गये। लेकिन मन सबका दुरुस्त है। शरीर में तन्दुरुस्त नहीं भी हो लेकिन मन में तो बीमार कोई नहीं है ना। मन सबका पंखों से उड़ने वाला है। पावरफुल मन की निशानी है – सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाएँ। ऐसे पावरफुल हो या कभी कमज़ोर हो जाते हो। मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकता है। अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में एक सेकण्ड की रफ़्तार है। तो ऐसी तेज़ रफ़्तार है? सदा अपने भाग्य के गीत गाते उड़ते रहो। सदैव अमृतवेले अपने भाग्य की कोई-न-कोई बात स्मृति में रखो, अनेक प्रकार के भाग्य मिले हैं, अनेक प्रकार की प्राप्तियाँ हुई हैं, कभी किसी प्राप्ति को सामने रखो, कभी किसी प्राप्ति को रखो तो बहुत रमणीक पुरुषार्थ रहेगा। कभी पुरुषार्थ में अपने को बोर नहीं समझेंगे, नवीनता अनुभव करेंगे। नहीं तो कई बच्चे कहते हैं। बस, आत्मा हूँ, शिवबाबा का बच्चा हूँ, यह तो सदैव कहते ही रहते हैं। लेकिन मुझ आत्मा को बाप ने क्या-क्या भाग्य दिया है, क्या-क्या टाइटल दिये हैं, क्या-क्या खज़ाना दिया है, ऐसे भिन्न-भिन्न स्मृतियाँ रखो। लिस्ट निकालो। स्मृतियों की कितनी बड़ी लिस्ट है! कभी खज़ानों की स्मृतियाँ रखो, कभी शक्तियों की स्मृतियाँ रखो, कभी गुणों की रखो, कभी ज्ञान की रखो, कभी टाइटल रखो। वैरायटी में सदैव मनोरंजन हो जाता है। कहाँ भी मनोरंजन का प्रोग्राम होगा तो वैराइटी डांस होगी, वैराइटी खाना होगा, वैराइटी लोगों से मिलना होगा। तब तो मनोरंजन होता है ना! तो यह भी सदा मनोरंजन में रहने के लिए वैराइटी प्रकार की बातें सोचो। अच्छा!

ε ε ε

शुभभावना और शुभकामना की सूक्ष्म सेवा

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले –

आज विश्व-कल्याणकारी बापदादा अपने विश्व-कल्याणकारी साथियों को देख रहे हैं। सभी बच्चे बाप के विश्व-कल्याण के कार्य में निमित्त बने हुए साथी हैं। सभी के मन में सदा यही एक संकल्प है कि विश्व की परेशान आत्माओं का कल्याण हो जाये। चलते-फिरते, कोई भी कार्य करते मन में यही शुभभावना है। भक्ति-मार्ग में भी भावना होती है। लेकिन भक्त आत्माओं की विशेष अल्पकाल के कल्याण प्रति भावना होती है। आप ज्ञानी तू आत्मा बच्चों की ज्ञानयुक्त कल्याण की भावना आत्माओं के प्रति सदाकाल और सर्वकल्याणकारी भावना है। आपकी भावना वर्तमान और भविष्य के लिए है कि हर आत्मा अनेक जन्म सुखी हो जाए, प्राप्तियों से सम्पन्न हो जाए। क्योंकि अविनाशी बाप द्वारा आप आत्माओं को भी अविनाशी वर्सा मिला है। आपकी भावना का फल विश्व की आत्माओं को परिवर्तन कर रहा है और आगे चल प्रकृति सहित परिवर्तन हो जायेगा। आप आत्माओं की श्रेष्ठ भावना इतना श्रेष्ठ फल प्राप्त कराने वाली है! इसलिए विश्व-कल्याणकारी आत्माएं गाई जाती हो। इतना अपनी शुभभावना का महत्त्व जानते हो? अपनी शुभभावना को साधारण रीति से कार्य में लगाते चल रहे हो वा महत्त्व जानकर चलते हो? दुनिया वाले भी शुभभावना शब्द कहते हैं। लेकिन आपकी शुभभावना सिर्फ शुभ नहीं लेकिन शक्तिशाली भी है। क्योंकि आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माएं हो, संगमयुग का ड्रामा अनुसार प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है। इसलिए आपकी भावना का प्रत्यक्ष फल आत्माओं को प्राप्त होता है। जो भी आत्माएं आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आती हैं, वह उसी समय ही शान्ति वा स्नेह के फल की अनुभूति करती हैं।

शुभभावना, शुभकामना के बिना हो नहीं सकती। हर आत्मा के प्रति सदैव रहम की कामना रहती है कि यह आत्मा भी वर्से की अधिकारी बन जाए। हर आत्मा के प्रति तरस पड़ता है कि यह हमारे ही ईश्वरीय परिवार के हैं, तो इससे वंचित क्यों रहें? शुभकामना रहती है ना! **शुभकामना और शुभभावना – यह सेवा का फाउण्डेशन है।** कोई भी आत्माओं की सेवा करते हो, अगर आपके अन्दर शुभभावना, शुभकामना

नहीं है तो आत्माओं को प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। एक सेवा होती है नीति प्रमाण, रीति प्रमाण – जो सुना है वह सुनाना है। दूसरी सेवा है अपनी शुभभावना, शुभकामना द्वारा। आपकी शुभभावना बाप में भी भावना बिठाती है और बाप द्वारा फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बन जाती है। 'शुभभावना' – कहाँ दूर बैठी हुई किसी आत्मा को भी फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बन सकती है। जैसे साइंस के साधन दूर बैठे आत्माओं से समीप का सम्बन्ध कराने के निमित्त बन जाते हैं, आपकी आवाज़ पहुँच जाती है, आपका सन्देश पहुँच जाता है, दृश्य पहुँच जाता है। तो जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए समीपता का फल दे सकती है तो आपके साइलेन्स की शक्तिशाली शुभभावना दूर बैठे भी आत्माओं को फल नहीं दे सकेगी ? लेकिन इसका आधार है – अपने अन्दर इतनी शान्ति की शक्ति जमा हो ! साइलेन्स की शक्ति यह अलौकिक अनुभव करा सकती है। आगे चल कर यह प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करते रहेंगे।

शुभभावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प। सब शक्तियों से संकल्प की गति तीव्र है। जितने भी साइंस ने तीव्रगति के साधन बनाये हैं, उन सबसे तीव्रगति संकल्प की है। किसी आत्मा के प्रति वा बेहद विश्व की आत्माओं के प्रति शुभभावना रखते हो अर्थात् शक्तिशाली शुभ और शुद्ध संकल्प करते हो कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए। आपका संकल्प वा भावना उत्पन्न होना और उस आत्मा को अनुभूति होगी कि मुझ आत्मा को कोई विशेष सहयोग से शान्ति वा शक्ति मिल रही है। जैसे – अभी भी कई बच्चे अनुभव करते हैं कि कई कार्यों में मेरी हिम्मत वा योग्यता इतनी नहीं थी लेकिन बापदादा की एक्स्ट्रा मदद से यह कार्य सहज ही सफ़ल हो गया वा यह विघ्न समाप्त हो गया। ऐसे मास्टर विश्व-कल्याणकारी आत्माओं की सूक्ष्म सेवा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। समय भी कम और साधन भी कम, सम्पत्ति भी कम लगेगी। इसके लिए मन और बुद्धि सदा फ्री चाहिए। छोटी-छोटी बातों में मन और बुद्धि को बिज़ी रखते हो, इसलिए सेवा के सूक्ष्म गति की लाइन क्लीयर नहीं रहती है। साधारण बातों में भी अपने मन और बुद्धि की लाइन को इंगेज (व्यस्त) बहुत रखते हो, इसलिए यह सूक्ष्म सेवा तीव्रगति से नहीं चल रही है। इसके लिए **विशेष अटेन्शन – ''एकान्त और एकाग्रता''**

एकान्तप्रिय आत्माएं कितना भी बिज़ी होते फ़िर भी बीच-बीच में एक घड़ी,

दो घड़ी निकाल एकान्त का अनुभव कर सकती है। एकान्तप्रिय आत्मा ऐसी शक्तिशाली बन जाती है जो अपनी सूक्ष्म शक्तियाँ – मन-बुद्धि को जिस समय चाहे, जहाँ चाहे एकाग्र कर सकती है। चाहे बाहर की परिस्थिति हलचल की हो लेकिन एकान्तप्रिय आत्मा एक के अन्त में सेकण्ड में एकाग्र हो जायेगी। जैसे सागर के ऊपर लहरों की कितनी आवाज़ होती है, कितनी हलचल होती है, लेकिन सागर के अन्त में हलचल नहीं होती। तो जब एक के अन्त में, ज्ञान-सागर के अन्त में चले जायेंगे तो हलचल समाप्त हो एकाग्र बन जायेंगे। सुना, सूक्ष्म सेवा क्या है! 'शुभभावना', 'शुभकामना' शब्द सभी बोलते रहते हैं लेकिन इसके महत्त्व को जान प्रत्यक्ष रूप में आने से अनेक आत्माओं को प्रत्यक्षफल की अनुभूति कराने के निमित्त बनो। अच्छा!

टीचर्स का तो काम ही है – 'सेवा'। टीचर्स का महत्त्व ही सेवा है। अगर सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिखाई देता है तो उनको योग्य टीचर की लिस्ट में गिनती नहीं किया जाता। टीचर की महानता सेवा हुई ना। तो सेवा का महीन रूप सुनाया। मुख की सेवा तो करते रहते हो लेकिन मुख और मन की शुभभावना की सेवा साथ-साथ हो। बोल और भावना डबल काम करेंगे। इस सूक्ष्म सेवा का अभ्यास बहुतकाल अर्थात् अभी से चाहिए। क्योंकि आगे चलकर सेवा की रूपरेखा बदलनी ही है। फ़िर उस समय सूक्ष्म सेवा में अपने को बिज़ी नहीं कर सकेंगे, बाहर की परिस्थितियाँ बुद्धि को आकर्षित कर लेंगी। रिज़ल्ट क्या होगी ? याद और सेवा का बैलेंस नहीं रख सकेंगे। इसलिए अभी से अपने मन-बुद्धि के सेवा की लाइन को चेक करो। टीचर्स को चेक करना आता है ना। टीचर्स औरों को सिखाती हैं, तो ज़रूर स्वयं जानती हैं तब तो सिखाती हैं ना। अभी योग्य टीचर्स हो ना! योग्य टीचर की विशेषता यह है – जो निरन्तर चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा में सदा बिज़ी रहे। तो और बातों से स्वत: ही खाली हो जायेंगे। अच्छा!

कुमारियाँ भी आईं हैं। कुमारियाँ अर्थात् होवनहार टीचर्स। तब तो कहेंगे ब्रह्माकुमारियाँ हैं। अगर होवनहार सेवाधारी नहीं तो पाई पैसे वाली कुमारी है। कुमारियाँ क्या करती हैं ? नौकरी की टोकरी उठाती हैं ना पाई पैसे के पीछे। बापदादा को हँसी आती है कुमारियों के ऊपर – टोकरी का बोझ उठाने के लिए तैयार हो

जाती हैं लेकिन भगवान के घर में अर्थात् सेवा-स्थानों में रहने की हिम्मत नहीं रखती हैं। ऐसी कमज़ोर कुमारियाँ तो नहीं हो ना! चाहे पढ़ भी रही हैं, तो भी लक्ष्य तो पहले से रखा जाता है कि नौकरी करनी है या विश्व-सेवा करनी है। नौकरी करना अर्थात् अपने को पालना। बाल-बच्चे तो हैं नहीं, जिसको पालना पड़े। नौकरी इसलिए करते हैं कि आराम से अपने को पालते रहें, चलते रहें, विश्व की आत्माओं को बाप की पालना दें – यह लक्ष्य रखो। जब अनेक आत्माओं के निमित्त बन सकते हैं, तो सिर्फ अपनी आत्मा को पालना – उसके आगे क्या हुआ ? अनेकों की दुआयें लेना – यह कमाई कितनी बड़ी है! उस कमाई में पाँच हज़ार, पाँच लाख भी हो जाए, लेकिन यह अनेक आत्माओं की दुआयें – यह कितनी बड़ी कमाई है! और यह साथ जायेंगी अनेक जन्मों के लिए। वह पाँच लाख कहाँ जायेंगे ? या घर में या बैंक में रह जायेंगे। लक्ष्य सदैव ऊँचा रखा जाता है, साधारण नहीं। संगमयुग पर इस एक अभी के जन्म में इतना गोल्डन चांस मिलता है – बेहद की सेवा में निमित्त बनने का! सतयुग में भी ऑफ़र नहीं मिलेगी। नौकरी के लिए भी अखबार देखते रहते हैं ना कि कोई ऑफ़र मिले। बाप स्वयं सेवा की ऑफ़र कर रहे हैं। तो योग्य राइट हैण्ड बनो। साधारण ब्रह्माकुमारी भी नहीं बनना। योग्य सेवाधारी नहीं बनते तो सेवा करने के बजाय सेवा लेते रहते हैं। योग्य सेवाधारी बनना कोई मुश्किल नहीं। जब योग्य सेवाधारी नहीं बनते हो तब डरते हो – कैसे होगा, चल सकेंगे वा नहीं। योग्यता नहीं होती है तो डर लगता है। जो योग्य होता वह 'बेपरवाह बादशाह' होता है। चाहे स्थूल योग्यता, चाहे ज्ञान की योग्यता मनुष्य को वैल्यूबल बनाती है। योग्यता नहीं तो वैल्यू नहीं रहती। सेवा की योग्यता सबसे बड़ी है। ऐसी योग्य आत्मा को कोई बात रोक नहीं सकती। योग्य बनना माना मेरा तो एक बाबा। बस, और कोई बात नहीं। सुना कुमारियों ने! अच्छा!

कुमार भी बहुत आये हैं। कुमार दौड़ बहुत लगाते हैं। सेवा में भी अच्छे उमंग से दौड़ लगाते रहते हैं। लेकिन कुमारों की विशेषता और महानता यही है कि आदि से अब तक निर्विघ्न कुमार हो। अगर कुमार निर्विघ्न कुमार हैं, तो ऐसे कुमार बहुत महान गाये जाते हैं। क्योंकि दुनिया वाले भी कुमारियों के बजाय कुमारों के लिए समझते हैं कि कुमार योग्य बन जाएँ – यह मुश्किल है। लेकिन कुमार ही विश्व को चैलेन्ज करें कि आप तो असम्भव कहते हो लेकिन हम निर्विघ्न कुमार हैं। ऐसे विश्व

को सैम्पल दिखाने वाले कुमार महान कुमार हैं। बापदादा ऐसे कुमारों को सदा ही दिल से मुबारक देते हैं। समझा ! अभी-अभी बहुत अच्छे हैं, अभी-अभी कोई विघ्न आया तो नीचे-ऊपर हो गये – ऐसे नहीं। कुमार अर्थात् न तो समस्या बनना है और न समस्या में हार खानी है। कुमार, कुमारियों से भी नम्बर आगे जा सकते हैं लेकिन निर्विघ्न कुमार हों। क्योंकि कुमारों को बहुत करके यही विघ्न आता है कि कोई साथी नहीं है, कोई साथी चाहिए, कम्पैनियन चाहिए। तो किसी-न-किसी रीति से अपनी कम्पनी बना लेते हैं। कोई-कोई कुमार तो कम्पैनियन भी बना लेते हैं और कोई कम्पनी में आते हैं – बातचीत करना, बैठना, फ़िर कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है। लेकिन ऐसे भी कुमार हैं जो बाप के सिवाए न कम्पनी बनाने वाले हैं, न कम्पैनियन बनाने वाले हैं। सदा बाप की कम्पनी में रहने वाले कुमार सदा सुखी रहते हैं। तो आप लोग कौन-से कुमार हो ? थोड़ी-थोड़ी कम्पनी चाहिए ? सारा परिवार कम्पनी है ? फ़िर तो ठीक लेकिन दो-तीन या एक कोई कम्पनी चाहिए, वह रांग है। तो आप सभी कौन हो ? निर्विघ्न हो ना। नये कुमार भी कमाल करके दिखायेंगे। आखिर तो विश्व को अपने आगे, बाप के आगे झुकाना तो है ना ! तो यह कुमारों की कमाल विश्व को झुकायेगी। विश्व आपके गुण-गायन करेगा कि कमाल है कुमारों की ! कुमारी मैजारिटी फ़िर भी सेवा में कम्पनी में रहती हैं। लेकिन कुमारों को थोड़ा-सा कम्पनी का संकल्प आता है तो पाण्डव भवन बना कर सफ़ल रहें, ऐसा कोई करके दिखाओ। लेकिन आज पाण्डव भवन बनाओ और पाण्डव एक ईस्ट में चला जाए, एक वेस्ट में चला जाए – ऐसा पाण्डव भवन नहीं बनाना।

बापदादा को कुमारों के ऊपर विशेष नाज़ है कि अकेले रहते भी पुरुषार्थ में चल रहे हैं। कुमार आपस में दो-तीन साथी बनकर क्यों नहीं चलते ! साथी सिर्फ फ़ीमेल ही नहीं चाहिए, दो कुमार भी रह सकते हैं। लेकिन एक-दो के निर्विघ्न साथी होकर रहें। अभी वह जलवा नहीं दिखाया है। समय पर एक-दो के सहयोगी बनें तो क्या नहीं हो सकता है ? और बातें आ जाती हैं, इसलिए बापदादा पाण्डव भवन बनाने के लिए मना कर देता है। लेकिन सैम्पल कोई करके दिखाये। ऐसा नहीं पाण्डव भवन बना कर फ़िर जो निमित्त दादी-दीदियां हैं, उनका टाइम लेते रहो। निर्विघ्न हों, एक-दूसरे से योग्य कुमार हों फ़िर देखो कितना अच्छा नाम होता है। सुना कुमारों ने ? योग्य कुमार बनो, निर्विघ्न कुमार बनो। सेवा के क्षेत्र पर खुद समस्या नहीं बनो लेकिन समस्या को

मिटाने वाले बनो, फ़िर देखो कुमारों की बहुत वैल्यू होगी। क्योंकि कुमारों के बिना भी सेवा नहीं हो सकती है। तो कुमार क्या करेंगे ? सब बोलो – ''निर्विघ्न कुमार बनकर दिखायेंगे।'' (कुमारों ने बापदादा के सामने खड़े होकर वायदा किया) अभी सभी का फ़ोटो निकल गया है। ऐसे नहीं समझना कि हम उठे तो किसी ने देखा नहीं। फ़ोटो निकल गया। अच्छा है – ''हिम्मते बच्चे मददे बाप' और सारा परिवार आपके साथ है। अच्छा!

चारों ओर के सर्व बच्चों को सदा बापदादा अपने स्नेह के, सहयोग के छत्रछाया सहित दिल से सेवा की मुबारक दे रहे हैं। देश-विदेश के सेवा के समाचार मिलते रहते हैं। हर एक बच्चा अपने दिल का सच्चा समाचार भी देते रहते हैं। खास विदेश के पत्र ज़्यादा आते रहते हैं। तो सेवा के समाचार देने वाले बच्चों को मुबारक भी और साथ में सदा स्व-सेवा और विश्व-सेवा में 'सफ़लता भव' का वरदान दे रहे हैं। स्व-पुरुषार्थ के समाचार देने वालों को बापदादा यही वरदान दे रहे हैं कि जैसे सच्ची दिल से बाप को राज़ी करते रहते हो, ऐसे सदा स्वयं को भी स्वयं के संस्कारों से, संगठन से राज़युक्त अर्थात् राज़ी रहो। एक-दो के संस्कारों के राज़ को भी जानना, परिस्थितियों को जानना – यही राज़युक्त स्थिति है। बाकि सच्चे दिल से अपना पोतामेल देना और स्नेह की रूह-रूहान के पत्र लिखना अर्थात् पिछला समाप्त करना और स्नेह की रूह-रूहान सदा समीपता का अनुभव कराती रहेगी। यह है पत्रों का रेसपाण्ड।

पत्र लिखने में विदेशी बहुत होशियार हैं। जल्दी-जल्दी लिखते हैं। भारतवासी भी लम्बे-लम्बे पत्र भेजना नहीं शुरू करना। बापदादा ने कह दिया है दो शब्दों का पत्र लिखो – 'ओ०के०' (बिल्कुल ठीक हैं)। सर्विस समाचार है तो लिखो बाकी 'ओ०के०'। इसमें सब-कुछ आ जाता है। यह पत्र पढ़ना भी सहज है तो लिखना भी सहज है। लेकिन अगर 'ओ०के०' नहीं हो तो फ़िर 'ओ०के०' नहीं लिखना। जब ओ०के० हो जाओ तब लिखना। पोस्ट पढ़ने में भी तो टाइम लगता है ना! कोई भी कार्य करो, सदा शार्ट भी हो और स्वीट भी हो। कोई भी पढ़े तो उसको ख़ुशी तो हो। इसलिए राम कथाएं लिखकर नहीं भेजना। समझा! समाचार देना भी है लेकिन समाचार देना सीखना भी है। अच्छा!

सर्व शुभभावना और शुभकामना की सूक्ष्म सेवा के महत्त्व को जानने वाले

महान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

उड़ीसा-भोपाल ग्रुप

सदा बाप के स्नेह में सदा समाये हुए रहते हो ? जो समाया हुआ होता है उसको कोई सुध-बुध नहीं रहती। आप सभी को भी सब-कुछ भूल गया है ना! स्नेह में समाया हुआ सदा ही बाप का प्यारा और दुनिया से न्यारा रहता है। सभी लोग आपको कहते हैं ना कि आप तो न्यारे बन गये! न्यारा बनना ही बाप का प्यारा बनना है। सारे विश्व को बाप प्यारा क्यों लगता है ? क्योंकि सबसे न्यारा है। सबसे न्यारा एक ही है, और कोई हो नहीं सकता। तो आप भी कौन हैं ? न्यारे और प्यारे। आपका यह न्यारा जीवन सारे विश्व को प्रिय लगता हे। इसलिए ब्राह्मण जीवन को अलौकिक जीवन कहते हैं। अलौकिक का अर्थ क्या है ? लोक जैसे नहीं। अलौकिक अर्थात् लोक जैसा जीवन नहीं है। आपकी दृष्टि, स्मृति, वृत्ति सब बदल गई। स्मृति वा वृत्ति में क्या रहता है ? त्याग वृत्ति रहती है! आत्मा भाई-भाई की वृत्ति वा भाई-बहन की वृत्ति रहती है। हम सब आपस में एक परिवार के हैं – यह वृत्ति रहती है। और दृष्टि से भी आत्मा को ही देखते, शरीर को नहीं। तो सब बदल गया ना! कभी ग़लती से शरीर को तो नहीं देखते हो ? अगर आत्मा नहीं होती तो शरीर कुछ कर सकता है ? तो प्यारी चीज़ कौन-सी है ? आत्मा है। जब आत्मा निकल जाती है तो शरीर को रखने के लिए भी तैयार नहीं होते। तो प्यारी चीज़ आत्मा है ना! इसलिए वृत्ति, दृष्टि, स्मृति सब बदल जाती है। तो यह चेक करो कि सदा अलौकिक जीवन में हूँ या साधारण जीवन में हूँ ? क्योंकि नया जन्म हो गया! जन्म नया है तो सब-कुछ नया है और सभी को प्रिय भी नया लगता है, न कि पुराना। तो नई जीवन में नई बातें हैं। पुराना समाप्त हो गया। समाप्त हुआ है या आधे वहाँ जिन्दा हो, आधे यहाँ जिन्दा हो ? आधा शुद्र तरफ़, आधा ब्राह्मण तरफ़ – ऐसे तो नहीं है ना ? श्रेष्ठ जीवन को भूल कर साधारण जीवन को कौन याद करेगा! कोई को राजाई मिल जाए और फ़िर भी गरीबी को याद करता रहे, तो उसे क्या कहेंगे ? भाग्यवान कहेंगे ? तो स्वप्न में भी पुराना जीवन याद नहीं आये। जब मर गये तो याद कहाँ से आयेगा! आधा तो नहीं मरे हो ? पूरा मर गये होना! जो आधा मर जाता है, पूरा नहीं मरता, तो अच्छा नहीं लगता है ना! जब ऐसी बढ़िया जीवन मिल गई तो पुरानी

जीवन याद आ नहीं सकती। तो ऐसे मरजीवा बने हो या आधा मरे हो ? अच्छा!

सेवाधारियों ने सेवा करते वर्तमान और भविष्य – दोनों बना लिया। प्रत्यक्षफल भी मिला। मधुबन में रहने का भाग्य मिला – यह प्रत्यक्षफल मिला और भविष्य भी जमा कर लिया, तो डबल प्राप्ति हो गई ना! ऐसे ही सदा अपने भाग्य को ऊँचे-ते-ऊँचा बनाते जाओ। ऐसे नहीं – मधुबन से गये तो भाग्य कम हो गया! भाग्यविधाता के बच्चे हैं, भाग्य बढ़ता रहेगा। कुछ भी हो जाए, माया कितनी भी कोशिश करे लेकिन भाग्य नहीं गँवा सकते। वहाँ जाकर ऐसे पत्र नहीं लिखना कि हो गया, क्या करें.....। सदा अनुभव के पत्र लिखना, और कुछ नहीं लिखना। अभी तो विश्व की सर्व आत्माओं को जगाना है, श्रेष्ठ बनाना है तो स्वयं कैसे नीचे रहेंगे! ऊँचे रहेंगे तभी औरों को भी ऊँचा ले जायेंगे। सदा जैसे बाप वैसे बच्चे। समान बनना है और समीप रहना है। अच्छा!

τ τ τ

1-12-89 अव्यक्त बापदादा

स्वमान से ही सम्मान की प्राप्ति

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले:-

आज बापदादा चारों ओर के स्वमानधारी बच्चों को देख रहे हैं। स्वमानधारी बच्चों का ही सारा कल्प सम्मान होता है। एक जन्म स्वमानधारी, सारा कल्प सम्मानधारी। अपने राज्य में भी राज्य-अधिकारी बनने के कारण प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधा कल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त करते हो। अब अपने लास्ट जन्म में भी भक्तों द्वारा देव आत्मा वा शक्ति रुप का सम्मान देख रहे हो और सुन रहे हो। कितना सिक व प्रेम से अभी भी सम्मान दे रहे हैं! इतना श्रेष्ठ भाग्य कैसे प्राप्त किया! मुख्य सिर्फ एक बात के त्याग का यह भाग्य है। कौनसा त्याग किया? देह अभिमान का त्याग किया। क्योंकि देह अभिमान के त्याग बिना स्वमान में स्थित हो ही नहीं सकते। इस त्याग के रिटर्न में भाग्यविधाता भगवान ने यह भाग्य का वरदान दिया है। दूसरी बात - स्वयं बाप ने आप बच्चों को स्वमान दिया है। बाप ने बच्चों को चरणों के दास वा दासी से अपने सिर का ताज बना दिया। कितना बड़ा स्वमान दिया! ऐसे स्वमान प्राप्त करने वाले बच्चों का बाप भी सम्मान रखते हैं। बाप बच्चों को सदा अपने से भी आगे रखते हैं। सदा बच्चों के गुणों का गायन करते हैं। हर रोज सिक व प्रेम से यादप्यार देने के लिए परमधाम से साकार वतन में आते हैं। वहां से भेजते नहीं लेकिन आकर देते हैं। रोज़ यादप्यार मिलता है ना। इतना श्रेष्ठ सम्मान और कोई दे नहीं सकता। स्वयं बाप ने सम्मान दिया है, इसलिए अविनाशी सम्मान अधिकारी बने हो। ऐसे श्रेष्ठ को अनुभव करते हो? स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस में सम्बंध है।

स्वमानधारी अपने प्राप्त हुए स्वमान में रहते हुए स्वमान के सम्मान में भी रहता और दूसरों को भी सम्मान से देखता, बोलता वा संपर्क में आता है। स्व-सम्मान का अर्थ ही है स्व को सम्मान देना। जैसे बाप विश्व की सर्व आत्माओं द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाले हैं, हर एक सम्मान देते। लेकिन जितना ही बाप को सम्मान किलता है उतना ही सब बच्चों को सम्मान देते हैं। जो देता नहीं है तो देवता बनता नहीं। अनेक जन्म देवता बनते हो और अनेक जन्म देवता रुप का ही पूजन होता है। एक जन्म ब्राह्मण बनते हो लेकिन अनेक जन्म देवता रुप में राज्य करते वा पूज्य बनते हो। देवता अर्थात् देने वाला। अगर इस जन्म में सम्मान नहीं दिया तो देवता कैसे बनेंगे, अनेक जन्मों में सम्मान कैसे प्राप्त करेंगे? फालो फॉदर? साकार स्वरुप ब्रह्मा बाप को देखा - सदा स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट (विश्व-सेवाधारी) कहलाया, बच्चों का सर्वेन्ट कहलाया और बच्चों को मालिक बनाया। सदा मालेकम् सलाम किया। सदा छोटे बच्चों को भी सम्मान का स्नेह दिया, होवनहार विश्वकल्याणकारी रुप से देखा। कुमारियों वा कुमारों को, युवा स्थिति वालों को सदा विश्व की नामीग्रामी महान् आत्माओं को चैलेंज करने वाले, असंभव को संभव करने वाले, महात्माओं के सिर झुकाने वाले - ऐसे पवित्र आत्माओं को सम्मान से देखा। सदा अपने से भी कमाल करने वाले महान आत्मा समझ सम्मान दिया ना! ऐसे ही बुजुर्ग-आत्माओं को सदा अनुभवी आत्मा, हमजिन्स आत्मा के सम्मान से देखा। बांधेले सा बांधेलियों को निरंतर याद में नंबरवन के सम्मान से देखा। इसलिए नंबरवन अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने। राज्य सम्मान में भी नंबरवन - विश्व-महाराजन और पूज्य रुप में भी बाप की पूजा के बाद पहले पूज्य - लक्ष्मी नारायण ही बनते हैं। तो राज्य सम्मान और पूज्य सम्मान - दोनों में नंबरवन हो गये। क्योंकि सर्व को स्वमान, सम्मान दिया। ऐसे नहीं सोचा - सम्मान देवे तो सम्मान दूँ। सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना मित्र समझते। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी अपना समझते। क्योंकि सारी दुनिया ही अपना परिवार है। सर्व आत्माओं का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखाएं अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म की आत्माएं भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हुए ना। ऐसे स्वमानधारी सदा अपने को मास्टर रचयिता समझ सर्व को सम्मान-दाता बनते हैं। सदा अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न आदि पार्टधारी आत्माएँ समझते हो? इतना नशा है? तो सभी ने सुना - बच्चों का सम्मान क्या है, बूढों का सम्मान क्या है, युवा का क्या है? आदि पिता ब्रह्मा ने हमको ऐसे सम्मान से देखा। कितना नशा होगा! तो सदा यह स्मृति रखो कि आदि आत्तमा ने जिस श्रेष्ठ दृष्टि से देखा, ऐसी ही श्रेष्ठ स्थिति की सृष्टि में रहेंगे। ऐसे अपने से वायदा करो। वायदे तो करते रहते हो ना! बोल से भी वायदा करते हो, मन से भी करते हो और लिखकर भी करते हो और फिर भूल भी जाते हो। इसलिए वायदे का फायदा नहीं उठा पाते। याद रखो तो फायदा भी उठाओ। सभी अपने को चेक करो - कितने बार वायदा किया है और निभाया कितने बार है? निभाना आता है वा सिर्फ वायदा करना आता है? वा बदलते रहते हो - कभी वायदा करने वाले, कभी निभाने वाले?

टीचर्स क्या समझती हैं? निभाने वालों की लिस्ट में हो ना। टीचर्स को बापदादा सदा साथी शिक्षक कहते हैं। तो साथी की विशेषता क्या होती है? साथी समान होता है। बाप कभी बदलता है क्या? टीचर्स भी वायदा और फायदा - दोनों का बैलेंस रखने वाली हैं। वायदे बहुत और फायदा कम हो - यह बैलेंस नहीं होता। जो दोनों का बैलेंस रखते हैं उसको वरदाता बाप द्वारा यह वरदान वा ब्लैसिंग मिलती है। वह सदा दृढ़ संकल्प से कर्म में सफलतामूर्त बनते हैं। साथी शिक्षक का यही विशेष कर्म है। संकल्प और कर्म

समान हों। संकल्प और कर्म समान हों। संकल्प श्रेष्ठ और कर्म साधारण हो जाए - इसको समानता नहीं कहेंगे। तो सदा टीचर्स अपने को ''साथी शिक्षक'' अर्थात् ''शिक्षक बाप समान'' - इस स्मृति में समर्थ बन चलो। बापदादा को टीचर्स की हिम्मत पर खुशी होती है। हिम्मत रख सेवा के निमित्त तो बन गये हैं ना। लेकिन अभी सदा यह स्लोगन याद रखो - ''हिम्मते टीचर, समान शिक्षक बाप''। यह कभी नहीं भूलना। तो स्वत: ही समान बनने वाला लक्ष्य - ''बापदादा'' आपके सामने रहेगा अर्थात् साथ रहेगा। अच्छा!

चारों ओर के स्वमानधारी सो सम्मानधारी बच्चों को बापदादा नयनों के सम्मुख देखते हुए सम्मान की दृष्टि से यादप्यार दे रहे हैं। सदा राज-सम्मान और पूज्य-सम्मान के समान साथी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

बिहार ग्रुप

सभी अपने को स्वराज्य अधिकारी समझते हो? स्व का राज्य मिला है या मिलने वाला है? स्वराज्य अर्थात् जब चाहो, जैसे चाहो वैसे कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करा सको। कर्मेन्द्रिय - जीत अर्थात् स्वराज्य अधिकारी। ऐसे अधिकारी बने हो या कभी-कभी कर्मेन्द्रियां आपको चलाती हैं? कभी मन आपको चलाता है या आप मन को चलाते हो? कभी मन व्यर्थ संकल्प करता है या नहीं करता है? अगर कभी-कभी करता है तो उस समय स्वराज्य अधिकारी कहेंगे? राज्य बहुत बड़ी सत्ता है। राज्य सत्ता चाहे जो कर सकती है, जैसे चलाने चाहे वैसे चला सकती है। यह मन-बुद्धि-संस्कार आत्मा की शक्तियां हैं। आत्मा इन तीनों की मालिक है। यदि कभी संस्कार अपने तरफ खींच लें तो मालिक कहेंगे? तो स्वराज्य-सत्ता अर्थात् कर्मेन्द्रिय-जीत। जो कर्मेन्द्रिय-जीत है वही विश्व की राज्य-सत्ता प्राप्त कर सकता है। स्वराज्य अधिकारी विश्व-राज्य अधिकारी बनता है। तो आप ब्राह्मण आत्माओं का ही स्लोगन है कि स्वराज्य ब्राह्मण जीवन का जन्मसिद्ध अधिकार है। स्वराज्य अधिकारी की स्थिति सदा मास्टर सर्वशक्तिमान है, कोई भी शक्ति की कमी नहीं। स्वराज्य अधिकारी सदा धर्म अर्थात् धारणामूर्त भी होगा और राज्य अर्थात् शक्तिशाली भी होगा। अभी राज्य में हलचल क्यो हैं? क्योंकि धर्म-सत्ता अलग हो गई है और राज्य-सत्ता अलग हो गई है। तो लंगड़ा हो गया ना! एक सत्ता हुई ना। इसलिए हलचल है। ऐसे आप में भी अगर धर्म और राज्य - दोनों सत्ता नहीं हैं तो विघ्न आयेंगे, हलचल में लायेंगे, युद्ध करनी पड़ेगी। और दोनों ही सत्ता हैं तो सदा ही बेपरवाह बादशाह रहेंगे, कोई विघ्न आ नहीं सकता। तो ऐसे बेपरवाह बादशाह बने हो? या थोड़ी-थोड़ी शरीर की, सम्बंध की .... परवाह रहती है? पांडवों को कमाने की परवाह रहती है। परिवार को चलाने की परवाह रहती है या बेपरवाह रहते हैं? चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - ऐसे निमित्त बनकर करने वाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। ''मैं कर रहा हूँ - यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे। कोई चिंता नहीं। कल क्या होगा - उसकी भी चिंता नहीं। कभी यह थोड़ी-सी चिंता रहती है कि कल क्या होगा, कैसे होगा? पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा? बच्चों का क्या होगा? पोत्रों-धोत्रों का क्या होगा - यह चिंता रहती है? बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा है वह अच्छा, और जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा होगा। क्योंकि कराने वाला अच्छे-ते-अच्छा है ना! इसको कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। ऐसे बने हो या सोच रहे हो? बनना तो है ही ना! इतनी बड़ी राजाई मिल जाए तो सोचने की क्या बात है? अपना अधिकार कोई छोड़ता है? झोंपड़ी वाले भी होंगे, थोड़ी-सी मिलकियत भी होगी - तो भी नहीं छोड़ेंगे। यह तो कितनी बड़ी प्राप्ति है! तो मेरा अधिकार है - इस स्मृति से सदा अधिकारी बने उड़ते चलो। यही वरदान याद रखना कि ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है''। मेहनत करके पाने वाले नहीं, अधिकार है। अच्छा! बिहार माना सदा बहार रहने वाले। पतझड़ में नहीं जाना। कभी आंधी-तूफान न आये, सदा बहार। अच्छा!

२. अपने को रुहानी दृष्टि से सृष्टि को बदलने वाला अनुभव करते हो? सुनते थे कि दृष्टि से सृष्टि बदल जाती है लेकिन अभी अनुभवी बन गये। रुहानी दृष्टि से सृष्टि बदल गई ना! अभी आपके लिए बाप संसार है, तो सृष्टि बदल गई। पहले की सृष्टि अर्थात् संसार और अभी के संसार में फर्क हो गया ना! पहले संसार में बुद्धि भटकती थी और अभी बाप ही संसार हो गया। तो बुद्धि का भटकना बंध हो गया, एकाग्र हो गई। क्योंकि पहले की जीवन में, कभी देह के सम्बन्ध में, कभी देह के पदार्थ में - अनेकों में बुद्धि जाती थी। अभी यह सब बदल गया। अभी देह याद रहती या देही? अगर देह में कभी बुद्धि जाती है तो रांग समझते हो ना! फिर बदल लेते हो, देह के बजाय अपने को देही समझने का अभ्यास करते हो। तो संसार बदल गया ना! स्वयं भी बदल गये। बाप ही संसार है या अभी संसार में कुछ रहा हुआ है? विनाशी धन या विनाशी सम्बन्ध के तरफ बुद्धि तो नहीं जाती? अभी मेरा रहा ही नहीं। ''मेरे पास बहुत धन है'' - यह संकल्प या स्वप्न में भी नहीं होगा क्योंकि सब बाप के हवाले कर दिया। मेरे को तेरा बना लिया ना! या मेरा, मेरा ही है और बाप का भी मेरा है। ऐसे तो नहीं समझते? यह विनाशी तन - धन पुराना मन, मेरा नहीं, बाप को दे दिया। पहला-पहला परिवर्तन होने का संकल्प ही यह किया कि सब कुछ तेरा और तेरा कहने से ही फायदा है। इसमें बाप का फायदा नहीं है, आपका फायदा है। क्योंकि मेरा कहने से फंसते हो, तेरा कहने से न्यारे हो जाते हो। मेरा कहने से बोझ वाले बन जाते हो और तेरा कहने से डबल लाइट ''ट्रस्टी'' बन जाते हो। तो क्या अच्छा है - हल्का बनना अच्छा है या भारी बनना अच्छा है? आजकल

के जमाने में शरीर से भी कोई भारी होता तो अच्छा नहीं लगता। सभी अपने को हल्का करने का प्रयत्न करते हैं। क्योंकि भारी होना माना नुकसान है और हल्का होने से फायदा है। ऐसे ही मेरा-मेरा कहने से बुद्धि पर बोझ पड़ जाता है, तेरा-तेरा कहने से बुद्धि हल्की बन जाती है। जब तक हलके नहीं बने तब तक ऊंची स्थिति तक पहुंच नहीं सकते। उड़ती कला ही आनंद की अनुभूति कराने वाली है। हल्का रहने में ही मजा है। अच्छा!

जब बाप मिला तो माया उसके आगे क्या है? माया है रुलाने वाली और बाप है वर्सा देने वाला, प्राप्ति कराने वाला। सारे कल्प में ऐसी प्राप्ति कराने वाला बाप मिल नहीं सकता! स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा। तो एक सेकण्ड भी भूलना नहीं चाहिए। हद की प्राप्ति कराने वाला भी नहीं भूलता है तो बेहद की प्राप्ति कराने वाला भूल कैसे सकता! तो सदा यही याद रखना कि ट्रस्टी हैं। कभी भी अपने ऊपर बोझ नहीं रखना। इससे सदा हंसते, गाते, उड़ते रहेंगे। जीवन में और क्या चाहिए! हंसना, गाना और उड़ना। जब प्राप्ति होगी तब तो हंसेंगे ना। नहीं तो रोयेंगे। तो यह वरदान स्मृति में रखना कि हम हंसते-गाते और उड़ने वाले हैं, सदा ही बाप के संसार में रहने वाले हैं। और कुछ है ही नहीं जहां बुद्धि जाए। स्वप्न में भी रोना नहीं। माया रुलाए तो भी नहीं रोना। मन का भी रोना होता है, सिर्फ आंखों का रोना ही नहीं होता। तो माया रुलाती है, बाप हंसाते हैं। सदा बिहार माना खुश रहने वाले - खुशबहार। और बंगाल माना सदा मीठा रहने वाले। बंगाल में मिठाइयां अच्छी होती हैं ना, बहुत वैरायटी होती है। तो जहां मधुरता है वहां ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर रहने वाले और सदा खुशबहार रहने वाले। अच्छा! टीचर्स भी खुशब-हार को देख करके सदा-बहार ही रहती हैं ना। अच्छा!

<u>दिल्ली ज़ोन</u>

दिल्ली को बापदादा ''दिल'' कहते हैं। नाम है दिल्ली अर्थात् दिल ली। बाप ने आकर दिल ली और आपने आकर क्या किया? बाप को दिल में बिठा दिया। दिल में और तो कोई नहीं है ना! न व्यक्ति, न वस्तु। काई वस्तु भी आकर्षित करती है तो वह भी दिल में बिठाया ना! वस्तु के पीछे भी अगर दिल लग गई तो बाप भूल जायेगा ना! बाप को भूला तो माया का लगा बम गोला। बाम्ब (Bomb गोला) लगने से कितना नुक्सान हो जाता है! तो यह भी बाम्ब लगता है तो बहुत नुक्सान कर देता है। दिल है ही बाप के लिए तो दूसरा कैसे आ सकता है? जो आसन जिसका होगा, वही बैठेगा ना! अभी प्राइम मिनिस्टर की सीट पर जो फिक्स होगा वही बैठेगा। तो दिल है दिलाराम के लिए। एक ही काम मिला है - बाप को याद करो, बस। जिसके दिल में बाप है वह सदा ही ''वाह-वाह'' के गीत गाता है और बाप नहीं तो ''हाय-हाय'' के गीत गाता है। दुनिया वाले ''हाय-हाय'' करते और आप ''वाह-वाह'' करते। स्वयं भी ''वाह-वाह'' हो गये, बाप भी ''वाह-वाह'' और ड्रामा में जो कुछ चल रहा है वह भी ''वाह-वाह''। तो सदा ''वाह-वाह'' के गीत गाने वाले हो या कभी ''हाय-हाय'' भी कर देते हो! मन से भी, स्वप्न में भी कभी ''हाय'' नहीं निकल सकती। ''हाय'' क्या हो गया! यह कभी कहते हो? जो हुआ वह भी वाह, जो हो रहा है वह भी ''वाह'', जो होना है वह भी ''वाह''। तीनों ही काल - वाह-वाह है। एक काल भी खराब नहीं हो सकता। क्योंकि बाप भी अच्छे-ते-अच्छा, संगमयुग भी सबसे अच्छा और जो प्राप्ति है वह भी अच्छे-ते-अच्छी और भविष्य जो प्राप्त होना है वह भी अच्छे-ते-अच्छा। सब अच्छा होना है तो वाह-वाह के गीत गाते रहो। जहां सब अच्छा लगेगा वहां इच्छा नहीं होगी। अगर इच्छा होती है तो अच्छा नहीं होता और अच्छा होता है तो इच्छा नहीं होती। क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्त हो। जब अप्राप्ति होती है तब इच्छा होती है। तो कोई अप्राप्ति है? माताओं को गहने चाहिएं? सोना चाहिए? पांडवों को लाख वा पद्म चाहिएं? करोड़ चाहिएं? नहीं चाहिए? क्योंकि अब के करोड़-पति बनना अर्थात् सदा के करोड़ गंवाना। अभी क्या करेंगे? या झूठी माया, झूठी काया - झूठा क्या करेंगे! शरीर निर्वाह के लिए, दाल-रोटी के लिए तो बहुत मिल रहा है और मिलता रहेगा। बाकि क्या चाहिए? लॉटरी वगैरह चाहिए? कई बच्चे समझते हैं लॉटरी आयेगी तो यज्ञ में लगा देंगे। लेकिन ऐसा पैसा यज्ञ में नहीं लगता। होती अपनी इच्छा है लेकिन कहते हैं लॉटरी आयेगी तो सेवा करेंगे! अभी तो सच्ची कमाई जमा कर रहे हो, इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या। क्योंकि इच्छा में अगर गये तो इच्छा के पीछे भागना ऐसे ही है जैसे मृगतृष्णा। तो इच्छा समाप्त हो गई, अच्छे बन गये! जब रचयिता ही आपका हो गया तो रचना क्या करेंगे! बेहद के आगे हद क्या लगती है? कुछ भी नहीं है। हद में फंस गये तो बेहद गया।

दिल्ली वालों को तो नशा चाहिए - दिल्ली में जमुना के किनारे महल बनेंगे! तो सिर्फ महल देखने वाले बनेंगे या महल में रहने वाले? सभी राज्य करेंगे या देखेंगे? अच्छा! बाप मिला सब-कुछ मिला। याद और सेवा के सिवाय और कोई कार्य है ही नहीं। अगर दफ्तर में जाते हो, बिजनेस करते हो - तो भी सेवा के लिए। इस लक्ष्य से कहीं भी जायेंगे तो सेवा होगी। अगर यह समझकर जायेंगे कि ड्यूटी बजाने जा रहा हूँ, जाना ही है - तो सेवा नहीं होगी। काम करके लौट आयेंगे लेकिन सेवा नहीं कर सकेंगे। सेवा के निमित्त यह कर रहा हूँ - तो सेवा आपके पास स्वत: ही आयेगी और जितनी सेवा करेंगे उतनी और खुशी बढ़ती जायेगी। भविष्य तो है ही लेकिन प्रत्यक्षफल ''खुशी'' मिलती है। तो फल खाओ, मेहनत नहीं करो। सेवा याद नहीं रहेगी तो मेहनत करनी पड़ेगी। खाली बुद्धि रहना अर्थात् माया का आह्वान करना और बुद्धि को याद और सेवा में बिजी रखा तो सदा ही फल खाते रहेंगे।

अच्छा!

दिल्ली वालों को बापदादा विशेष सहयोग देते हैं, क्यों? क्योंकि समय पर सहयोगी पहले दिल्ली निवासी बने हैं। जब यज्ञ में आवश्यक्ता थी तब सहयोगी बनें। तो जो समय पर सहयोगी बनता है उसको ऑटोमेटिकली विशेष सहयोग मिलता है। दिल्ली निवासियों को यह विशेष लिफ्ट है। स्थापना में सहयोग के निमित्त दिल्ली बनी है, उसमें भी विशेष मातायें। तो बापदादा किसका रखता नहीं है, अभी ही देता है। एक का पद्मगुणा करके दे देता है। तो एक्स्ट्रा लिफ्ट हुई ना। जब स्थापना में पहला नंबर बने तो राज्य में भी पहला नंबर बनेंगे। समझा? अच्छा!

5.12.89 अव्यक्त बापदादा

सदा प्रसन्न कैसे रहें?

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले -

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों को देख रहे थे। क्या देखा? हर एक बच्चा स्वयं हर समय कितना प्रसन्न रहता है, साथ-साथ दूसरों को स्वयं द्वारा कितना प्रसन्न करते हैं। क्योंकि परमात्म सर्व प्राप्तियों के प्रत्यक्षस्वरुप में प्रसन्नता ही चेहरे पर दिखाई देती है। ''प्रसन्नता'' ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है। अल्पकाल की प्रसन्नता और सदाकाल की सम्पन्नता की प्रसन्नता - इसमें रात-दिन का अंतर है। अल्पकाल की प्रसन्नता अल्पकाल के प्राप्ति वाले के चेहरे पर थोड़े समय के लिए दिखाई जरुर देती है लेकिन रुहानी प्रसन्नता स्वयं को तो प्रसन्न करती ही है परंतु रुहानी प्रसन्नता के वायब्रेशन अन्य आत्माओं तक भी पहुंचते हैं, अन्य आत्माएं भी शांति और शक्ति की अनुभूति करती हैं। जैसे फलदायक वृक्ष अपने शीतलता की छाया में थोड़े समय के लिए मानव को शीतलता का अनुभव कराता है और मानव प्रसन्न हो जाता है। ऐसे परमात्म-प्राप्तियों के फल सम्पन्न रुहानी प्रसन्नता वाली आत्मा दूसरों के भी अपने प्राप्तियों की छाया में तन-मन की शांति और शक्ति की अनुभूति कराती है। प्रसन्नता के वायब्रेशन सूर्य की किरणों समान वायुमण्डल को, व्यक्ति को और सब बातें भुलाए सच्चे रुहानी शान्ति की, खुशी की अनुभूति में बदल देते हैं। वर्तमान समय की अज्ञानी आत्माएं अपने जीवन में बहुत खर्चा करके भी प्रसन्नता में रहना चाहती हैं। आप लोगों ने क्या खर्चा किया? बिना पैसा खर्च करते भी सदा प्रसन्न रहते हो ना! वा औरों की मदद से प्रसन्न रहते हो? बापदादा बच्चों का चार्ट चेक कर रहे थे। क्या देखा? एक हैं सदा प्रसन्न रहने वाले और दूसरे हैं प्रसन्न रहने वाले। ''सदा'' शब्द नहीं है। प्रसन्नता भी तीन प्रकार की देखी - (१) स्वयं से प्रसन्न, (२) दूसरों द्वारा प्रसन्न, (३) सेवा द्वारा प्रसन्न। अगर तीनों में प्रसन्न हैं तो बापदादा को स्वत: ही प्रसन्न किया है और जिस आत्मा के ऊपर बाप प्रसन्न है वह तो सदा सफलता मूर्त है ही है।

बापदादा ने देखा कई बच्चे अपने से भी अप्रसन्न रहते हैं। छोटी-सी बात के कारण अप्रसन्न रहते हैं। पहला-पहला पाठ ''मैं कौन'' इसको जानते हुए भी भूल जाते हैं। जो बाप ने बनाया है, दिया है - उसको भूल जाते हैं। बाप ने हर एक बच्चे को फुल वर्से का अधिकारी बनाया है। किसको पूरा, किसको आधा वर्सा नहीं दिया है। किसको आधा वा चौथा मिला है क्या? आधा मिला है या आधा लिया है? बाप ने तो सभी को मास्टर सर्वशक्तिमान का वरदान वा वर्सा दिया। ऐसे नहीं कि कोई शक्तियां बच्चों को दीं और कोई नहीं दी। अपने लिए नहीं रखी। सर्वगुण सम्पन्न बनाया है, सर्व प्राप्ति स्वरुप बनाया है। लेकिन बाप द्वारा जो प्राप्तियां हुई हैं उसको स्वयं में समा नहीं सकते। जैसे स्थूल धन वा साधन प्राप्त होते भी खर्च करना न आये वा साधनों को यूज करना न आये तो प्राप्ति होते भी उससे वंचित रह जाते हैं। ऐसे सब प्राप्तियां वा खजाने सबके पास हैं लेकिन कार्य में लगाने की विधि नहीं आती है और समय पर यूज करना नहीं आता है। फिर कहते - मैं समझती थी कि यह करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए लेकिन उस समय भूल गया। अभी समझती हूँ कि ऐसा नहीं होना चाहिए। उस समय एक सेकण्ड भी निकल गया तो सफलता की मंजिल पर पहुंच नहीं सकते क्योंकि समय की गाड़ी निकल गई। चाहे एक सेकण्ड लेट किया चाहे एक घंटा लेट किया - समय निकल तो गया ना। और जब समय की गाड़ी निकल जाती है तो फिर स्वयं से दिलशिकस्त हो जाते हैं और अप्रसन्नता के संस्कार इमर्ज होते हैं - मेरा भाग्य ही ऐसा है, मेरा ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है। पहले भी सुनाया था - स्व से अप्रसन्न रहने के मुख्य दो कारण होते हैं दिलशिकस्त होना और दूसरा कारण होता है दूसरों की विशेषता को वा भाग्य को वा पार्ट को देख ईर्ष्या उत्पन्न होना। हिम्मत कम होती है, ईर्ष्या ज्यादा होती है। दिलशिकस्त भी कभी प्रसन्न नहीं रह सकता और ईर्ष्या वाला भी कभी प्रसन्न नहीं रह सकता। क्योंकि दोनों हिसाब से ऐसी आत्माओं की इच्छा कभी पूर्ण नहीं होती और इच्छाएं ''अच्छा'' बनने नहीं देती। इसलिए प्रसन्न नहीं रहते। प्रसन्न रहने के लिए सदा एक बात बुद्धि में रखो कि ड्रामा के नियम प्रमाण संगमयुग पर हर एक ब्राह्मण आत्मा को कोई-न-कोई विशेषता मिली हुई है। चाहे माला का लास्ट १६,००० वाला दाना हो - उसको भी कोई-न-कोई विशेषता मिली हुई है। उनसे भी आगे चलो - नौ लाख जो गाये हुए हें उन्हें भी कोई-न-कोई विशेषता मिली हुई है। अपनी विशेषता को पहले पहचानो। अभी तो नौ लाख तक पहुंचे ही नहीं हैं जो ब्राह्मण जन्म के भाग्य की विशेषता को पहचानो। उसको पहचानो और कार्य में लगाओ। सिर्फ

दूसरे की विशेषता को देख करके दिलशिकस्त वा ईर्ष्या में नहीं आओ। लेकिन अपनी विशेषता को कार्य में लगाने से एक विशेषता फिर और विशेषताओं को लायेगी। एक के आगे बिंदी लगती जायेगी तो कितने हो जायेंगे? एक को एक बिंदी लगाओ तो १० बन जाता और दूसरी बिंदी लगाओ तो १०० बन जायेगा। तीसरी लगाओ तो ....., यह हिसाब तो आता है ना। कार्य में लगाना अर्थात् बढ़ना। दूसरों को नहीं देखो। अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ। जैसे देखो, बापदादा सदा ''भोली-भंडारी'' (भोली दादी) का मिसाल देता है। महारथियों का नाम कभी आयेगा लेकिन इनका नाम आता है। जो विशेषता थी वह कार्य में लगाई। चाहे भंडारा ही संभालती है लेकिन विशेषता को कार्य में लगाने से विशेष आत्माओं के मिसल गाई जाती है। सभी मधुबन का वर्णन करते तो दादियों की भी बातें सुनायेंगे तो भोली की भी सुनायेंगे। भाषण तो नहीं करती लेकिन विशेषता को कार्य में लगाने से स्वयं भी विशेष बन गई। दूसरे भी विशेष नजर से देखते। तो प्रसन्न रहने के लिए क्या करेंगे? विशेषता को कार्य में लगाओ। तो वृद्धि हो जायेगी और जब सर्व आ गया तो सम्पन्न हो जायेंगे और प्रसन्नता का आधार है -''सम्पन्नता''। जो स्व से प्रसन्न रहते वह औरों से भी प्रसन्न रहेंगे, सेवा से भी प्रसन्न रहेंगे। जो भी सेवा मिलेगी उसमें औरों को प्रसन्न कर सेवा में नंबर आगे ले लेंगे। सबसे बड़े-ते-बड़ी सेवा आपकी प्रसन्नमूर्त करेगी। तो सुना, क्या चार्ट देखा! अच्छा!

टीचर्स को आगे बैठने का भाग्य मिला है। क्योंकि पंडा बनकर आती हैं तो मेहनत बहुत करती हैं। एक को सुखधाम से बुलायेंगे तो दूसरे को विशाल भवन से बुलायेंगे। एक्सरसाइज़ अच्छी हो जाती है। सेंटर पर तो पैदल करती नहीं हो। जब शुरु में सेवा आरंभ की तो पैदल जाती थी ना। आपकी बड़ी दादियां भी पैदल जाती थीं। सामान का थैला हाथ में उठाया और पैदल चली। आजकल तो आप सब बने - बनाये पर आये हो। तो लक्की हो ना। बने-बनाये सेंटर मिल गये हैं। अपने मकान हो गये हैं। पहले तो जमुनाघाट पर रही थीं। एक ही कमरा -रात को सोने का, दिन को सेवा का होता था। लेकिन खुशी-खुशी से जो त्याग किया उसी के भाग्य का फल अभी खा रही हो। आप फल खाने के टाइम पर आई हो। बोया इन्होंने, खा आप रही हो। फल खाना तो बहुत सहज है ना। अब ऐसे फलस्वरुप क्वालिटी निकालो। समझा? क्वांटिटी (संख्या) तो है ही और यह भी चाहिए। नौ लाख तक जाना है तो क्वांटिटी और क्वालिटी - दोनों चाहिएं। लेकिन १६,००० की पक्की माला तो तैयार करो। अभी क्वालिटी की सेवा पर विशेष अंडरलाइन करो।

हर ग्रुप में टीचर्स भी आती, कुमारियां भी आती हैं। लेकिन निकलती नहीं हैं। मधुबन अच्छा लगता है, बाप से प्यार भी है। लेकिन समर्पण होना सोचना है। जो स्वयं ऑफर करता है वह निर्विघ्न चलता है और जो कहने से चलता वह रुकता है फिर चलता हैं। वह बार-बार आपको ही कहेंगे - हमने तो पहले ही कहा था सरेन्डर नहीं होना चाहिए। कोई-कोई सोचती हैं - इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना इसमें अंतर जरुर है। जो समर्पण के महत्व को जानते हैं वह सदा ही अपने को कई बातों से किनारे हो आराम से आ गये हैं, कई मेहनत से छूट गये। तो टीचर्स अपने महत्व को अच्छी रीति जानती हो ना? नौकरी और यह सेवा - दोनों काम करने वाले अच्छे वा एक काम करने वाले अच्छे? उन्हों को फिर भी डबल पार्ट बजाना पड़ता है। भल निर्बन्धन हैं फिर भी डबल पार्ट तो है ना। आपका तो एक ही पार्ट है। प्रवृति वालों को तीन पार्ट बजाना पड़ता - एक पढाई का, दूसरा सेवा का और साथ-साथ प्रवृति को पालने का। आप तो सब बातों से छूट गई। अच्छा!

सर्व सदा प्रसन्नता की विशेषता सम्पन्न श्रेष्ठ आत्माएं, सदा अपनी विशेषता को पहचान कार्य में लगाने वाली सेन्सीबुल और इंसेन्सफुल आत्माओं को, सदा प्रसन्न रहने वाले, प्रसन्न करने की श्रेष्ठता वाली महान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

<u>आगरा - राजस्थान</u>

सदा अपने को अकालतख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? आत्मा अकाल है तो उसका तख्त भी अकालतख्त को गया ना! इस तख्त पर बैठकर आत्मा कितना कार्य करती है। ''तख्तनशीन आत्मा हूँ - इस स्मृति से स्वराज्य की स्मृति स्वत: आती है। राजा भी जब तख्त पर बैठता है तो राजाई नशा, राजाई खुशी स्वत: होती है। तख्तनशीन माना स्वराज्य अधिकारी राजा हूँ - इस स्मृति से सभी कर्मेन्द्रियां स्वत: ही ऑर्डर पर चलेंगी। जो अकाल-तख्त-नशीन समझकर चलते हौ उनके लिए बाप का भी दिलतख्त है। क्योंकि आत्मा समझने से बाप ही याद आता है। फिर न देह है, न देह के सम्बंध हैं, न पदार्थ हैं, एक बाप ही संसार है। इसलिए अकाल-तख्त-नशीन बाप के दिल-तख्त-नशीन भी बनते हैं। बाप की दिल में ऐसे बच्चे ही रहते हैं जो ''एक बाप दूसरा न कोई'' हैं। तो डबल तख्त हो गया। जो सिकीलधे बच्चे होते हैं, प्यारे होते हैं उन्हें सदा गोदी में बिठायेंगे, ऊपर बिठायेंगे नीचे नहीं। तो बाप भी कहते हैं तख्त पर बैठो, नीचे नहीं आओ। जिसको तख्त मिलता है वह दूसरी जगह बैठेगा क्या? तो अकालतख्त वा दिलतख्त को भूल देह की धरनी में, मिट्टी में नहीं आओ। देह को मिट्टी कहते हो ना। मिट्टी, मिट्टी में मिल जायेगी - ऐसे कहते हैं ना! तो देह में आना अर्थात् मिट्टी में आना। जो रॉयल बच्चे होते हैं वह कभी मिट्टी में नहीं खेलते। परमात्म-बच्चे तो सबसे रॉयल हुए। तो

तख्त पर बैठना अच्छा लगता है या थोड़ी-थोडी दिल होती है - मिट्टी में भी देख लें। कई बच्चों की आदत मिट्टी खाने की वा मिट्टी में खेलने की होती है। तो ऐसे तो नहीं है ना! ६३ जन्म मिट्टी से खेला। अब बाप तख्तनशीन बना रहे हैं, तो मिट्टी से कैसे खेलेंगे, जो मिट्टी में खेलता है वह मैला होता है। तो आप भी कितने मैले हो गये। अब बाप ने स्वच्छ बना दिया। सदा इसी स्मृति से समर्थ बनो। शक्तिशाली कभी कमजोर नहीं होते। कमजोर होना अर्थात् माया की बीमारी आना। अभी तो सदा तन्दुरुस्त हो गये। आत्मा शक्तिशाली हो गई। शरीर का हिसाब-किताब अलग चीज है लेकिन मन शक्तिशाली हो गया ना। शरीर कमजोर है, चलता नहीं है, वह तो अंतिम है, वह तो होगा ही लेकिन आत्मा पावरफुल हो। शरीर के साथ आत्मा कमजोर न हो। तो सदा याद रखना कि डबल तख्तनशीन सो डबल ताजधारी बनने वाले हैं। अच्छा!

सभी संतुष्ट हो ना! संतुष्ट अर्थात् प्रसन्न। सदा प्रसन्न रहते हो या कभी-कभी रहते हो? कभी अप्रसन्न, कभी प्रसन्न - ऐसे तो नहीं, कभी किसी बात से अप्रसन्न नहीं होते हो? आज यह कर लिया, आज यह हो गया, कल वह हो गया - ऐसे पत्र तो नहीं लिखते हो? सदा प्रसन्नचित रहने वाले अपने रुहानी वायब्रेशन से औरों को भी प्रसन्न करते हैं। ऐसे नहीं - मैं तो प्रसन्न रहता ही हूँ। लेकिन प्रसन्नता की शक्ति फैलेगी जरुर। तो और किसको भी प्रसन्न कर सको - ऐसे हो या अपने तक ही प्रसन्न ठीक हो? दूसरों को भी करेंगे, फिर तो अभी कोई पत्र नहीं आयेगा। अगर कोई अप्रसन्नता का पत्र आये तो वापस उसको ही भेजें ना! यह टाइम और यह तारीख याद रखना। हाँ, यह पत्र लिखो - ओ.के. हूँ और सब मेरे से भी ओ.के. हैं। यह दो लाइन लिखो, बस। मैं भी ओ.के. और दूसरे भी मेरे से ओ.के. हैं। इतना खर्च क्यों करते हो, यह तो दो लाइन कॉर्ड पर ही आ सकती है। और बार-बार भी नहीं लिखो। नहीं तो रोज कॉर्ड भेज देते हैं, रोज नहीं भेजना। मास में दो बार, १५ दिन में एक ''ओ.के.'' का कॉर्ड लिखो, और कथाएं नहीं लिखना। अपनी प्रसन्नता से औरों को भी प्रसन्न बनाना। अच्छा!

<u>गुजरात ग्रुप</u>

सदा अपने को बाप के सिकीलधे समझते हो? सिकीलधे अर्थात् बड़े सिक से बाप ने हमें ढूंढा है। बाप ने बड़े सिक व प्रेम से आपको ढूंढ़ा है। आपने ढूंढ़ा लेकिन मिला नहीं। परिचय ही नहीं था तो मिले कैसे? लेकिन बाप ने आपको ढूंढ़ा इसलिए कहते हैं सिकीलधे। तो जिसको बाप ढूंढ़े वह कितने भाग्यवान् होंगे! दुनिया वाले बाप को ढूंढ़ रहे हैं और आप मिलन मना रहे हो। कितने थोड़े हो, बहुतों का पार्ट है ही नहीं। थोड़ों का पार्ट है, इसलिए गाया हुआ है - कोटों में कोई। अक्षोणी सेना नहीं गाई हुई है, कोटों में कोई गाया हुआ है। तो यह खुशी वा स्मृति सदा इमर्ज रहे। हर कदम में खुशी अनुभव हो। अल्पकाल की प्राप्ति वालों के चेहरे पर वह प्राप्ति की रेखा चमकती है। आपको तो सदाकाल की प्राप्ति है। तो चेहरा सदा खुशी में दिखाई दे, उदास न हो। जो माया का दास बनता है वह उदास होता है। आप कौन हो? माया के दास हो या मालिक हो? माया को अपनी अथार्टी से भगाने वाले हो, ऐसी आत्मा कभी उदास नहीं हो सकती। कोई फिक्र ही नहीं है ना। कोई फिक्र या चिंता होती है तो उदास होते हैं। आपको कौनसी चिंता है? पांडवों को चिंता है? कमाने की, परिवार को पालने के लिए पैसे की चिंता है? लेकिन चिंता से पैसा कभी नहीं आयेगा। मेह-नत करो, कमाई करो। लेकिन चिंता से कभी कमाई में सफल नहीं होंगे। चिंता को छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहां योग है वहां कार्य कुशल होगा और सफलता होगी। चिंता से कभी पैसा नहीं आयेगा। अगर चिंता से कमाया हुआ पैसा आयेगा भी तो चिंता ही पैदा करेगा। जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा और खुशी-खुशी से काम करके कमाई करेंगे तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हजार का काम करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। इतना फर्क हैं, इसलिए चिंता क्या करेंगे। सच्ची दिल वालों को सच की कमाई मिलती है। बाप भी दाल-रोटी जरुर देते हैं। सुस्त रहने वाले को नहीं देंगे। काम तो करना ही पड़ेगा क्योंकि पिछले हिसाब भी तो चुक्तू करने हैं। लेकिन चिंता से नहीं, खुशी से। कोई भी काम करो - योग-युक्त होकर करो। योगी का कार्य सहज और सफल होता है, ऐसा अनुभव है ना! याद में कोई भी काम करते तो थकावट नहीं होती। खुशी-खुशी से करते तो थकते नहीं। मजबूर होकर करते तो थक जाते हैं। बाप ने डॉयरेक्शन दिया है - योग से हिसाब-किताब चुक्तू करो। तो बाप के डॉयरेक्शन पर खुशी-खुशी से वह काम भी करो, मजबूरी से नहीं। यह तो मालूम है कि वह बंधन है लेकिन घड़ी-घड़ी कहने से और भी बड़ा कड़ा बंधन हो जायेगा। मातायें बहुत करके कहती हैं - कब तक हमारा बंधन रहेगा? यह भी क्या बंधन बन गया? यह तो मालूम है कि यह बंधन है लेकिन अब यह सोचो कि योग से बंधनमुक्त कैसे बनें - यह भी ज्यादा नहीं सोचो। सोचने से कुछ नहीं होता है, करने से होता है। सोचते-सोचते मानो उसी समय अंतिम घड़ी आ जाए तो क्या होगा? बंधन है, बंधन है यही सोचते जायेंगे तो कहां जायेंगे? पिंजड़े में ही जायेंगे! अंत में अगर बंधन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवांस-पार्टी में सेवा के लिए जायेंगे, इसलिए कभी भी अपने से तंग नहीं हो। खुश रहो। क्या करें, कैसे करें .... यह गीत नहीं गाओ। खुशी के गीत गाओ।

प्रवृति वाले थकते तो नहीं हो ना! सेवा समझकर करो, बंधन समझकर नहीं करो। सेंटर पर भी आ जायेंगे तो वहां भी सेवा के बिना तो नहीं रहेंगे। तो वह भी सेवा समझकर करो। अपने मन से नहीं बंधो लेकिन डॉयरेक्शन से पिछला हिसाब-किताब चुक्तू कर रहे

हैं। मजबूरी से नहीं, प्यार से करो। फंसो भी नहीं और मजबूर भी न हो। हंस-हंस के काम करो, जैसे खेल कर रहे हैं। बिजनेस करो, दफ्तर का काम करो लेकिन खेल-खेल में करो। तो खेल में मजा आता है ना। खेल में थकते नहीं हैं। तो यह भी एक खेल कर रहे हैं - ऐसी अवस्था सदा रहे। सदा यही याद रखना कि हमें स्वयं बाप ने कोटो में से कोई को चुना है। बाप ने ढूंढ़ा और अपना बना लिया - इसी नशे वा खुशी में हर कार्य करते सफलतामूर्त बनते चलो। यही स्मृति वरदान रुप बन जायेगी, शक्तिशाली बना देगी।

सदा अतीन्द्रिय सुख में रहते हो? अतीन्दिय सुख अर्थात् आत्मिक सुख। इंद्रियों का सुख नहीं लेकिन आत्मिक सुख। आत्मा अविनाशी है तो आत्मिक सुख भी अविनाशी होगा। इंदियां खुद ही विनाशी हैं तो सुख भी विनाशी होगा। कोई भी विनाशी यानी थोड़े समय का सुख नहीं चाहते हैं। अगर किसी को भी कहो - २ घंटे का सुख ले लो और २२ घंटे का दु:ख ले लो तो कौन मानेगा। यही सोचेगा कि सदा सुख हो, दु:ख का नाम-निशान न हो। तो अतीन्द्रिय सुख अविनाशी है। इंद्रियों के सुख के अनुभवी भी हो और अतीन्द्रिय सुख के अनुभवी भी हो। तो क्या अच्छा लगता है? अतीन्द्रिय सुख अच्छा या इंद्रियों का सुख अच्छा? तो अच्छी चीज का कभी छोड़ा नहीं जाता, भूला नहीं जाता, भूलना चाहें तो भी नहीं भूलेंगे। तो सदा अतीन्द्रिय सुख में रहने वालों के पास दु:ख का नाम-निशान नहीं आ सकता, असंभव। कई कहते हैं मेरे को दु:ख नहीं होता लेकिन दूसरा दु:ख देता है तो क्या करें? दूसरा देता है तो लेते क्यों हो? कोई भी चीज आपको दे और आप नहीं लो तो वह किसके पास रहेगी? उसके पास ही रहेगी ना। देने वाले तो देंगे, उनके पास है ही दु:ख लेकिन आप नहीं लो। आपका स्लोगन है - ''सुख दो, सुख लो। न दु:ख दो, न दु:ख लो।'' लेकिन गलती कर देते हो। इसलिए थोड़ी दु:ख की लहर आ जाती है। कोई दु:ख दे तो उसे भी परिवर्तन कर उसको सुख दे दो, उसको भी सुखी बना दो। सुखदाता के बच्चे हो, सुख देना और सुखी रहना - यही आपका काम है। अच्छा!

<u>अहमदाबाद हॉस्टल की कुमारियों से</u>

कुमारियों का लक्ष्य क्या है? ब्रह्माकुमारी बनेंगी या इंजीनियर, डॉक्टर बनेंगी? टोकरी उठानी है या ताज पहनना है? सिर पर या तो आयेगी टोकरी या आयेगा ताज। ताज है विश्व-सेवा वा बेहद सेवा का। तो जो कॉलेज में पढ़ती हैं उन्हों का लक्ष्य क्या है? बेहद की सेवा करेंगी या दूसरों को देख करके दिल होगी कि एक-दो साल नौकरी भी करके देखें, पीछे छोड़ देंगे। नौकरी क्या होती है, थोड़ा यह भी देख लें। फिर टोकरी उतार देंगे, ताज पहन लेंगे - ऐसा तो नहीं सोचती हो? ताजधारी तो सदा श्रेष्ठ होते हैं, टोकरी वाले को श्रेष्ठ नहीं कहेंगे। वह तो मजबूरी से टोकरी उठाते हैं। कोई नौकरी करते हैं तो जरुर कोई मजबूरी होगी - या तो मन की मजबूरी या सम्बंधियों की मजबूरी। या तो मौज है या तो मजबूरी है - दोनों में से एक तो है। क्योंकि समय कम है और समय अचानक ही आना है, बताकर नहीं आयेगा। इसलिए कहते हैं जो करना है वह अब करो, कल नहीं, परसों नहीं, साल के बाद नहीं। करना है तो अब। हां, कोई सरकमस्टांस है और जो निमित्त बने हुए हैं, उन्हों के डॉयरेक्शन से करते हैं तो फिर आपकी जिम्मेवारी नहीं। तो कुमारियां क्या सोचती हो? हॉस्टल में क्यों रहती हो? घर में भी तो पढ़ाई पढ़ सकती हो, सेंटर में भी आ सकती हो, फिर हॉस्टल में क्यों रहती हो? माँ-बाप याद नहीं आते? कभी-कभी याद आते हैं। जब बड़ा दिन होता होगा तब याद आते होंगे। अच्छा!

बीमारी के टाइम पह मां-बाप याद आते हैं? पक्की हो? अपने दिल से गई हो, कोई के कहने से तो नहीं गई हो ना। अच्छा है यह भी ड्रामा में लक्की कुमारियां हो गई जो बचपन से श्रेष्ठ संग मिला है। फिर भी हिम्मत रखी है तो हिम्मत वालों को फल भी मिलता है। मातायें भी कुमारियों को देखकर खुश होती हैं ना! मातायें सोचती हैं - हम भी इतने जीवन में आते तो अच्छा होता। लेकिन सबका एक जैसा पार्ट तो हो नहीं सकता। वैराइटी चाहिए। सर्व का पिता है तो कुमार भी चाहिएं, कुमारियां भी चाहिएं, अधरकुमार - अधरकुमारियां भी चाहिएं - सर्व सैम्पल चाहिएं। पांडव यह तो नहीं सोचते कि अगर कुमारी होते तो टीचर बन जाते, सेंटर मिल जाता। हर एक के पार्ट की अपनी-अपनी विशेषता है, हर एक की विशेषता अलग और महान् है। एक-दो के पार्ट को देखकर खुश रहो। अपने पार्ट को कम नहीं समझो। सबका पार्ट अच्छे-ते-अच्छा है। अच्छा!

<u>पंजाब ग्रुप</u>

सदा अपने को संगमयुगी बेपरवाह बादशाह हूँ - ऐसे समझते हो? पुरानी दुनिया की कोई परवाह नहीं। सदा दिल में ब्रह्मा बाबा समान क्या गीत गाते हो? परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले की, वह तो पा लिया, अभी क्या परवाह! तो बेपरवाह बादशाह हो गुलाम नहीं। इस बादशाही जैसी और कोई बादशाही नहीं। क्योंकि यह बादशाही डॉयरेक्ट बाप ने दी है। और जो भी बादशाही मिलती है वह या तो धन दान करने से मिलती है या आजकल के वोटों से मिलती है और आपको स्वयं बाप ने राजतिलक दे दिया। इस राजतिलक के आगे सतयुग का राजतिलक भी कोई बड़ी बात नहीं। तो यह राजतिलक पक्का लगा हुआ है या मिट जाता है? अभी-अभी राजा और अभी-अभी गुलाम - ऐसा खेल तो नहीं करते हो? बेपरवाह बादशाह - यह कितनी अच्छी स्थिति है! जब सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया तो परवाह किसको होगी - बाप को या आपको? बाप जाने। जब अपने जीवन की जिम्मेवारी बाप के हवाले की है तो बाप जाने। ऐसे तो नहीं - थोड़ा-थोड़ा कहीं अपनी अथॉर्टी को छिपाकर रखा हो, मनमत को छिपाकर रखा

हो। अगर श्रीमत पर हैं तो बाप के हवाले हैं। सच्ची दिल से बाप के हवाले सब-कुछ कर दिया तो उसकी निशानी सदा डबल लाईट होंगे, कोई बोझ नहीं होगा। अगर किसी भी प्रकार का बोझ है तो इससे सिद्ध है कि बाप के हवाले नहीं किया। जब बाप ऑफर करता है कि सब बोझ मेरे को दे दो और तुम हल्के हो जाओ, तो क्या करना चाहिए? ऐसा सर्वेन्ट फिर नहीं मिलेगा। अनेक जन्म बोझ रखकर देख लिया, बोझ से क्या हुआ? नीचे ही होते गये। अब डबल लाइट बन उड़ते रहो। तन-मन-धन सब ट्रांस्फर कर दो। कोई कहते हैं - और कोई बोझ नहीं है लेकिन थोड़ा-थोड़ा सम्बंध का बोझ है। तो सर्वसम्बन्ध बाप से नहीं जोड़ा है तब बोझ है। वायदा है सर्व सम्बंध एक बाप से। तो कोई बोझ नहीं। आराम से दाल-रोटी खाओ और उड़ती कला में उड़ो। कहां भी रहते बाप को भोग लगाकर खाते हो तो ब्रह्मा भोजन खाते हो। ब्रह्माभोजन खाओ, खूब नाचो और मौज मनाओ। अभी मौज में नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे! अच्छा!

बोम्बे ग्रुप से

सभी अपने पुरुषार्थ की रफ्तार को जानते हो? मैं कौन हूँ और क्या हूँ - यह दोनों ही बातें जानते हो ना! तो समय की रफ्तार प्रमाण अपने पुरुषार्थ की रफ्तार क्या समझते हो? समय की रफ्तार तीव्र है या आपकी? समय रचना है और आप रचता हो। तो रचना की रफ्तार तेज और रचना की रफ्तार ढीली है तो उसे क्या कहेंगे? समय को जानने वाले भी आप हो और समय को जानकर वर्णन भी आप ही कर रहे हो। वह तो चलता रहेगा। आप तो वर्णन करते हो कि अभी कलियुग को बदलकर सतयुग लायेंगे, तो चलाने वाला ढीला और चलने वाला तेज! तो सदा इस स्मृति में रहो कि मैं मास्टर रचयिता हूँ, इससे रफ्तार तेज हो जायेगी। चल रहे हैं, समय जैसा है वैसा कर रहे हैं - ऐसे नहीं। यह तो समय के दास कहेंगे। आप कहेंगे - हम समय को चला रहे हैं। समय को बदलने के निमित्त आप हो ना, यह ठेका उठाया है ना? तो पुरुषार्थ में तीव्रगति का आधार क्या है? डबल लाइट बनना। बिना डबल लाइट बने तीव्रगति नहीं हो सकती और डबल लाइट बनने के लिए एक शब्द याद रखो - ''मेरा बाबा'', बस। कोई भी बात आ जाए, हिमालय पहाड़ से भी बड़ी हो लेकिन बाबा कहा और पहाड़ रुई बन जायेगा। राई भी नहीं, रुई। राई भी थोड़ी मजबूत कड़क होती है और रुई बहुत नर्म और हल्की होती है। तो कितना भी बड़ा पहाड़ रुई बन जायेगा। दुनिया वाले देखेंगे तो कहेंगे - यह कैसे होगा और आप कहेंगे - यह ऐसे होगा। बुद्धि में ''बाबा'' कहा और टच होगा कि यह ऐसे होगा। हर बात सहज लगेगी, कयोंकि सहज योगी जीवन है। जिसकी जीवन ही सहज है उसके सामने कोई भी बात आयेगी तो सहज हो जायेगा। मुश्किल के दिन खत्म हो गये। न ब्राह्मण-जीवन में मुश्किल शब्द हे, न देवता-जीवन में। इसलिए बाप की महिमा में कहते हो - मुश्किल को सहज बनाने वाले, तो जो बाप की महिमा वह आपकी भी महिमा है। अच्छा! धुलिया वाले अभी-अभी पहुँचे हैं।(बस खराब हो गई थी इसलिए लेट आये हैं) अच्छा! धुलिया वालों के पाप धुल गये। जितना समय लेट हुए उतना समय बाबा-बाबा ही याद था ना! तो पाप धो गये, तो भी पिछला रहा होगा वह धो गया। आप तो खुश थे। दु:ख की लहर तो नहीं आई? ऐसे टाइम पर अचल रहे, इसलिए पाप धुलाई हो गये। अभी सदा ही मौज में चलते उड़ते रहेंगे। अच्छा!

9-12-89 अव्यक्त बापदादा

योगयुक्त, युक्तियुक्त बनने की युक्ति

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :-

आज बापदादा अपने सर्व बच्चों में से विशेष दो प्रकार के बच्चे देख रहे हैं। एक हैं सदा योगयुक्त और हर कर्म में युक्तियुक्त। दूसरे योगी हैं लेकिन सदा योगयुक्त नहीं हैं और सदा हर कर्म में स्वत: युक्तियुक्त नहीं। मन्सा वा बोल, कर्म - तीनों में से कभी किसमें, कभी किसमें युक्तियुक्त नहीं। वैसे ब्राह्मण-जीवन अर्थात् स्वत: योगयुक्त और सदा युक्तियुक्त। ब्राह्मण-जीवन की अलौकिकता वा विशेषता वा न्यारा और प्यारापन यही है - ''योगयुक्त'' और ''युक्तियुक्त''। लेकिन कोई बच्चे इस विशेषता में सहज और नैचुरल चल रहे हैं और कोई अटेन्शन भी रखते हैं, फिर भी सदा दोनों बातों का अनुभव नहीं कर सकते। इसका कारण क्या? नॉलेज तो सभी को है और लक्ष्य भी सभी का एक यही है। फिर भी कोई लक्ष्य के आधार से इन दोनों लक्ष्य अर्थात् योगयुक्त और युक्तियुक्त स्थिति की अनुभूति के समीप हैं और कोई कभी फास्ट पुरुषार्थ से समीप आते लेकिन कभी समीप और कभी चलते-चलते कोई न कोई कारणवश रुक जाते हैं। इसलिए सदा लक्षण के समीप अनुभूति नहीं करते। सर्व ब्राह्मण आत्माओं में से इस श्रेष्ठ लक्ष्य तक नंबरवन समीप कौन? ब्रह्मा बाप। क्या विधि अपनाई जो इस सिद्धि को प्राप्त किया? सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को ''सारथी'' और ''साक्षी'' समझ चलना।

आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस रथ के सारथी हो। रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हो। यह स्मृति स्वत: ही इस रथ अथवा देह से न्यारा बना देती है, किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देती है। देहभान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वत: ही हो जाते हैं। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने कंट्रोल में रहती हैं अर्थात् सर्व कर्मे-

न्द्रियों को सदा लक्ष्य और लक्षण की मंजिल के समीप लाने की कंट्रोलिंग पावर आ जाती है। स्वयं ''सारथी'' किसी भी कर्मेन्द्रिय के वश नहीं हो सकता। क्योंकि माया जब किसी के ऊपर भी वार करती है तो माया के वार करने की विधि यही होती है कि कोई-न-कोई स्थूल कर्मेन्द्रियों अथवा सूक्ष्म शक्तियां - ''मन-बुद्धि-संस्कार'' के परवश बना देती है। आप सारथी आत्माओं को जो महामंत्र, वशीकरण मंत्र बाप से आपको मिला हुआ है उसको परिवर्तन कर वशीकरण के बजाय वशीभूत बना देती है। और एक बात में भी वशीभूत हुए तो सभी भूत प्रवेश हो जाते हैं। क्योंकि इन भूतों की भी आपस में बहुत युनिटी है। एक भूत आया अर्थात् सभी को आह्वान करेगा। फिर क्या होता है? यह भूत सारथी से स्वार्थी बना देते हैं। और आप क्या करते हो? जब सारथीपन की स्मृति में आते हो तो भूतों को भगाने की युद्ध करते हो। युद्ध की स्थिति को योगयुक्त-स्थिति नहीं कहेंगे। इसलिए योगयुक्त वा युक्तियुक्त मंजिल के समीप जाने की बजाय रुक जाते हो और पहला नंबर स्थिति से दूसरे नंबर में आ जाते हो। सारथी आर्थात् वश होने वाले नहीं लेकिन वश कर चलाने वाले। तो आप सब कौन हो? सारथी हो ना!

सारथी अर्थात् आत्मा-अभिमानी। क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नंबरवन की सिद्धि प्राप्त की। इसलिए बाप भी इस का सारथी बना। सारथी बनने का यादगार बाप ने करके दिखाया। फॉलो फॉदर करो। सारथी बन सदा सारथी-जीवन में अति न्यारी और प्यारी स्थिति का अनुभव कराया। क्योंकि देह को अधीन कर बाप प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं बनते। इसलिए न्यारा और प्यारा है। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। चलते-फरते यह चेक करो कि मैं सारथी अर्थात् सर्व को चलाने वाली न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ। बीच-बीच में यह चेक करो। ऐसे नहीं कि सारा दिन बीत जाए फिर रात को चेक करो। सारा दिन बीत गया तो बीता हुआ समय सदा के लए कमाई से गया। इस-लिए गँवा करके होश में नहीं आना। यह स्वत: नैचुरल संस्कार बनाओ। कौनसा? चेकिंग का। जैसे किसी के कोई पुराने संस्कार इस ब्राह्मण-जीवन में अभी भी आगे बढ़ने में विघ्न रुप बन जाते हैं तो कहते हो ना कि न चाहते भी संस्कारों के वश हो जाते हैं। जो नहीं करना चाहते हो वह कर लेते हो। जब उल्टे संस्कार न चाहते कोई भी कर्म करा लेते हैं तो यह नैचुरल चेकिंग का शुद्ध संस्कार अपना नहीं सकते हो? बिना मेहनत के चेकिंग के शुद्ध संस्कार स्वत: ही कार्य कराते रहेंगे। यह नहीं कहेंगे कि भूल जाते हैं या बहुत बिजी रहते हैं। अशुद्ध अथवा व्यर्थ संस्कार हैं। कई बच्चों में अशुद्ध संस्कार नहीं तो व्यर्थ संस्कार भी हैं। यह अशुद्ध, व्यर्थ संस्कार भुलाते भी नहीं भूल सकते हो और यही कहते हो कि मेरा भाव नहीं था लेकिन मेरा यह पुराना स्वभाव है वा संस्कार है। तो अशुद्ध नहीं भूलता फिर शुद्ध संस्कार कैसे भूल जाता है? तो सारथीपन की स्थिति स्वत: ही स्वउन्नति के शुद्ध संस्कार इमर्ज करती है और नैचुरल समय प्रमाण सहज चेकिंग होती रहेगी। अशुद्ध आदत से मजबूर हो जाते हो और इस आदत से मजबूत हो जायेंगे। तो सुना सदा योगयुक्त-युक्तियुक्त रहने की विधि क्या हुई? सारथी बन चलना। सारथी स्वत: ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे। साक्षी बन देखने, सोचने, करने सब में सब-कुछ करते भी निर्लेप रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे। तो पाठ पक्का किया ना। ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले हो ना। ब्रह्मा बाप से बहुत प्यार है ना। प्यार की निशानी है ''समान बनना'' अर्थात् फॉलो करना।

सभी टीचर्स का बाप से कितना प्यार है! बाप सदा टीचर्स को अपने सेवा के समीप साथी समझते हैं। तो पहले फॉलो टीचर्स करेंगी ना! इसमें सदा यही लक्ष्य रखो कि ''पहले मैं''। ईर्ष्या में पहले मैं नहीं, वह नुक्शान करती है। शब्द वही है ''पहले मैं'' लेकिन एक है ईर्ष्यावश पहले मैं। तो इससे पहले के बजाय कहां लास्ट पहुंच जाता, फर्स्ट से लास्ट आ जाता और फॉलो फॉदर में ''पहले मैं'' कहा और किया तो फर्स्ट के साथ में आप भी फर्स्ट हो जायेंगे। ब्रह्मा फर्स्ट हैं ना! तो सदा यह लक्ष्य रखो कि टीचर्स अर्थात् फॉलो फॉदर और नंबरवन फॉलो फॉदर। जैसे ब्रह्मा नंबरवन बना तो फॉलो करने वाले भी नंबरवन का लक्ष्य रखो। टीचर्स सभी ऐसे पक्की हैं ना, हिम्मत है फॉलो करने की? क्योंकि टीचर्स अर्थात् निमित्त बनने वाली, अनेक आत्माओं के निमित्त हो। तो निमित्त बनने वालों के ऊपर कितनी जिम्मेवारी है! जैसे ब्रह्मा बाप निमित्त रहे ना। तो ब्रह्मा बाप को देखकर के कितने ब्राह्मण तैयार हुये! ऐसे ही टीचर्स कोई भी कार्य करती हो - चाहे खाना बना रही हो, चाहे सफाई कर रही हो लेकिन हर कर्म करते यह स्मृति रहे कि मैं निमित्त हूँ - अनेक आत्माओं के प्रति, ''जो'' और ''जैसा'' मैं करुंगी - मुझ निमित्त आत्मा को देख और भी करेंगे। इसलिए बाप-दादा सदैवा कहते हैं एक तरफ है भाषण करना और दूसरे तरफ है बर्तन मांजना। दोनों ही काम में योगयुक्त, युक्तियुक्त। काम कैसा भी हो लेकिन स्थिति सदा ही योगयुक्त और युक्तियुक्त हो। ऐसे नहीं भाषण कर रहे हैं तब तो योगयुक्त रहें और बर्तन मांजना अर्थात् साधारण काम कर रहे हैं तो स्थिति भी साधारण हो जाए। हर समय फॉलो फॉदर। सुना!

आगे बैठती हो ना तो बैठने में आगे कितना अच्छा लगता है। और सदा आगे बढ़ने में कितना अच्छा लगेगा! जब भी कोई ऐसा कड़ा संस्कार पीछे करने की कोशिश करे तो यह सीन याद करना। जब आगे बैठना अच्छा लगता तो आगे बढ़ने में क्यों पीछे रहे? मधुबन में पहुँच जाना और अपने को हिम्मत उमंग में लाना। क्योंकि पीछे रहने वाले तो बहुत आयेंगे पीछे, आप लोग भी पीछे रह जायेंगे तो फिर पीछे वालों को आगे करना पड़ेगा। इसलिए सदा यही स्मृति रखो कि हम आगे रहने वाले हैं। पीछे रहना अर्थात् प्रजा

बनना। प्रजा तो नहीं बनना है ना! प्रजा योगी तो नहीं, राजयोगी हो ना! तो फॉलो फॉदर। अच्छा!

फॉरेनर्स क्या करेंगे? फॉलो फॉदर करेंगे ना! कहां तक पहुंचेंगे? सभी फ्रंट में आयेंगे। जो भी आये हैं, फॉलो फॉदर कर फास्ट और फर्स्ट आना। यह नहीं सोचो कि फर्स्ट तो एक ही आयेगा लेकिन फर्स्ट-ग्रेड तो बहुत होंगे ना। फर्स्ट नंबर तो ब्रह्मा आयेगा लेकिन फर्स्ट-ग्रेड में तो साथी रहेंगे। इसलिए फर्स्ट में आना। एक फर्स्ट नहीं होगा, फर्स्ट-ग्रेड वाले बहुत होंगे। इसलिए यह नहीं सोचो - पहला नंबर तो फाइनल हो गया, इसलिए सेकण्ड ही आयेंगे, सेकण्ड ही आयेंगे, सेकण्ड-ग्रेड में नहीं जाना। जो ओटे सो अव्वल अर्जुन। अव्वल नंबर माना अर्जुन। सबको फर्स्ट में आने का चांस है, सब आ सकते हैं। फर्स्ट-ग्रेड बेहद है, कम नहीं है। तो सभी फर्स्ट में आयेंगे ना, पक्का है? अच्छा!

सदा ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले, सदा स्वत: योगयुक्त-युक्तियुक्त रहने वाले, सदा सारथी बन कर्मेन्द्रियों को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने वाले, सदा मंजिल के समीप रहने वाले, ऐसे सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

<u>इन्दौर ज़ोन ग्रुप</u>

बापदादा की श्रेष्ठ मत ने श्रेष्ठ गति को प्राप्त करा लिया - ऐसा अनुभव करते हो ना! जैसी मति वैसी गति होती है। तो बाप की श्रेष्ठ मत है तो गति भी श्रेष्ठ होगी ना! कहते हैं कि जैसी अन्त मते वैसी गते ... यह क्यों गाया हुआ है? क्योंकि बाप चक्र के अंत में ही आकर श्रेष्ठ मत देता है। तो अंत समय पर श्रेष्ठ मत लेते हो और अनेक जन्म सद्गति को प्राप्त करते हो। इस समय बेहद की ''अंत मते सो गते'' श्रेष्ठ हो जाती है। तो इस समय का ही यादगार भक्ति में चला आता है। एक जन्म की श्रेष्ठ मत से कितने जन्म तक श्रेष्ठ गति प्राप्त करते हो! सब यादगार इस संगमयुग के ही हैं। यादगार क्यों बने? क्योंकि इस समय याद में रहकर कर्म करते हो। हर कर्म का यादगार बन गया। आप अमृतवेले विधिपूर्वक उठते हो। तो देखो, आपके यादगार चित्रों में भी विधिपूर्वक उठाते हैं, कितना प्यार से उठाते हैं। हैं जड़ चित्र लेकिन कितने दिल से, स्नेह से उठाते हैं! उठाते भी हैं तो खिलाते , सुलाते भी हैं क्योंकि आप इस समय सब याद के विधिपूर्वक करते हो। खाना भी विधिपूर्वक खाते हो। भोग लगाकर खाते हो ना या जैसे हैं वैसे ही खा लेते हो? ऐसे तो नहीं - किसी को खाना देना है, इसलिए जल्दी-जल्दी में भोग नहीं लगाया। अगर किसको देना भी है, कोई मजबूरी है - तो भी पहले अलग हिस्सा जरुर निकालो। ऐसे नहीं - किसी को खिलाकर पीछे भोग लगाओ। विधिपूर्वक खाने से सिद्धि प्राप्त होती है, खुशी होती है, निरंतर याद सहज रहती है।

तो अमृतवेले से लेकर रात तक जो भी कर्म करो, याद के विधिपूर्वक करो। तब हर कर्म की सिद्धि मिलेगी। सिद्धि अर्थात् प्रत्यक्ष-फल प्राप्त होता रहेगा। सबसे बड़े-ते-बड़ी सिद्धि है - प्रत्यक्षफल के रुप में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होना। सदा सुख की लहरों में, खुशी की लहरों में लहराते रहेंगे। पहले प्रत्यक्षफल मिलता है, फिर भविष्य फल मिलता है। इस समय का प्रत्यक्षफल अनेक भविष्य जन्मों के फल से श्रेष्ठ है। अगर अभी प्रत्यक्षफल नहीं खाया तो सारे कल्प में कभी भी प्रत्यक्षफल नहीं मिलेगा। अभी-अभी किया, अभी-अभी मिला - इसको कहते हैं प्रत्यक्षफल। सतयुग में भी जो फल मिलेगा वह इस जन्म का मिलेगा, दूसरे जन्म का नहीं। लेकिन यहां जो मिलता है वह प्रत्यक्षफल अर्थात् अभी-अभी का फल है। तो प्रत्यक्षफल से वंचित नहीं रहना, सदा फल खाते रहना। यह प्रत्यक्षफल अच्छा लगता है ना! ऐसा भाग्य कभी सोचा था? भगवान द्वारा फल मिलेगा - यह तो स्वप्न में भी नहीं था! तो जो बात ख्याल-ख्वाब में नहीं हो और वो हो जाए तो कितनी खुशी होती है! आजकल की अल्पकाल की लॉटरी आती है, तो भी कितनी खुशी होती है! और यह प्रत्यक्षफल सो भविष्य फल हो जाता है। तो नशा रहता है ना, कभी कम कभी ज्यादा तो नहीं? सदा एकरस स्थिति में उड़ते चलो। सेकण्ड में उड़ना सीख गये हो ना या ज्यादा समय लगता है? संकल्प किया और पहुंचे - इतनी फास्ट गति है? अच्छा!

इंदौर ज़ोन वाले सभी संतुष्ट हो ना, मातायें सदा संतुष्ट हो? कभी परिवार में भी लौकिक द्वारा असंतुष्ट नहीं होती? कभी तंग होती हो? कभी चंचल बच्चों से तंग होती हो? तंग कभी नहीं होना, जितना आप तंग होंगे उतना वह ज्यादा तंग करेंगे। इसलिए ट्रस्टी बनकर, सेवाधारी बनकर सेवा करो। मेरापन आता है तो तंग होते हो। मेरा बच्चा और ऐसे करता है! तो जहां मेरापन होता है वहां तंग होते और जहां तेरा-तेरा आया तो तैरने लगते। तो तैरने वाले हो! सदा तेरा माना स्वमान में रहना। मेरा-मेरा कहना माना अभि-मान आना, तेरा-तेरा मानना माना स्वमान में रहना। तो सदा स्वमान में रहने वाले अर्थात् तेरा मानने वाले - यही याद रखना। अच्छा!

डबल फॉरेनर्स भी सिकीलधे हैं। थोड़े हैं। कितनी खुशी रहती है, उसका वर्णन कर सकते हो? बेहद का बाप है तो प्राप्ति भी बेहद की है, इसलिए हद की गिनती कर नहीं सकते। बापदादा तो डबल विदेशी बच्चों को तीव्र पुरुषार्थी की रफ्तार से देख खुश होते हैं। भारतवासी तो भारत की बातों को जानते हैं। लेकिन यह लोग न जानते भी इतने समीप तीव्र पुरुषार्थी बने, तो कमाल की ना! तो डबल लक्की हो गये। और भारतवासियों को क्या नशा है कि हम ही हर कल्प में अविनाशी भारतवासी बनेंगे। यह नशा है ना - अविनाशी खण्ड भारत है। हरेक का अपना-अपना नशा है। सभी को भारत में ही आना पड़ेगा ना और आप बैठे ही भारत में हो।

अच्छा! सभी को याद।

दिव्य ब्राह्मण जन्म के भाग्य की रेखाएँ

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :-

आज विश्व रचयिता बापदादा अपने विश्व की सर्व मनुष्य-आत्माओं रुपी बच्चों को देख रहे हैं। सर्व आत्माओं में अर्थात् सर्व बच्चों में दो प्रकार के बच्चे हैं। एक हैं बाप को पहचानने वाले और दूसरे हैं पुकारने वाले वा परखने के प्रयत्न करने वाले। लेकिन हैं सभी बच्चे। तो आज दोनों प्रकार के बच्चों को देख रहे थे। सर्व बच्चों में से पहचानने वाले वा प्राप्त करने वाले बच्चे बहुत थोड़े हैं और पहचान करने के प्रयत्न वाले अनेक हैं। पहचानने वाले बच्चों के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर चमक रही है। सबसे श्रेष्ठ भाग्य की लकीर है - बाप द्वारा दिव्य ब्राह्मण जन्म की। दिव्य जन्म की रेखा अति श्रेष्ठ चमक रही है। पुकारने वाले बच्चे अंजाने भी मानते यही हैं कि भगवान् ने हमें रचा है लेकिन अंजाप होने कारण दिव्य जन्म की अनुभूति नहीं कर सकते। आप भी कहते हो - हमें बापदादा ने दिव्य जन्म दिया, वह भी कहते - भगवान ने रचा, भगवान ही रचता है, भगवान ही पालनहार है। लेकिन दोनों के कहने में कितना अंतर है! आप अनुभव से, नशे से, नॉलेज से कहते हो कि हमको बापदादा, मात-पिता ने रचा अर्थात् ब्राह्मण जन्म दिया। रचता को, जन्म को, जन्मपत्री को, दिव्य जन्म की विधि और सिद्धि - सबको जानते हो। हर एक को अपना दिव्य जन्म का बर्थ-डे याद है ना? इस दिव्य जन्म की विशेषता कौनसी है? साधारण जन्मधारी आत्माएं अपना बर्थ-डे अलग मनातीं, फ्रॅन्ड्स-डे अलग मनातीं, पढाई का दिन अलग मनातीं और आप क्या कहेंगे? आपका बर्थ-डे भी वही है तो मैरेज-डे, पढ़ाई का दिन भी वही है। मदर-डे कहो, फॉदर-डे कहो, इंगेजमेंट-डे कहो - सब एक ही है। ऐसा दिव्य जन्म कब सुना? सारे कल्प में ऐसा दिन आप आत्माओं का फिर कभी भी नहीं आता। सतयुग में भी बर्थ-डे और मैरेज-डे एक ही नहीं होगा। लेकिन इस संगमयुग के इस महान् जन्म की यह विशेषता भी है और विचित्रता भी है। वैसे तो जिस दिन ब्राह्मण बने वही जन्मदिन, वही मैरेज-दिन है। क्योंकि सभी यही वायदा करते हो - एक बाप दूसरा न कोई। यह दृढ़ संकल्प पहले ही करते हो ना। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से सर्व सम्बन्ध निभाऊं - यह सबने वायदा किया ना। पांडवों ने, माताओं ने, कुमारियों ने सभी ने वायदा किया है। तो और कहां स्वप्न में भी मन नहीं जा सकता। ऐसे पक्के हो ना वा कोई साथी चाहिए? सेवा के लिए कोई विशेष साथी चाहिए? तो साथी-दिवस किसका मनायेंगे? सेवाधारी साथी का वा बाप साथी है उसका दिवस मनायेंगे? चाहे सर्विस करने वाले हैं, चाहे सर्विस लेने वाले हैं लेकिन सेवा के समय सेवा की, फिर इतने न्यारे और प्यारे बनो जो जरा भी विशेष झुकाव नहीं हो। जो सेवा में मदद करेगा वह विशेष होगा ना! चाहे भाई हो वा बहन हो, जो विशेष सेवा करता वह विशेष अधिकार भी रखेगा! तो सेवा के साक्षी बनो लेकिन साक्षी होके साथी बनो। साक्षीपन भूल जाता है तो सिर्फ साथी बनने में बाप भूल जाता है। साक्षी बन पार्ट बजाने की प्रैक्टिस करो।

हर बच्चे के मस्तक पर विशेष ४ भाग्य की लकीरें चमकती हैं। (१)दिव्य जन्म की रेखा, (२)परमात्म-पालना की रेंखा, (३)परमात्म पढ़ाई की रेखा और (४)निस्स्वार्थ सेवा की रेखा। सभी के मस्तक में चारों ही भाग्य की रेखाएं चमक रही हैं। लेकिन चमक में और सदा एकरस वृद्धि को प्राप्त करने में फर्क होने कारण चमक में अंतर दिखाई देता है। आदि से अब तक चारों ही रेखाएं सदा यथार्थ रुप से चलती रहें, वह बहुत थोडों की हैं। बीच-बीच में कोई-न-कोई बात में भाग्य की लकीर या तो खंडित होती है वा चमक कम होती है, स्पष्ट नहीं होती। जैसे हस्त-रेखाएं भी देखते हैं ना - कोई की खण्डित होती, काई की एकरस होती हैं, कोई की स्पष्ट होती हैं, कोई की स्पष्ट नहीं होती। बापदादा भी बच्चों के भाग्य की रेखा को देखते रहते हैं। दिव्य जन्म तो सभी ने लिया लेकिन दिव्य जन्म की रेखा खण्डित होती वा स्पष्ट नहीं होती। क्योंकि अपने जन्म के धर्म में अखण्ड नहीं चलता तो उनके भाग्य की लकीर खण्डित होती। धर्म क्या है, कर्म क्या है - उसको तो जानते हो ना। ऐसे ही परमात्म-पालना में तो सभी ब्राह्मण चल रहे हो। चाहे समर्पित हो, चाहे प्रकृति में हो लेकिन बाप के डॉयरेक्शन से चल रहे हो। प्रवृति वाले क्या कहेंगे? अपना कमाया हुआ खाते हो वा बाप का खाते हो? बाप का खाते हैं ना। क्योंकि अपना सब-कुछ बाप को दे दिया तो बाप का ही हुआ ना! चाहे कमाते भी हो लेकिन कमाया हुआ धन बाप के हवाले करते हो या अपने काम में लगाते हो? ट्रस्टी हो ना? ट्रसटी का अपना कुछ नहीं रहता। गृहस्थी में अपनापन होता है, ट्रस्टी अर्थात् सब बाप का है। अपने हाथ से खाना बनाते हो तो भी समझते हो ना - ब्रह्मा भोजन खा रहे हैं। पहले भोग किसको लगाते हो? बाप का अर्पण करते हो ना? अर्पण करना अर्थात् बाप का खाना। ब्रह्मा भोजन खाते हो। चाहे बच्चों के अर्थ भी लगाते हो वह भी डॉयरेक्शन अनुसार लगाते हो। जैसे समर्पित बहनें वा भाई भिन्न-भिन्न कार्य में तन-मन भी लगाते तो धन भी लगाते हैं। ऐसे प्रवृत्ति में रहने वाले भी चाहे तन लगाते चाहे धन लगाते - बाप की श्रीमत प्रमाण ही अमानत समझ कार्य में लगाते हो-ऐसे करते हो ना? अमानत में ख्यानत अथवा मनमत तो नहीं मिलाते हो ना। तो परमात्म-पालना सब ब्राह्मण आत्माओं को मिल रही है। पालना की जाती है शक्तिशाली बनाने के लिए। माता की पालना का प्रत्यक्ष रुप क्या होता? बच्चा शक्तिशाली बनता है। तो ब्रह्मा-माँ की पालना द्वारा सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बने हो। लेकिन कोई बच्चे सदा

शक्तियों को कार्य में लगाते और कोई बच्चे प्राप्त शक्तियों को अर्थात् पालना को कार्य में नहीं लगाते अर्थात् पालना को प्रैक्टि-कल में नहीं लाते। इसलिए श्रेष्ठ पालना मिलते हुए भी कमजोर रह जाते हैं और भाग्य की लकीर खण्डित हो जाती है।

ऐसे ही पढ़ाई की लकीर-पढ़ाई का एम आब्जेक्ट ही है श्रेष्ठ पद को प्राप्त करना। शिक्षक बाप पढ़ाई सबको एक ही पढ़ाता, एक ही समय पर पढ़ाता। लेकिन जो श्रेष्ठ ब्राह्मण-जीवन का वा पढ़ाई का पद अथवा नशा है वह सबको एक जैसा नहीं रहता। फरिश्ता सो देवता स्टेट्स को सदा स्मृति में नहीं रखते, इसलिए भाग्य की लकीर में अंतर पड़ जाता है।

ऐसे ही सेवा की लकीर- सेवा की विशेषता है जो ब्रह्मा बाप ने साकार रुप में अंतिम वरदान रुप में स्मृति दिलाई-निराकारी, निर्वि-कारी और निरअहंकारी। निराकारी स्थिति में स्थित होने के बिना किसी भी आत्मा को सेवा का फल नहीं दे सकते। क्योंकि आत्मा का तीर आत्मा को लगता है। स्वयं सदा इस स्थिति में स्थित नहीं हैं तो जिनकी सेवा करते वह भी सदा स्मृतिस्वरुप नहीं बन सकते। ऐसे ही निर्विकारी- कोई भी विकार का अंश अन्य आत्मा के शूद्र वंश को परिवर्तन कर ब्राह्मण वंशी नहीं बना सकता। उस आत्मा को भी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए मुहब्बत का फल सदा अनुभव नहीं कर सकते। निरअहंकारी सेवा का अर्थ ही है फलस्वरुप बन झुकना। बिना निर्माण के निर्माण अर्थात् सेवा में सफलता नहीं मिल सकती। तो निराकारी, निर्विकारी, निरअहं-कारी - इन तीनों वरदानों को सदा सेवा में प्रैक्टिकल में लाना। इसको कहते हैं अखण्ड भाग्य की रेखा। अब चारों ही भाग्य की रेखाओं को चेक करो कि अखण्ड हैं या खण्डित हैं, स्पष्ट हैं या अस्पष्ट हैं? कोटो में काई तो बन गये हैं लेकिन बनना है कोई में भी कोई। जो कोई में कोई होगा वही अब सर्व का माननीय और भविष्य में पूजयनीय बनता है। जो अखण्ड भाग्य के लकीरवान हैं उसकी निशानी है- वह अब भी सर्व ब्राह्मण-परिवार का प्यारा होगा। माननीय होने के कारण सर्व की दुआयें, श्रेष्ठ आत्माओं के भाग्य की लकीर को चमकाती रहती। तो अपने आपसे पूछो - मैं कौन? तो सुना, आज क्या देखा!

दुनिया वाले कहते हैं पालनहार है, जन्मदाता है। लेकिन जन्मदाता का परिचय ही नहीं है। और आप नशे से कह सकते हो कि जन्मदाता परमात्मा कैसे हैं, पालनहार परमात्मा कैसे हैं! ब्रह्मा-माँ की पालना भी मिल रही है और बाप की श्रेष्ठ मत पर योग्य आत्माएं बन गये। बाप बच्चे को योग्य बनाता है और माँ शक्तिशाली बनाती है। दोनों अनुभव हैं ना! अच्छा!

गीता पाठशाला वाले ज्यादा आये हैं। गीता पाठशाला वाले कौन हुए? गीता का ज्ञान सुनने वाले ''हे अर्जुन'' हैं। ''अर्जुन'' सम-झकर गीता-ज्ञान सुनते हो या ''अर्जुन'' दूसरा है। ''मैं अर्जुन हूं'' - यह समझते हो? सदैव यह अनुभव करके सुनो मैं अर्जुन हूं, मुझे विशेष भगवान गीता का ज्ञान सुना रहा है। गीता पाठशाला वाले तो सबसे नंबरवन निकल जायेंगे। इस विधि से सुनो तो आगे चले जायेंगे। टीचर्स को बिजी रहने के लिए गीता पाठशालाएं अच्छी हैं। गीता पाठशाला चक्रवर्ती भी बनाती, बिजी भी रखती। वृद्धि भी अच्छी होती है। मेहनत कम लेते हैं, मददगार ज्यादा बनते हैं। बलिहारी तो गीता पाठशाला वालों की है ना। इसलिए गांव वाले बाप को प्यारे लगते हैं। बड़े स्थानों पर माया भी बड़े रुप की आती है। गांव वालों को माया भी गांव वाली आती है। इसलिए बहुत अच्छे हो गांव वाले, ज्यादा संख्या कहां की है? लेकिन अभी तो सभी मधुबन निवासी हो।

सभी टीचर्स की परमानेंट एड्रेस कौनसी है? मधुबन है ना। वह दुकान हैं, यह घर है। ज्यादा क्या याद रहता है - घर या दुकान? कोई-कोई को दुकान ज्यादा याद रहती है। सोयेंगे तो भी दुकान याद आयेगी। आप लोग जहाँ चाहो बुद्धि को स्थित कर सकते हो। सेवाकेंद्र पर रहते भी मधुबन निवासी बन सकते और मधुबन में रहते भी सेवाधारी बन सकते हो, यह अभ्यास है ना। सेकण्ड में सोचा और स्थित हुआ, यह है टीचर्स की स्थिति की विशेषता। बुद्धि भी समर्पित है ना या सिर्फ सेवा के लिए समर्पित हो? समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जाएँ। यह विशेषता की निशानी है। बुद्धि सहित समर्पित - ऐसे हो ना या बुद्धि से आधी समर्पित हैं और शरीर से सारी हैं?

कोई-कोई टीचर्स भी चाहती हैं - योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी होने बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। ब्रह्मा बाप ने अंतिम स्टेज यही बनाई ना - बिल्कुल निरा-कारी। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे। इसलिए यह अभ्यास करो - जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो नहीं तो धोखा मिल जायेगा। ऐसे नहीं सोचो - सेवा का ही तो संकल्प आया, खराब संकल्प विकल्प तो नहीं आया। लेकिन कंट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना। कंट्रोलिंग पावर नहीं तो रुलिंग पावर आ नहीं सकती, फिर रुलर बन नहीं सकेंगे। तो अभ्यास करो। अभी से बहुत काल का अभ्यास चाहिए। इसको हल्का नहीं छोड़ो। तो सुना, टीचर्स को क्या अभ्यास करना है? तब कहेंगे - टीचर्स बाप को फॉलो करने वाली हैं। सदा ब्रह्मा बाप को सामने रखो और तीन वरदान याद रखो और फॉलो करो। यह तो सहज है ना। यह अतिंम वरदान बहुत शक्तिशाली है। इन तीन वरदानों को अगर सदा स्मृति में रखते प्रैक्टिकल में आओ तो बाप के दिलतख्त और राज्य-तख्त के अधिकारी जरुर बनेंगे। अच्छा!

सर्व बाप समान सदा नॉलेजफुल, पावरफुल बच्चों को, सदा भाग्यविधाता द्वारा श्रेष्ठ भाग्य की स्पष्ट रेखाओं वाले भाग्यवान बच्चे,

सदा बाप समान त्रिवरदान प्राप्त हुए विशेष आत्माओं को, सदा ब्राह्मण जन्म की पालना और पढाई को आगे बढ़ाने वाले - ऐसे अखण्ड भाग्यवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

महाराष्ट्र ग्रुप

सदा अपने को सर्व प्राप्तियों से भरपूर अनुभव करते हो? कभी खाली तो नहीं हो जाते? क्योंकि बाप ने इतनी प्राप्तियां कराई हैं, अगर सर्व प्राप्ति अपने में जमा करो तो कभी भी खाली नहीं हो सकते। इस जन्म की तो बात ही नहीं है लेकिन अनेक जन्म भी यहां की भरपूरता साथ रहेगी। तो जब इतना दिया है जो भविष्य में भी चलना है, तो अभी खाली कैसे होंगे? अगर बुद्धि खाली रही तो हलचल रहेगी। कोई भी चीज अगर फुल भरी नहीं होती तो उसमें हलचल होती है। तो भरपूर होने की निशानी है कि माया को आने की मार्जिन नहीं है। माया ही हिलाती है। तो माया आती है या नहीं? संकल्प में भी आती है, माया के राज्य में तो आधाकल्प अनुभव किया और अभी अपने राज्य में जा रहे हो। जब मायाजीत बनेंगे तब फिर अपना राज्य आयेगा और मायाजीत बनने का सहज साधन - सदा प्राप्तियों से भरपूर रहो। कोई एक भी प्राप्ति से वंचित नहीं रहो। सर्व प्राप्ति हो। ऐसे नहीं - यह तो है, एक बात नहीं तो कोई हर्जा नहीं। अगर जरा भी कमी होगी तो माया छोड़ेगी नहीं, उसी जगह से हिलायेगी। तो माया को आने की मार्जिन ही न हो। आ गई, फिर भगाओ तो उसमें टाइम जाता है। तो मायाजीत बने हो? यह नहीं सोचो - २ वर्ष या ३ वर्ष में हो जायेंगे। ब्राह्मणों के लिए स्लोगन है - ''अब नहीं तो कभी नहीं''। अब समय की रफ्तार के प्रमाण कोई भी समय कुछ भी हो सकता है। इसलिए तीव्र पुरुषार्थी बनो। अच्छा!

राजस्थान - सौराष्ट्र ग्रुप

स्वयं को बाप के दिलतख्तनशीन श्रेष्ठ आत्माएं अनुभव करते हो? दिलतख्त सर्वश्रेष्ठ स्थान है। जो सदा बाप के दिलतख्तनशीन रहते हैं वो सदा ही सेफ रहते हैं। सेफ्टी का स्थान ''दिलतख्त'' है। और जो भी सेफ्टी के स्थान बनाते हैं उसे कोई भी पार कर सकता है। लेकिन बाप के दिलतख्तनशीन रहने वाली आत्मा को माया पार नहीं कर सकती। तो ऐसे सेफ्टी के स्थान पर स्थित रहते हो? या कभी सेफ्टी के स्थान से बाहर आ जाते हो? जब सेफ्टी का स्थान मिल गया तो सेफ रहना चाहिए। और ऐसा स्थान तो सारे कल्प में नहीं मिलना है जहां आराम से खाओ-पियो, मौज करो और सेफ रहो। ऐसी गारंटी और कोई दे नहीं सकता। कितनी भी गवर्नमेन्ट की बड़ी अथार्टी हो लेकिन आपको गारंटी नहीं देगा कि आप सेफ रहेंगे। सिर्फ आपको सेफ्टी के लिए बंदूक वाले दे देंगे, ब्लैक कैट दे देंगे जिससे और ही जेल वाले लगते हैं, जैसे रॉयल जेल में हैं। यहां देखो तो भी ब्लैक कैट, वहां देखो तो भी ब्लैक कैट। तो यह जेल हुआ या सेफ्टी हुई? लेकिन बाप तो माया के बंधन से छुड़ा देता है, निर्भय बन जाते हैं। तो ऐसा स्थान पसंद है या कभी-कभी थोड़ा बाहर निकलने की दिल होती है? जो सदा दिलतख्तनशीन हैं वह निश्चित ही निश्चिनत हैं। जैसे कहते हैं - भावी टाली नहीं जाती, अटल होती है। ऐसे दिलतख्तनशीन आत्मा निर्भय है, निश्चिन्त हैं - यह निश्चित है, अटल है। दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। थोड़ा आकर्षण करके बाहर निकालने की कोशिश ज़रुर करेगी। जैसे सीता के लिए दिखाते हैं - लकीर से बाहर पांव निकाला तब रावण आया, नहीं तो आ नहीं सकता। तो संकल्प भी बाहर निकलने का आया तो माया आ जायेगी। अगर दिलतख्त पर हो तो आ नहीं सकती। तो सिर्फ दिलतख्त पर बैठ जाओ। इसमें मुश्किल है क्या? ऐसे कई होते हैं जिनकी आदत होती है उठने-बैठने-घूमने की, बैठ नहीं सकते। कितना भी अच्छा स्थान देकर बिठाओ, तो भी नाचते रहेंगे। लेकिन आपका वायदा क्या है? जहां बिठाओ, जो खिलाओ, जो पहनाओ, जो कराओ, वह करेंगे। यह वायदा पक्का है ना या थोड़ा अपनी मर्जी से करेंगे बाकी बाप की? बाप को तो कोई हर्जा नहीं लेकिन मेहनत आपको ही करनी पड़ेगी। बाप को बच्चों की मेहनत नहीं अच्छी लगती। मेहनत करके तो थक गये। अभी भी मेहनत करो - यह अच्छा नहीं लगता। इसलिए दिलतख्तनशीन बनो। इसी नशे में रहो। आजकल के कुर्सी का भी नशा रहता है। यह तो तख्त है। तो जहां रुहानी नशा होगा वहां दुःख की लहर नहीं आयेगी, खुशी होगी। तो सदा यह स्मृति रखो कि अब भी तख्तनशीन हैं और अनेक जन्म राज्यतख्तनशीन बनेंगे। राजस्थान को राजगद्दी पर बैठने का नशा है। लेकिन राजस्थान ने प्रजा कम बनाई है। गुजरात ने बड़ी प्रजा बनाई है। अगली बार भी राजस्थान को कहा था - अभी कुछ वृद्धि करो। चलो क्वांटिटी नहीं तो क्वालिटी लाओ, तो भी बरोबर हो जायेगा। ऐसी क्वालिटी लाओ जो राजस्थान वाले उनका नाम सुनकर समझे - हां, यह कहता तो सही है। तो या क्वांटिटी बढ़ाओ या क्वालिटी बढ़ाओ। क्या नहीं हो सकता है, ब्राह्मणों के भाग्य में सब नूंधा हुआ है, सिर्फ रिपीट करो। इसके लिए टचिंग चाहिए बुद्धि क्लीयर हो तो टच होगा और सफलता होगी। अच्छा! गुजरात वालों को भी बापदादा कहते हैं रात गुजर गई, बीत गई। तो राजा बनेंगे ना। अच्छा!

पंजाब - बनारस ग्रुप

सदा हर कर्म करते हुए अपने को कर्मयोगी आत्मा अनुभव करते हो? कोई भी कर्म करते हुए याद भूल नहीं सकती। कर्म और योग - दोनों कम्बाइन्ड हो जाएं। जैसे कोई जुड़ी हुई चीज को अलग नहीं कर सकता, ऐसे कर्मयोगी आत्माएं हो। जैसे शरीर और आत्मा का कम्बाइन्ड रुप है तो उसको जीवन वाला कहते हैं और शरीर, आत्मा से अलग हो जाए तो उसको जीवन समाप्त कहते

हैं। मो कर्मयोगी जीवन अर्थात् कर्म योग के बिना नहीं, योग कर्म के बिना नहीं। सदा कम्बाइन्ड। तो योगी जीवन वाले हो वा योग लगाने वाले हो? दो घंटा योग लगाने वाले योगी तो नहीं हो? अमृतवेले योग लगाया तो योगी हुए और कर्म में आये तो कर्म ही याद रहा - इसे योगी-जीवन नहीं कहेंगे। याद के बिना कर्म नहीं। जीवन निरंतर होता है, दो घंटे का जीवन नहीं है। जो योगी जीवन वाले हैं उनका योग स्वत: और सहज है, मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्योंकि योग टूटता ही नहीं है तो मेहनत क्या करेंगे! टूटता है तो जोड़ने की मेहनत करेंगे। ऐसा कम्बाइन्ड अनुभव करने वाले कभी माया के वश होकर क्वेश्चन नहीं करेंगे कि योग कैसे लगायें, निरंतर योग कैसे हो? याद करने वाले को कोई भी फरियाद करने की आवश्यक्ता ही नहीं। बाबा, मेरा यह काम कर देना, यह करा देना, यह संभाल लेना, इसका ताला खोल देना - यह फरियाद है। बाद में स्वत: सब कार्य सफल हो जाते हैं। याद करने वाले हो या फरियाद करने वाले हो? बाप के आगे कभी कौनसी फाइल, कभी कौनसा फाइल रखने वाले तो नहीं? फाइन बनने वाले का कोई फाइल नहीं होता। कर्मयोगी जीवन सर्व प्राप्तयों की जीवन है। कोई अप्राप्ति रह नहीं सकती। क्योंकि दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चे सदा भरपूर। दूसरों को कहते हो ना - ''योगी जीवन जी के देखो''। खुद अनुभवी हो तब तो कहते हो। अगर जीना ही है तो योगी जीवन। बापदादा को योगी जीवन वाले बच्चे अति प्रिय हैं, अति समीप हैं। अच्छा!

हैदराबाद - भोपाल ग्रुप

सदा अपने को संतुष्ट आत्मा अनुभव करते हो? क्योंकि ज्ञानी-योगी आत्मा की निशानी संतुष्टता है। जहां संतुष्टता है वहां सर्वगुण और सर्वशक्तियां हैं। कोई भी गुण वा शक्ति की अप्राप्ति होगी तो अप्राप्ति की निशानी ''असंतुष्टता'' है और प्राप्तियों की निशानी ''संतुष्टता'' है। संतुष्ट आत्मा ड्रामा के हर दृश्य को देख ''वाह-ड्रामा-वाह'' कहेगी और जो सदा संतुष्ट नहीं वह कभी तो ''वाह-वाह'' कहेगी, कभी कहेगी - हाय, यह क्या हो गया, होना नहीं चाहिए था लेकिन हो गया! तो संतुष्टता एक खान है। अखण्ड खान है, खत्म होने वाली नहीं। जितना देता जायेगा उतना ही बढ़ता जायेगा। तो आप सभी संतुष्ट आत्माएं हो ना। मरजीवा बने ही हो संतुष्ट रहने के लिए। ''इच्छा मात्रम् अविद्या'' - यह गायन किसका है? देवताओं का या ब्राह्मणों का? देवताई जीवन में तो इच्छा वा न इच्छा का सवाल ही नहीं। यहां नॉलेज है - इच्छा क्या है और निरइच्छा क्या है। तो नॉलेज होते ''इच्छा मात्रम् अविद्या'' होना इसी को ही ब्राह्मण-जीवन कहा जाता है। किस चीज की इच्छा है? जब रचयिता अपना हो गया तो रचना कहाँ जायेगी? रचयिता को अपना बना लिया है ना, अच्छी तरह से बनाया है, ढीला-ढीला तो नहीं? माताओं के लिए गायन है कि भगवान को भी रस्सी से बांध लिया। तो अच्छी तरह से बांधा है? यह है स्नेह की रस्सी। तो स्नेह की रस्सी मजबूत है ना, यह कभी टूट नहीं सकती। यह तो निमित्त मात्र दृष्टांत हैं। जहां बाप है वहां सब-कुछ है, इसलिए तो गाते हो - बाप मिला सब-कुछ मिला। जो भी मिला है वह इतना मिला है जो सर्व इच्छाएं इकट्ठी करो उनसे भी पद्मगुणा ज्यादा है, उसके आगे इच्छा क्या हुई? जैसे सूर्य के आगे दीपक। सर्व प्राप्तियों के आगे कितनी भी अच्छी इच्छा हो, वह दीपक के सामन है। इसलिए सदा संतुष्ट। क्वेश्चन ही नहीं उठता है। इच्छा उठने की तो बात छोड़ो लेकिन इच्छा होती भी है - यह क्वेश्चन भी नहीं उठ सकता। इतनी समाप्ति हो गई है, नाम-निशान नहीं। क्योंकि थोड़ा भी अगर अंश रहा तो अंश से वंश पैदा होता है। अंश-मात्र भी नहीं हो। इसीलिए देखो, रावण को जलाते भी हैं, पहले मारते हैं फिर जलाते हैं। जलाकर के फिर समाप्ति कर देते हैं। अंश-मात्र भी नहीं रहे। तो कोई अंश तो नहीं है? मोटे रुप में तो रावण के शीश खत्म हुए लेकिन सूक्ष्म में तो नहीं है ना? सुनाया था कई ऐसे कहते हैं - इच्छा तो नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। मोटे रुप में कहेंगे-इच्छा नहीं है और महीन रुप में अच्छा लगता है। तो अच्छा लगा माना बुद्धि का झुकाव होगा ना। अच्छा लगता है तो अच्छा - अच्छा होते इच्छा हो जायेगी। अच्छा लगता है तो सब अच्छा लगता है। एक चीज अच्छी क्यों लगती है या कोई एक व्यक्ति अच्छा क्यों लगे या कोई एक काम अच्छा क्यों लगे? सब अच्छा है। कई ऐसे कहते हैं कि इस आत्मा का योग अच्छा लगता है, इस आत्मा का भाषण अच्छा लगता है। लेकिन यह भी कोई अच्छा लगे, कोई अच्छा नहीं लगे - यह भी ठीक नहीं। अगर अच्छा लगता भी है तो बाप का हैं ना। बाप अच्छा लगे ना। अगर कोई भी व्यक्ति अच्छा लगा तो इच्छाओं की क्यू लग जायेगी। बाप अच्छा लगता तो अंश-मात्र में भी माया आ नहीं सकती। अगर किसी में गुण अच्छे हैं तो वह भी बाप की देन हैं। इसलिए बाप ही अच्छा लगे। तो सदा संतुष्ट रहेंगे। बाल-बच्चों को अंदर नहीं बिठ देना। अगर बाल-बच्चे भी छिपे हुए हैं तो सदा संतुष्ट नहीं रह सकते। बेहद सेवा की बात अलग है, लेकिन अपने प्रति यह होना चाहिए, यह होना चाहिए - यह हद की बातें असंतुष्ट करती हैं। बेहद के लिए जितना चाहे उतना सोचो, अपने प्रति हद की बातें नहीं सोचो। तो सभी संतुष्टमणि हो? संतुष्टमणि अर्थात् सदा रुहानियत से चमकने वाली। अच्छा!

17.12.89 अव्यक्त बापदादा

<u>सदा समर्थ कैसे बनें?</u>

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :-

आज समर्थ बाप अपने चारों ओर के मास्टर समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। एक हैं सदा समर्थ और दूसरे हैं कभी समर्थ, कभी व्यर्थ की तरफ न चाहते भी आकर्षित हो जाते। क्योंकि जहां समर्थ स्थिति है, वहां व्यर्थ हो नहीं सकता, संकल्प भी व्यर्थ नहीं उत्पन्न हो सकता। बापदादा देख रहे थे कि कई बच्चों की अब तक भी बाप के आगे फरियाद है कि कभी-कभी व्यर्थ संकल्प याद को फरियाद में बदल देते हैं, चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाते हैं। विकल्पों की स्टेज को तो मैजारिटी ने मैजारिटी समय तक समाप्त कर लिया है लेकिन व्यर्थ देखना, व्यर्थ सुनना और सोचना, व्यर्थ समय गंवाना - इसमें फुल पास नहीं हैं। क्योंकि अमृतवेले से सारे दिन की दिनचर्या में अपने मन और बुद्धि को समर्थ स्थिति में स्थित करने का प्रोग्राम सेट नहीं करते। इसलिए अपसेट हो जाते हैं। जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करेंगे तो स्वत: ही कभी अपसेट नहीं होंगे। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। आजकल की दुनिया में बड़ी पोजीशन वाले, जिन्हों को आई. पी. या वी.आई.पी. कहते हैं, वह सदा अपने कार्य की दिनचर्या को समय प्रमाण सेट करते हैं। तो आप कौन हो? वह भले वी.आई.पी. हैं लेकिन सारे विश्व में ईश्वरीय सन्तान के नाते, ब्राह्मण-जीवन के नाते आप कितनी भी वी. आगे लगा दो तो भी कम है। क्योंकि आपके आधार पर विश्व परिवर्तन होता है। आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो। बेहद के ड्रामा अंदर हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। तो कितने बड़े हुए! यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है और देह-अभिमान का नशा नीचे ले आता है। आपका आत्मिक रुहानी नशा है इसलिए नीचे नहीं ले आता, सदा ऊंची उड़ती कला की ओर ले जाता है। तो व्यर्थ तरफ आकर्षित होने का कारण है - अपने मन-बुद्धि की दिनचर्या सेट नहीं करते हो। मन को बिजी रखने की कला सम्पूर्ण रीति से सदा यूज नहीं करते हो।

दूसरी बात, बापदादा ने अमृतवेले से लेकर रात के सोने तक मन्सा-वाचा-कर्मणा और सम्बंध-सम्पर्क में कैसे चलना है वा रहना है - सबके लिए श्रीमत अर्थात् आज्ञा दी हुई है। मन्सा में क्या स्मृति में रखना है - यह हर कर्म में अपनी मन्सा स्थिति का डायरेक्शन, आज्ञा मिली हुई है। और आप सब आज्ञाकारी बच्चे हो ना वा बन रहे हो? आज्ञाकारी अर्थात् बाप के सम्बंध से बाप के फुट स्टैप लेने वाले अर्थात् कदम के ऊपर कदम रखने वाले। और दूसरा नाता है सजनियों का। तो सजनी भी क्या करती है? उनको क्या शिक्षा मिलती है? साजन के कदम ऊपर कदम चलो। तो आज्ञाकारी अर्थात् बापदादा के आज्ञा रुपी कदम पर कदम रखना। यह सहज है वा मुश्किल है? कहां कदम रखें - ठीक है वा नहीं, यह सोचने की भी जरुरत नहीं। है सहज, लेकिन सारे दिन में चलते-चलते कोई न कोई आज्ञाओं का उल्लंघन हो जाता है। बातें छोटी- छोटी होती हैं लेकिन अवज्ञा होने से थोड़ा-थोड़ा बोझ इकटठा हो जाता है। आज्ञाकारी को सर्व सम्बंधों से परमात्म-दुआयें मिलती हैं। यह नियम है। साधारण रीति भी कोई किसी मनुष्य आत्मा के डायरेक्शन प्रमाण ''हाँ जी'' कहकर के कार्य करते हैं तो जिसका कार्य करते, उसके द्वारा उसके मन से उनको दुआयें जरुर मिलती हैं। यह तो परमात्म-दुआयें हैं! परमात्म-दुआओं के कारण आज्ञाकारी आत्मा सदा डबल लाइट उड़ती कला वाली होती है। साथ-साथ आज्ञाकारी आत्मा को आज्ञा पालन करने के रिटर्न में बाप द्वारा विल पावर विशेष वरदान के रुप में, वर्से के रुप में मिलती है। बाप सब पावर्स विल में बच्चे को देते हैं, इसलिए सर्व पावर्स सहज प्राप्त हो जाती हैं। तो ऐसे विल पावर प्राप्त करने वाली आज्ञाकारी आत्मा वर्सा, वरदान और दुआयें - यह सब प्राप्तियां कर लेती हैं जिस कारण सदा खुशी में नाचते, ''वाह-वाह'' के गीत गाते उड़ते रहते हैं। क्योंकि उनका हर कर्म, उनको प्रत्यक्षफल प्राप्त कराता है। कर्म है बीज। जब बीज शक्तिशाली है तो फल भी ऐसा मिलेगा ना। तो हर कर्म का प्रत्यक्षफल बिना मेहनत के स्वत: ही प्राप्त होता है। जैसे फल की शक्ति से शरीर शक्तिशाली रहता है, ऐसे कर्म के प्रत्यक्षफल की प्राप्ति कारण आत्मा सदा समर्थ रहती है। तो सदा समर्थ रहने का दूसरा आधार है - सदा और स्वत: आज्ञाकारी बनना। ऐसी समर्थ आत्मा सदा सहज उड़ते हुए अपनी सम्पूर्ण मंजिल - ''बाप के समीप स्थिति'' को प्राप्त करती है। तो व्यर्थ तरफ आकर्षित होने का कारण है अवज्ञा। बड़ी-बड़ी अवज्ञायें नहीं करते हो, छोटी-छोटी हो जाती हौ। जैसे मुख्य पहली आज्ञा है - पवित्र बनो, कामजीत बनो। इस आज्ञा को पालन करने में मैजारिटी पास हो जाते हैं। भोली-भोली मातायें भी इसमें पास हो जाती हैं। जो बात दुनिया असंभव समझती उसमें पास हो जाते। लेकिन उनका दूसरा भाई क्रोध - उसमें कभी-कभी आधा फेल हो जाते हैं। फिर होशियार भी बहुत हैं। कई बच्चे कहते हैं - क्रोध नहीं किया लेकिन थोड़ा रोब तो दिखाना ही पड़ता है, क्रोध नहीं आता थोड़ा रोब रखता हूँ। जब असंभव को संभव कर लिया, यह तो उसका छोटा भाई है। तो इसको आज्ञा कहेंगे वा अवज्ञा?

इससे भी छोटी अवज्ञा अमृतवेले का नियम आधा पालन करते हो। उठ करके बैठ तो जाते हो लेकिन जैसे बाप की आज्ञा है, उस विधि से सिद्धि को प्राप्त करते हो? शक्तिशाली स्थिति होती है? स्वीट साइलेन्स के साथ-साथ निद्रा की साइलेन्स भी मिक्स हो जाती है। बापदादा अगर हर एक को अपने सप्ताह की टी.वी. दिखाये तो बहुत मजा देखने में आयेगा! तो आधी आज्ञा मानते हो - नेमीनाथ बनते हो लेकिन सिद्धिस्वरुप नहीं बनते हो। इसको क्या कहेंगे? ऐसी छोटी-छोटी आज्ञायें हैं। जैसे आज्ञा है - किसी भी आत्मा को न दु:ख दो, न दु:ख लो। इसमें भी दु:ख देते नहीं हो लेकिन ले तो लेते हो ना। व्यर्थ संकल्प चलने का कारण ही यह है

- व्यर्थ दु:ख लिया। सुन लिया तो दु:खी हुए। सुनी हुई बात न चाहते भी मन में चलती है - यह क्यों कहा, यह ठीक नहीं कहा, यह नहीं होना चाहिए....। व्यर्थ सुनने, देखने की आदत मन को ६३ जन्मों से है, इसलिए अभी भी उस तरफ आकर्षित हो जाते हो। छोटी-छोटी अवज्ञायें मन को भारी बना देती हैं और भारी होने के कारण ऊंची स्थिति की तरफ उड़ नहीं सकते। यह बहुत गुह्य गति है। जैसे पिछले जन्मों के पाप-कर्म बोझ के कारण आत्मा को उड़ने नहीं देते। ऐसे इस जन्म
की छोटी-छोटी अवज्ञाओं का बोझ, जैसी स्थिति चाहते हो - वह अनुभव करने नहीं देती।

ब्राह्मणों की चाल बहुत अच्छी है। बापदादा पूछते हैं - कैसे हो? तो सभी कहेंगे - बहुत अच्छे हैं, ठीक हैं। फिर जब पूछते हैं कि जैसी स्थिति होनी चाहिए वैसी है? तो चुप हो जाते हैं। इस कारण यह अवज्ञाओं का बोझ सदा समर्थ बनने नहीं देता। तो आज यही स्लोगन याद रखना - न व्यर्थ सोचो, न देखो, न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ कर्म में समय गंवाओ। आप बुराई से तो पार हो गये। अब ऐसे आज्ञाकारी चरित्र को चित्र बनाओ। इसको कहते हैं सदा समर्थ आत्मा। अचछा!

सभी टीचर्स आर्टिस्ट हो। चित्र बनाना आता है? अपना श्रेष्ठ चरित्र का चित्र बनाना आता है ना! तो बड़े-ते-बड़े चित्रकार वही हैं जो हर कदम में चरित्र का चित्र बनाते रहते हैं। इसी चरित्र का चित्र बनाने कारण ही आपके जड़ चित्र आधाकल्प चलते हैं। तो टीचर्स अर्थात् बड़े-ते-बड़े चित्रकार। अपना भी चित्र बनाते और अन्य आत्माओं को भी चित्रकार बना देते हो। औरों के भी श्रेष्ठ चरित्र बनाने के निमित्त टीचर्स हो। इसी में ही बिजी रहते हो ना। फुल बिजी रहो। एक सेकण्ड भी मन-बुद्धि को फुर्सत में रखा तो व्यर्थ संकल्प अपनी तरफ आकर्षित कर लेंगे। सुनाया ना कि सेवा का प्रत्यक्षफल सदा प्राप्त हो- यही निशानी है सदा आज्ञाकारी आत्मा की। कभी सेवा का फल प्रत्यक्ष मिलता और कभी नहीं मिलता, इसका कारण? कोई-न-कोई अवज्ञा होती है। टीचर्स अर्थात् अमृतवेले से लेकर रात तक हर आज्ञा के कदम-पर-कदम रखने वाली। ऐसी टीचर्स हो वा कभी-कभी अलबेलापन आ जाता है? अलबेला नहीं बनना। जिम्मेवारी के ताजधारी हो। कभी ताज भारी लगता है तो उतार देते हैं। आप उतारने वाले तो नहीं हो ना। सदा आज्ञाकारी माना सदा जिम्मेवारी के ताजधारी। टीचर्स तो सब हैं लेकिन इसको कहते हैं योग्य टीचर, योगी टीचर।

टीचर्स कभी कम्पलेन नहीं कर सकती। औरों को कम्पलीट करने वाली हो, कम्पलेन करने वाली नहीं। कभी ऐसे पत्र तो नहीं लिखती हो ना - क्या करें, हो गया, होना तो नहीं चाहिए। वह तो समाप्त हो गया ना। सुनाया था - पत्र लिखो जरुर, मधुबन में पत्र जरुर भेजो परंतु ''मैं सदा ओ.के. हूँ'' - बस, यह दो लाइन लिखो। पढ़ने वालों को भी टाइम नहीं। फिर कम्पलेन करते कि पत्र का उत्तर नहीं आया। वास्तव में आप सबके पत्रों का उत्तर बापदादा रोज की मुरली में देता ही है। आप लिखेंगे ओ.के. और बापदादा ओ.के. के रिटर्न में कहते - यादप्यार और नमस्ते। तो यह रेसपान्ड हुआ ना। समय को भी बचाना है ना। सेवा समाचार भी शार्ट में लिखो। तो समय की भी एकॉनामी, कागज की भी एकॉनामी, पोस्ट की भी एकॉनामी। होता? एकॉनामी क्या हो, तो सकती है, ३ पेज में भी लिखी जा सकती है। कोई को विस्तार से लिखने का डॉयरेक्शन मिलता है तो भल लिखो लेकिन दो लाइन में अपनी गलती की क्षमा ले सकते हो। छिपाओ नहीं, लेकिन शार्ट में लिखो। कितने पत्र लिखते हैं, जिनका कोई सार नहीं होता। बाप को कहो - मेरा यह काम कर ले, मेरे को ठीक कर दे, मेरा धंधा ठीक कर दे, मेरी पत्नी का ठीक कर दे .... ऐसे पत्र एक बार नहीं १० बार भेजते हैं। तो अब एकॉनामी के अवतार बनो और बनाओ। अच्छा!

सभी को यह मेला अच्छा लगता है ना। दुनिया वाले कहते दो दिन का मेला और आपका ४ दिन का मेला है। सभी को पसंद है ना यह मेला। अच्छा!

चारों ओर के सदा समर्थ आत्माओं का, सदा हर कदम में आज्ञाकारी रहने वाले आज्ञाकारी बच्चों का, सदा व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने वाले विश्व-परिवर्तक आत्माओं को, सदा अपने चरित्र के चित्रकार बच्चों को समर्थ बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

बॉम्बे - गुजरात ग्रुप

बेहद बाप के अर्थात् बेहद के मालिक के बालक हैं, ऐसे समझते हो? बालक सो मालिक होता है, इसलिए बापदादा बच्चों को ''मालेकम् सलाम'' कहते हैं। बेहद बाप के बेहद के वर्से के बालक सो मालिक हो। तो बेहद के वर्से की खुशी भी बेहद होगी ना। बाप बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं। विश्व के राज्य का अधिकारी बच्चों को बनाते हैं, खुद तो नहीं बनते। तो वर्तमान और भविष्य - दोनों अधिकार मिल गये और दोनों ही बेहद हैं! सतयुग में भी हदें तो नहीं होंगी ना - न भाषा की, न रंग की, न देश की। यहाँ तो देखो कितनी हदें हैं! बेहद के आकाश को भी हदों में बांट दिया है। वहां कोई हद नहीं होती। तो बेहद का राज्य-भाग्य हो गया। लेकिन बेहद का राज्य-भाग्य प्राप्त करने वालों को पहले इस समय अपनी देह की हद से परे जाना पड़ेगा। अगर देहभान की हद से निकले तो और सभी हद से निकल जायेंगे। इसलिए बापदादा कहते हैं - पहले देह सहित देह के सब सम्बंधों से न्यारे बनो। पहले देह फिर देह के सम्बंधी। तो इस देह के भान की हद से निकले हो? क्योंकि देह की हद कभी भी ऊपर नहीं ले जायेगी। देह मिट्टी है, मिट्टी सदा भारी होती है। कोई भी चीज मिट्टी की होगी तो भारी होगी ना। यह देह तो पुरानी मिट्टी है, इसमें फंसने से क्या मिलेगा! कुछ भी नहीं। तो सदा यह नशा रखो कि बेहद बाप और बेहद वर्से का बालक सो मालिक हूँ। जब बालक बनना है उस

समय मालिक नहीं बनो और जब मालिक बनना है उस समय बालक नहीं बनो। जब कोई राय देनी है, प्लैन सोचना है, कुछ कार्य करना है तो मालिक होकर करो लेकिन जब मैजारिटी द्वारा या निमित्त बनी आत्माओं द्वारा कोई भी बात फाइनल हो जाती है तो उस समय बालक बन जाओ, उस समय मालिक नहीं बनो। मेरा ही विचार ठीक है, मेरा ही प्लैन ठीक है - नहीं। उस समय मालिक नहीं बनो। किस समय राय बहादुर बनना है और किस समय राय मानने वाला बनना है- जिसको यह तरीका आ जाता है वह कभी नीचे-ऊपर नहीं होता। वह पुरुषार्थ और सेवा में सफल रहता है। अपने को मोल्ड कर सकता है, अपने को झुका सकता है। झुकने वाले को सदैव ही सेवा का फल मिलता है और अपने अभिमान में रहने वाले को सेवा का फल नहीं मिलता है। तो सफलता की विधि है-बालक सो मालिक, समय पर बालक बनना, समय पर मालिक बनना। यह विधि आती है? अगर छोटी-सी बात को बालक के समय मालिक बनकर सिद्ध करेंगे तो मेहनत ज्यादा और फल कम मिलेगा। और जो विधि को जानते हैं, समय प्रमाण उसको मेहनत कम और फल ज्यादा मिलता है। वह सदा मुस्कराता रहेगा। स्वयं भी खुश रहेगा और दूसरों को देखकर के भी खुश होगा। सिर्फ मैं बड़ा खुश रहता हूँ, यह नहीं। लेकिन खुश करना भी है खुश रहना भी है, तब राजा बनेंगे। अपने को मोल्ड करेंगे तो गोल्डन एज का अधिकार जरुर मिलेगा। अच्छा!

<u>दिल्ली ग्रुप</u>

बापदादा सभी बच्चों को त्रिकालदर्शी श्रेष्ठ आत्मा बनाते हैं। त्रिकालदर्शी अर्थात् पास्ट, प्रेजेंट और फ्यूचर - तीनों कालों को जानने वाले। जो तीनों कालों को जानने वाली आत्मा है वह कभी भी माया से हार नहीं खा सकती। क्योंकि वर्तमान क्या है और भविष्य में क्या होने वाला है-दोनों ही त्रिकालदर्शी आत्मा की बुद्धि में स्पष्ट रहता है-क्या हूँ और क्या बनने वाली हूँ। क्या थी-वह भी जानते हैं लेकिन नशा वर्तमान और भविष्य का है। वर्तमान समय की लिस्ट निकालो-क्या हो, तो कितनी लंबी लिस्ट होगी! कितने टाइटल बाप ने दिये! औरों को जो टाइटल मिलते हैं वह आत्माओं द्वारा आत्माओं को मिलते हैं और अल्पकाल का टाइटल होता है, एक जन्म भी चले या नहीं चले। आज प्राइम-मिनिस्टर का टाइटल मिला, कितना समय चला? आज है कल नहीं। तो अल्पकाल के टाइटल हुए ना। आपके टाइटल अविनाशी हैं क्योंकि देने वाला अविनाशी बाप है। बाप ने नूरे रत्न बनाया तो सारा कल्प जहान के नूर बन गये। अपने राज्य में भी विश्व की नजरों में होंगे ना! तो नूरे जहान हो गये ना। और भक्ति में भी नूरे जहान होंगे। सारे जहान के आगे विशेष आतमाएं तो आती है ना, तब तो पूजते हैं। तो अविनाशी हो गये। तो लिस्ट निकालो - कितने टाइटल परमात्मा द्वारा मिलते हैं। और अविनाशी टाइटल तो नशा भी अविनाशी होगा ना। जैसे कहा जाता है कि खुशी में सदा उड़ते रहते हैं। खुशी में रहने वाले के पांव सदा धरनी से ऊंचे होते हैं क्योंकि खुशी में नाचेंगे ना। तो अविनाशी टाइटल याद करने से नैचुरल उड़ते रहेंगे, इस देह रुपी धरनी पर पांव नहीं होंगे। बुद्धि है पांव। तो बुद्धि रुपी पांव खुशी से ऊपर रहेंगे, देहभान से परे रहेंगे। इसलिए बापदादा फरिश्ता कहते हैं। फरिश्ते का अर्थ ही है बुद्धि रुपी पांव धरनी पर न हो। न देह में, न देह के सम्बंध में, न देह के पुराने पदार्थो में। यह है धरनी। इससे ऊपर। ऐसे रहते हो या कभी-कभी धरनी में आने की दिल होती हैं? कभी धरनी आकर्षित तो नहीं करती? स्थूल चीजों को तो स्थूल धरनी आकर्षित करके ऊपर से नीचे ले आती है लेकिन आपको नहीं कर सकती। तो नीचे आते हो या ऊपर रहते हो? फरिश्ता कहां भी जायेगा तो वरदान देने या संदेश देने के लिए, संदेश दिया और यह उड़ा! तो अगर देहधारियों के सम्बंध में आते भी हो तो ऊपर से आये, संदेश दिया और यह उड़ा। ऐसे है ना! अच्छा!

<u>बॉम्बे ग्रुप</u>

स्वस्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हो ना! स्वस्थिति अर्थात् आत्मिक स्थिति। पर-स्थिति व्यक्ति वा प्रकृति द्वारा आती है। अगर स्वस्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे पर-स्थिति कुछ भी नहीं है। प्रकृति के भी मालिक आप हो ना! आपके परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन होता है। इस समय आप सतोप्रधान बन रहे हो तो प्रकृति भी तमो से सतो में परिवर्तन हो रही है। आप रजोगुणी बनते हो तो प्रकृति भी रजोगुणी बनती है। तो श्रेष्ठ कौन हुआ? आप हुए ना। इसलिए स्वस्थिति में स्थित रहने वाला कभी परिस्थिति से घबराता नहीं है क्योंकि पावरफुल कभी कमजोर से नहीं घबराता। व्यक्ति द्वारा भी परिस्थिति आती है। तो आजकल के व्यक्ति भी तो तमोगुणी हैं ना! आप तो सतोगुणी हो। तो तमोगुण पावरफुल नहीं, सतोगुण पावरफुल है। कई ऐसा समझते हैं - और परिस्थितियों से तो पार हो जाते हैं लेकिन जब कोई ब्राह्मण आत्मा द्वारा परिस्थिति आती है तो उसमें घबरा जाते हैं, उसमें थोड़ा ''क्या-क्यों'' में चले जाते हैं। लेकिन जिस समय कोई भी ब्राह्मण आत्मा में माया प्रवेश होती है उस समय ब्राह्मण आत्मा नहीं है, वशीभूत है। इसलिए उससे भी घबरा नहीं सकते। कोई भी ब्राह्मण आत्माएं अगर वशीभूत हैं तो वशीभूत पर रहम आता है, तरस पड़ता है। वशीभूत पर कभी जोश नहीं आता। कोई जानबूझकर कुछ करता है तो उस पर जोश आता है। तो जब ब्राह्मण आत्मा भी वशीभूत है तो रहम की भावना रखो। फिर घबरायेंगे नहीं, और ही उस आत्मा की सेवा करने लग जायेंगे। शुभभावना, शुभकामना द्वारा सेवा करेंगे। तो स्वस्थिति वाला किसी भी प्रकार की परिस्थिति से घबरा नहीं सकता क्योंकि नॉलेजफुल आत्मा हो गई। तीनों कालों की, सर्व आत्माओं की नॉलेज है। नॉलेजफुल वा त्रिकालदर्शी कभी घबरा नहीं सकते। सदा ही

किसी भी परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, परिस्थिति से आकर्षित नहीं होंगे। अगर कोई भी परिस्थिति में फेल होते हैं तो परिस्थिति की तरफ आकर्षित हो गये ना! जो हर्षित होगा वह साक्षी होकर खेल देखेगा, आकर्षित नहीं होगा। तो आप सब कौन हो? हर्षित रहने वाले या आकर्षित होने वाले? परिस्थितियां और ही महावीर बनाती हैं। क्योंकि परिस्थिति को जानते जाते हो ना! अनुभव की अथार्टी बढ़ती जायेगी। तो ऐसे महावीर हो या कभी-कभी कमजोरी का भी मजा ले लेते हो? एक बार भी कोई कम-जोरी को धारण किया तो एक कमजोरी आना माना सब कमजोरियों का आना। एक भूत आया तो सभी भूत आ जायेंगे। चाहे विशेष रुप में कोई एक भूत हो लेकिन छिपे हुए सब भूत आते हैं। इसलिए अभी भूतों से मुक्त बनो।

21.12.89 अव्यक्त बापदादा

त्रिदेव रचयिता द्वारा वरदानों की प्राप्ति

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :-

आज त्रिदेव रचयिता अपनी साकारी और आकारी रचना को देख रहे हैं। दोनों रचना अति प्रिय हैं। इसलिए रचता, रचना को देख हर्षित होते हैं। रचना सदा यह खुशी के गीत गाती कि ''वाह रचता'' और रचता सदा यह गीत गाते - ''वाह मेरी रचना''। रचना प्रिय है। जो प्रिय होता है उसको सदा सब-कुछ देकर सम्पन्न बनाते हैं। तो बाप ने हर एक श्रेष्ठ रचना को विशेष तीनों सम्बंध से कितना सम्पन्न बनाया है! बाप के सम्बंध से दाता बन ज्ञान खजाने से सम्पन्न बनाया, शिक्षक रुप से भाग्यविधाता बन अनेक जन्मों के लिए भाग्यवान् बनाया, सतगुरु के रुप में वरदाता बन बरदानों से झोली भर देते। यह है अविनाशी स्नेह वा प्यार। प्यार की विशेषता यही है - जिससे प्यार होता है उसकी कमी अच्छी नहीं लगेगी, कमी को कमाल के रुप में परिवर्तन करेंगे। बाप को बच्चों की कमी सदा कमाल के रुप में परिवर्तन करने का सदा शुभ संकल्प रहता है। प्यार में बाप को बच्चों की मेहनत देखी नहीं जाती। कोई मेहनत आवश्यक हो तो करो लेकिन ब्राह्मण-जीवन में मेहनत करने की आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि दाता, विधाता और वरदाता - तीनों सम्बंध से इतने सम्पन्न बन जाते हो जो बिना मेहनत रुहानी मौज में रह सकते हो। वर्सा भी है, पढ़ाई भी है और वरदान भी हैं। जिसको तीनों रुपों से प्राप्ति हो, ऐसे सर्व प्राप्ति वाली आत्मा को मेहनत करने की क्या आवश्यक्ता है! कभी वर्से के रुप में वा बाप को दाता के रुप में याद करो तो रुहानी अधिकारीपन का नशा रहेगा। शिक्षक के रुप में याद करो तो गॉडली स्टूडेन्ट अर्थात् भगवान के स्टूडेन्ट हैं - इस भाग्य का नशा रहेगा। सतगुरु हर कदम में वरदानों से चला रहा है। हर कर्म में श्रेष्ठ मत - वरदाता का वरदान है। जो हर कदम श्रेष्ठ मत से चलते हैं उसको हर कदम में कर्म की सफलता का वरदान सहज, स्वत: और अवश्य प्राप्त होता है। सतगुरु की मत श्रेष्ठ गति को प्राप्त कराती है। गति-सद्गति को प्राप्त कराती है। श्रेष्ठ मत और श्रेष्ठ गति। अपने स्वीट होम अर्थात् गति और स्वीट राज्य अर्थात् सद्गति - इसको तो प्राप्त करते ही हो लेकिन ब्राह्मण आत्माओं को और विशेष गति प्राप्त होती है। वह है इस समय भी श्रेष्ठ मत के श्रेष्ठ कर्म का प्रत्यक्षफल अर्थात् सफलता। यह श्रेष्ठ गति सिर्फ संगमयुग पर ही आप ब्राह्मणों को प्राप्त है। इसलिए कहते हौ - जैसी मत वैसी गत। वो लोग तो समझते हैं मरने के बाद गति मिलेगी, इसलिए अंत मति सो गति कहते हैं। लेकिन आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए इस अंतिम मरजीवा जन्म में हर कर्म की सफलता का फल अर्थात् गति प्राप्त होने का वरदान मिला हुआ है। वर्तमान और भविष्य - सदा गति-सदगति है ही है। भविष्य की इंतजार में नहीं रहते हो। संगमयुग की प्राप्ति का यही महत्व है। अभी-अभी कर्म करो और अभी-अभी प्राप्ति का अधिकार लो। इसको कहते हैं एक हाथ से दो, दूसरे हाथ से लो। कभी मिल जायेगा वा भविष्य में मिल जायेगा। यह दिलासे हा सौदा नहीं है। तुरंत दान महापुण्य, ऐसी प्राप्ति है। इसको कहते हैं झटपट का सौदा। भक्ति में इंतजार करते रहो - मिल जायेगा, मिल जायेगा ....। भक्ति में है कभी और बाप कहते हैं - अभी लो। आदि स्थापना में भी आपकी प्रसिद्धता थी कि यहां साक्षात्कार झटपट होता है। और होता भी था। तो आदि से झटपट का सौदा हुआ। इसको कहते हैं रचता का रचना से सच्चा प्यार। सारे कल्प में ऐसा प्यारा कोई हो ही नहीं सकता। कितने भी नामीग्रामी प्यारे हों लेकिन यह है अविनाशी प्यार और अविनाशी प्राप्ति। तो ऐसा प्यारा कोई हो ही नहीं सकता। इसलिए बाप को बच्चों की मेहनत पर रहम आता है। वरदानी सदा वर्से के अधिकारी कभी मेहनत नहीं कर सकते। भाग्यविधाता शक्षक के भाग्यवान् बच्चे सदा पास विद ऑनर होते हैं। न फेल होते हैं, न कोई व्यर्थ बात फील करते हैं।

मेहनत करने के कारण दो ही हैं - या तो माया के विघ्नों से फेल हो जाते वा सम्बंध-संपर्क में, चाहे ब्राह्मणों के, चाहे अज्ञानियों के - दोनों सम्बंध में कर्म में आते छोटी-सी बात में व्यर्थ फील कर देते हैं जिसको आप लोग फ्लू की बीमारी कहते हो। फ्लू क्या करता है? एक तो शेकिंग (हलचल) होती है। उसमें शरीर हिलता है और यह आत्मा की स्थिति हिलती है, मन हिलता है और मुख कडुवा हो जाता है। यहां भी मुख से कडुवे बोल बोलने लग पड़ते हैं। और क्या होता है? कभी सर्दी, कभी गर्मी चढ़ जाती है। यहां भी जब फीलिंग आती है तो अंदर जोश आता है, गर्मी चढ़ती है - इसने यह क्यों कहा, यह क्यों किया? यह जोश है। अनुभवी तो हो ना। और क्या होता है? खाना-पीना कुछ अच्छा नहीं लगता है। यहां भी कोई अच्छी ज्ञान की बात भी सुनायेंगे, तो भी उनको

अच्छी नहीं लगेगी। आखिर रिजल्ट क्या होती ? कमजोरी आ जाती है। यहां भी कुछ समय तक कमजोरी चलती है। इसलिए न फेल हों, न फील करो। बापदादा श्रेष्ठ मत देते हैं। शुद्ध फीलिंग रहे- मैं सर्वश्रेष्ठ अर्थात् कोटों में कोई आत्मा हूँ, मैं देव आत्मा, महान् आत्मा, ब्राह्मण आत्मा, विशेष पार्टधारी आत्मा हूँ। इस फीलिंग में रहने वाले को व्यर्थ फीलिंग का फ्लू नहीं होगा। इस शुद्ध फीलिंग में रहो। जहां शुद्ध फीलिंग होगी वहां अशुद्ध फीलिंग नहीं हो सकती। तो फ्लू की बीमारी से अर्थात् मेहनत से बच जायेंगे और सदा स्वयं को ऐसा अनुभव करेंगे कि हम वरदानों से पल रहे हैं, वरदानों से आगे उड़ रहे हैं, वरदानों से सेवा में सफलता पा रहे हैं।

मेहनत अच्छी लगती है वा मेहनत की आदत पक्की हो गई है ? मेहनत अच्छी लगती वा मौज में रहना अच्छा लगता है ? कोई-कोई को मेहनत के काम बगैर और कोई काम अच्छा नहीं लगता है। उनको कुर्सी पर आराम से बिठायेंगे तो भी कहेंगे हमको मेहनत का काम दो। यह तो आत्मा की मेहनत है और आत्मा ६३ जन्म मेहनत कर थक गई है। ६३ जन्म ढूंढ़ते रहे ना। किसको ढूंढ़ने में मेहनत लगती है ना। तो थके हुए पहले ही हो। ६३ जन्म मेहनत कर चुके हो। अब एक जन्म तो मौज में रहो। २१ जन्म तो भविष्य की बात है। लेकिन यह एक जन्म विशेष है। मेहनत और मौज - दोनों का अनुभव कर सकते हो। भविष्य में तो वहां यह सब बातें भूल जायेंगी। मजा तो अभी है। दूसरे मेहनत कर रहे हैं, आप मौज में हो। अच्छा !

टीचर्स ने भक्ति की है ? कितने जन्म भक्ति की है ? इस जन्म में तो नहीं की है ना ! आपकी भक्ति पहले जन्म में पूरी हो गई। कब से फिर भक्ति शुरु की ? किसके साथ शुरु की ? ब्रह्मा बाप के साथ-साथ आपने भी भक्ति की है। कौनसे मंदिर में की ? तो भक्ति की भी आदि आत्माएं हो और ज्ञान-मार्ग की भी आदि आत्माएं हो। आदि की भक्ति में अव्यभिचारी भक्ति होने कारण भक्ति का आनंद, सुख उस समय के प्रमाण कम नहीं हुआ। वह सुख और आनंद भी अपने स्थान पर श्रेष्ठ रहा।

भक्त-माला में आप हो ? जब भक्ति आपने शुरु की तो भक्त-माला में नहीं हो ? डबल फॉरेनर्स भक्त-माला में थे ? भक्त बने या भक्त-माला में थे ? अभी सब सोच रहे हैं कि हम थे वा नहीं थे ! विजय माला में भी थे, भक्त-माला में भी थे ? पुजारी तो बने लेकिन भक्त-माला में थे ? भक्त-माला अलग है। आप तो ज्ञानी सो भक्त बने। वह हैं ही भक्त। तो भक्त-माला और ज्ञानियों की माला में अंतर है। ज्ञानियों की माला है विजय माला। और जो सिर्फ भक्त हैं, ऐसे नौधा भक्त जो भक्ति के बिना और बात सुनना ही नहीं चाहते, भक्ति को ही श्रेष्ठ समझते हैं। तो भक्त-माला अलग है, ज्ञान माला अलग है। भक्ति जरुर की लेकिन भक्त-माला में नहीं कहेंगे। क्योंकि भक्ति का पार्ट बजाने के बाद आप सबको ज्ञान में आना है। वह नौधा भक्त हौ और आप नौधा ज्ञानी हो। आत्मा में संस्कारों का अंतर है। भक्त माना सदा मंगता के संस्कार होंगे। मैं नीच हूँ, बाप ऊंचा है - यह संस्कार होंगे। वह रॉयल भिखारी हैं और आप आत्माओं में अधिकारीपन के संस्कार हैं। इसलिए परिचय मिलते ही अधिकारी बन गये। समझा ? भक्तों को भी कोई जगह दो ना। दोनों में आप आयेंगे क्या ? उन्हों का भी आधाकल्प है, आपका भी आधाकल्प है। उन्हों को भी गायन-माला में आना ही है। फिर भी दुनिया वालों से तो अच्छे हैं। और तरफ तो बुद्धि नहीं है, बाप की तरफ ही है। शुद्ध तो रहते हैं। पवित्रता का फल मिलता है - ''गायन योग्य होने का''। आपकी पूजा होगी। उन्हों की पूजा नहीं होती, सिर्फ स्टेच्यु बनाके रखते हैं गायन के लिए। मीरा का कभी मंदिर नहीं होगा। देवताओं मिसल मीरा की पूजा नहीं होती, सिर्फ गायन है। अभी लास्ट जन्म में चाहे किसी को भी पूज लेवें। धरनी को भी पूजें तो वृक्ष को भी पूजें। लेकिन नियम प्रमाण उन्हों का सिर्फ गायन होता है, पूजन नहीं। आप पूज्य बनते हो। तो आप पूजनीय आत्माएं हो- यह नशा सदा स्मृति में रखो। पूज्य आत्मा कभी कोई अपवित्र संकल्प को टच भी नहीं कर सकती। ऐसे पूज्य बने हो ! अच्छा !

चारों ओर के वर्से के अधिकारी आत्माओं को, सदा पढ़ाई में पास विद् ऑनर्स होने वाले, सदा वरदानों द्वारा वरदानी बन औरों को भी वरदानी बनाने वाले - ऐसे बाप, शिक्षक और सतगुरु के प्यारे, सदा रुहानी मौज में रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पंजाब - राजस्थान ग्रुप

सदा अपने को होलीहँस अनुभव करते हो ? होलीहँस अर्थात् समर्थ और व्यर्थ को परखने वाले। वह जो हंस होते हैं वो कंकड़ और रत्न को अलग करते हैं, मोती और पत्थर को अलग करते हैं। लेकिन आप होलीहँस किसको परखने वाले हो ? समर्थ क्या है और व्यर्थ क्या है, शुद्ध क्या है और अशुद्ध क्या है। जैसे हँस कभी कंकड़ को चुग नहीं सकता - अलग करके रख देगा, छोड़ देगा, ग्रहण नहीं करेगा। ऐसे आप होलीहँस व्यर्थ को छोड़ देते हो और समर्थ संकल्प को धारण करते हो। अगर व्यर्थ आ भी जाए तो धारण नहीं करेंगे। व्यर्थ को अगर धारण किया तो होलीहँस नहीं कहेंगे। वह तो बगुला धारण करता है। व्यर्थ तो बहुत सुना, बोला, किया लेकिन उसका परिणाम क्या हुआ ? गँवाया, सब-कुछ गँवा दिया ना। तन भी गँवा देया। देवताओं के तन देखो, और अभी के तन देखो क्या हैं ? कितना अंतर है ! जवान से भी बुड्ढे अच्छे हैं। तो तन भी गँवाया, मन का सुख-शान्ति भी गँवाया, धन भी गँवाया। आपके पास कितना धन था ? अथाह धन कहां गया ? व्यर्थ में गँवा दिया। अभी जमा कर रहे हो या गँवा रहे हो ? होलीहँस गँवाने

वाला नहीं, जमा करने वाला। अभी २१ जन्म तन भी अच्छा मिलेगा और मन भी सदा खुश रहने वाला होगा। धन तो ऐसे होगा जैसे अभी मिट्टी है। अभी मिट्टी का भी मूल्य हो गया है लेकिन वहां रत्नों से तो खेलेंगे, रत्नों से मकान की सजावट होगी। तो कितना जमा कर रहे हो! जिसके पास जमा होता है उसको खुशी होती है। अगर जमा नहीं होता तो दिल छोटी होती है, जमा होता है तो दिल बड़ी होती है। अभी कितनी बड़ी दिल हो गई है! तो हर कदम में जमा का खाता बढ़ता जाता है या कभी-कभी जमा करते हो? अपना चार्ट अच्छी तरह से देखा है? ऐसे समय पर भी कभी-कभी व्यर्थ तो नहीं चला जाता? अभी तो समय की वैल्यू का पता पड़ गया है ना। संगम का एक सेकण्ड कितना बड़ा है! कहने में तो आयेगा एक-दो सेकण्ड ही तो गया लेकिन एक सेकण्ड कितना बड़ा है! यह याद रहे तो एक सेकण्ड भी नहीं गँवायेंगे। सेकण्ड गँवाना माना वर्ष गँवाना-संगम के एक सेकण्ड का इतना महत्व है! तो जमा करने वाले हैं, गँवाने वाले नहीं। क्योंकि या तो होगा गँवाना, या होगा कमाना। सारे कल्प में कमाई करने का समय अभी है। तो होलीहँस अर्थात् स्वप्न में, संकल्प में भी कभी व्यर्थ गँवायेंगे नहीं।

होली अर्थात् सदा पवित्रता की शक्ति से अपवित्रता को सेकण्ड में भगाने वाले। न केवल अपने लिए बल्कि औरों के लिए भी। क्योंकि सारे विश्व को परिवर्तन करना है ना। पवित्रता की शक्ति कितनी महान् है, यह तो जानते हो ना! पवित्रता ऐसी अग्नि है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। सम्पूर्ण पवित्रता ऐसी श्रेष्ठ शक्ति है! अंत में जब सब संपूर्ण हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प में लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। याग ज्वाला हो। अंत में ऐसे धीरे-धीरे सेवा नहीं होगी। सोचा और हुआ-इसको कहते हैं विहंग मार्ग की सेवा। अभी अपने में भर रहे हो, फिर कार्य में लगायेंगे। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह किस समय का यादगार है? अभी का है ना। तो ऐसे ज्वालामुखी बनो। आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! तो अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव-सब-कुछ भस्म करो। अपने तो कर लिये हैं ना या अपने भी कर रहे हो? अच्छा!

पंजाब वाले निर्भय तो बन गये। डरने वाले तो नहीं हो न? ज्वालामुखी हो, डरना क्यों? मरे तो पड़े ही हो, फिर डरना किससे? और राजस्थान को तो ''राज्य-अधिकारी'' कभी भूलना नहीं चाहिए। राज्य भूल करके राजस्थान की रेती तो याद नहीं आ जाती ? वहां रेत बहुत होती है ना! तो सदा नये राज्य की स्मृति रहे। सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा। अभी तो व्यक्तियों को ही संदेश नहीं पहुँचा है, प्रकृति की तो बात पीछे है। तो स्पीड तेज करो। गली-गली में सेंटर हों। क्योंकि सरकमस्टांस प्रमाण एक गली से दूसरी गली में जा नहीं सकेंगे, एक-दो को देख भी नहीं सकेंगे। तो घर-घर में, गली-गली में हो जायेगा ना। अच्छा!

उड़ीसा, गुलबर्गा, विशाखापटनम ग्रुप

तीनों स्थान के सदा एक स्थिति में स्थित रहने वाले हो? शरीर के स्थान भिन्न-भिन्न हैं लेकिन आत्माओं का स्थान एक है। चाहे कहां से भी आये हो लेकिन स्थिति सदा एकरस हो। एकरस स्थिति क्या है? एक की स्मृति में रहना अर्थात् एकरस स्थिति में रहना। अगर एक के बजाय दूसरा कोई भी याद आया तो एकरस के बजाय बहुरस स्थिति हो जायेगी। तो सभी एकरस रहने वाले हो या कभी-कभी दूसरा रस खींचता है? कभी बाल-बच्चे खींचते हैं? सदैव यह सोचो - ''जिस समय और कोई रस आकर्षित करता है, अगर उसी समय आपका अंतिम समय हो तो क्या रिजल्ट होगी'', ऊच पद पा सकेंगे? तो सदैव ऐसे ही समझो कि एक सेकण्ड में क्या भी हो सकता है! हर सेकण्ड का अटेन्शन रखो। सदैव ''एक'' का पाठ पक्का रखो। एक बाप, एक ही संगम का समय है और एकरस स्थिति में रहना है और एक बाप से सर्व प्राप्ति करनी है। ''एक'' का पाठ पढ़ना आता है? सभी को सतयुग में ही आना है ना! या त्रेता में राजा बन जाओ - यह अच्छा है? ब्राह्मण जीवन अर्थात् सम्पूर्ण जीवन। सम्पूर्ण आत्मा सतयुग में आयेगी। ब्राह्मण बनकर अगर एक युग का सुख लिया और एक युग का नहीं लिया तो क्या किया! तो सदा यही याद रखना कि ऊंचे ते ऊंचे बाप द्वारा सदा के लिए ऊंचे ते ऊंचा वर्सा - २१ जन्म का अधिकार लेने वाले हैं। जब सम्पूर्ण बनने का लक्ष्य रखते हो तो लक्षण भी ऐसे ही धारण करो। अगर लक्ष्य कमजोर होगा तो लक्षण भी कमजोर होंगे। बापदादा सभी बच्चों को ऊंचे तो ऊंचा बनाते हैं, नंबरवन बनाते हैं, सेकण्ड नंबर नहीं बनाते। जब दाता सम्पूर्ण दे रहा है तो लेने वाले कम क्यों लो? पूरा ही लेना चाहिए ना। अच्छा!

सभी स्थान निर्विघ्न स्थान हैं, विघ्न आते हैं? बापदादा के पास तो सब समाचार पहुंच जाता है। जितना- जितना शक्तिशाली आत्मा बनेंगे उतना यह विघ्न समाप्त हो जायेंगे, विघ्न हिम्मत नहीं रखेंगे आने की। अभी हिम्मत रखते हैं आने की, चाहे आप उसको मिटा दो लेकिन आते तो हैं ना! आये ही क्यों? विघ्न स्व के लग्न के कारण दूर से ही नीचे हो जाएं और आप ऊपर हो जाओ। क्योंकि विघ्नों में समय तो देना पड़ता है ना। वायुमण्डल तो बदलता है ना। चाहे कोई स्वयं निर्विघ्न हो लेकिन अगर सेन्टर पर बार-बार विघ्न आते हैं तो उसमें भी समय देना पड़ता है। वायुमण्डल बदल जाता है। तो क्यों नहीं ऐसा पावरफुल वातावरण बनाओ जो विघ्न सदा कमजोर रहें और आप सर्वशक्तिवान् रहो-ऐसी हिम्मत है? देखना, तारीख याद रखना। जब प्रकृति की शक्ति वायुमण्डल को

परिवर्तन कर सकती है, गर्म को ठंडा बना सकती है - ठंडे को गर्म बना सकती है तो आप क्या नहीं कर सकते? तो वायुमण्डल पावरफुल बनाओ। क्योंकि सेवा ही यह है कि पहले स्व को निर्विघ्न बनाना है और फिर औरो को भी निर्विघ्न बनाना है। सेवा लेने वाले नहीं, सेवाधारी हो। अगर बहुत समय विध्नों के वश होते रहेंगे तो अंत में निर्विघ्न नहीं रहेंगे। इसलिए बहुतकाल की निर्विघ्न अवस्था चाहिए। तो अभी विघ्नों को आने नहीं देना। कमजोर आत्माओं को भी बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति दे शक्तिशाली बनाओ - यही श्रेष्ठ सेवा है। परिचय देना, कोर्स कराना यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना - यही सच्ची सेवा है। हिम्मत आप रखेंगे और मदद बाप करेंगे। अच्छा!

गुजरात ग्रुप

सदा अपने को निश्चयबुद्धि विजयी आत्माएं अनुभव करते हो? निश्चय की निशानी है विजय। अगर अपने में वा बाप में निश्चय है तो निश्चय की विजय नहीं हो - यह हो ही नहीं सकता। अगर विजय आधी होती है, पूरी नहीं होती तो इसका कारण है निश्चय की कमी। निश्चय और विजय, यह एक-दो के पक्के साथी हैं। जहां निश्चय होगा वहां विजय जरुरी है। क्योंकि निश्चय है कि बाप सर्वशक्तिमान् है और सर्वशक्तिमान् बाप के निश्चय से विजय कैसे नहीं होगी! और अपने में भी निश्चय है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ, तो विजय कहां जायेगी? निश्चयबुद्धि की कभी हार हो नहीं सकती। निश्चयबुद्धि औरों को भी हार से छुड़ाने वाले हैं, स्वयं कैसे हार खा सकते हैं। तो विजयी बनने का फाउनडेशन है ''निश्चय'', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिंग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। अगर फाउन्डेशन कच्चा है तो थोड़ा-सा भी तूफन आयेगा, थोड़ी भी धरनी हिलेगी तो भय होगा कि यह बिल्डिंग हमारी गिर नहीं जाए या क्रेक (दरार) नहीं हो जाए। लेकिन फाउन्डेशन पक्का होगा तो निर्भय होंगे। ऐसे ही निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कोई तूफान हिला नहीं सकता। तो ऐसे विजयी हो या कभी-कभी थोड़ी दरार पड़ जाती है? या कभी थोड़ी खिड़कियां, दरवाजे के शीशे हिलते हैं? तूफान लगता है या धरनी की हलचल होती है तो क्या होता है? हलचल तो नहीं होती है ना! हलचल में अचल रहना - इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी रत्न। सिर्फ बाप में निश्चय नहं, अपने आपमें भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी। निश्चय में इतनी शक्ति है! दिखाई ऐसे देगा कि अकल्याण की बात है लेकिन उसमें भी कल्याण छिपा हुआ होगा। पहले हिलाने के लिए ऐसा रुप आयेगा भी लेकिन आपको हिला नहीं सकता। ऐसे पक्के हो या थोड़ा-थोड़ा हिलते हो? संकल्प वा स्वप्न में भी हिलते तो नहीं? क्योंकि संकल्प में भी अगर थोड़ी-सी कमजोरी आ गई तो संकल्प का प्रभाव वाणी पर पड़ता, वाणी का प्रभाव कर्म पर पड़ता। इसीलिए बाप ने पहले संकल्प को ही बदली किया है, संकल्प करते हो - मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। यह शुद्ध संकल्प है, इस संकल्प से जीवन बदल गई। अगर संकल्प कमजोर हैं तो जीवन भी कमजोर बन जायेगी।

तो सदा निश्चय है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ। कितना भी माया हिलाये, हिलते तो नहीं? कोई माया से डरता तो नहीं? सभी बहादुर हो या सोचते हो माया को आना नहीं चाहिए? आधाकल्प माया के साथी रहे हो और अभी आने नहीं देते। क्योंकि अभी जान गये हो कि यह बड़े-ते-बड़ा दुश्मन है। पहले तो मालूम नहीं था कि माया क्या है। मायाजीत बनने का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि विजयी। तो हर कर्म करने के पहले निश्चय पक्का हो। वैसे भी देखो, अगर कोई ताकत वाला, बहादुर नहीं होता है तो कोई भी काम करने से पहले कमजोरी का संकल्प करता है - कर सकेंगे, नहीं कर सकेंगे, होगा या नहीं होगा। ताकत वाले को यह संशय नहीं उठ सकता। उसे कहो यह भारी चीज उठाओ तो जल्दी उठा लेगा और कमजोर को कहो तो सोचेगा। तो ऐसे सोच चलता है कि यह काम तो बढ़िया है लेकिन होगा या नहीं होगा? माया के अनेक स्वरुपों को जान गये। नॉलेजफुल बन गये हो ना। माया भी भिन्न-भिन्न रुप से आती है। वह भी जानती है कि दस रुप से मुझे जान जायेंगे। तो नया-नया रुप धारण करती है। फिर कहते हैं - मुझे तो यह पता ही नहीं था, ऐसे भी होता है क्या! लेकिन नॉलेजफुल कभी सोच नहीं सकता, वह जानता है। तो सभी निश्चयबुद्धि विजय हो! विजय जन्मसिद्ध अधिकार है। जन्मसिद्ध अधिकार कोई छीन नहीं सकता। अच्छा!

मातायें निश्चय में पक्की हैं या पाण्डव? किसी को भी आगे रखना, दूसरों को आगे रखने में स्वयं आगे हैं ही। पाण्डव माताओं को आगे रखते हो? मातायें ढाल हैं, ढाल को आगे रखा जाता है या समझते हो कि आगे हम हैं? वैसे भी देखो, मातायें पालना करती हैं, पालना के संस्कार माताओं में हैं, तो मातायें माया से बचने की पालना अच्छी करेंगी। ऐसी मातायें हो या खुद ही हार खाने वाली हो? मजबूत हो ना। बाप माताओं के लिए इतना कह रहा है और मातायें अगर कच्ची हुई तो सभी कच्चे हो जायेंगे। कभी कच्चे नहीं बनना, सदा पक्के ही रहना। अच्छा! छोटे बच्चे भी बहुत होशियार हैं। छोटे भी मां-बाप के गुरु बन जाते हैं। अच्छा!

तीनों निश्चय साथ-साथ रहें - बाप, आप और ड्रामा। कभी संकल्प में भी कोई हिला न सके। अंगद बन जाओ। नाखून को भी हिला न सके। टांग तो छोड़ो लेकिन नाखून को भी माया हिला नहीं सकती। ऐसे अंगद बन जाओ। फिर भी गुजरात की धरनी में कुछ-न-कुछ भावना रहती है। तो भावना का फल ''ज्ञान'' मिल गया। अच्छा है - अपने हमजिन्स के ऊपर तरस आना चाहिए, रहम आना चाहिए। क्योंकि समझते हैं ना - कल कम क्या थे और आज क्या बन गये! अपने जीवन के अनुभव से दूसरों के ऊपर रहम आता

है ना! रहमदिल बन ज्यादा-से-ज्यादा हमजिन्स को जगाओ। अच्छा! सभी संतुष्ट हो ना। या थोड़ा-थोड़ा किसी से असंतुष्ट हो जाते हो? किससे संतुष्ट, किससे असंतुष्ट। एक-दो में कभी असंतुष्ट तो नहीं होते? इसको चांस मिलता है, हमको नहीं मिलता - ऐसे तो नहीं! बापदादा के पास सब समाचार आता है। छोटी-छोटी बातें होती हैं, बड़ी नहीं होती। लेकिन क्या भी हो जाए, संतुष्टता न जाए। बातें आते भी हैं और चली जाती हैं लेकिन बातों के साथ संतुष्टता नहीं जाये। क्योंकि संतुष्टता गई तो सब-कुछ गया। अच्छा!

बड़े दिन पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :-

आज बड़े-ते-बड़े बाप बच्चों को अलौकिक दिव्य संगमयुग के हर दिन की मुबारक दे रहे हैं। दुनिया वालों के लिए विशेष एक बड़ा दिन होता है और बड़े दिन पर क्या करते हैं? वह समझते हैं बड़े दिल से मना रहे हैं। लेकिन आप जानते हो उन्हों का मनाना क्या है! उन्हों का मनाना और आप बड़े-ते-बड़े बाप के बड़े दिल वाले बच्चों का मनाना - कितना न्यारा और प्यारा है! जैसे दुनिया वालों का बड़ा दिन है। खुशी में नाचते-गाते एक-दो को उस दिन की मुबारक देते हैं। ऐसे आप बच्चों के लिए संगमयुग ही बड़ा युग है। आयु में छोटा है लेकिन विशेषताओं और प्राप्ति दिलाने में सबसे बड़ा युग है। तो संगमयुग का हर दिन आपके लिए बड़ा दिन है। क्योंकि बड़े-ते-बड़ा बाप बड़े युग ''संगमयुग'' में ही मिलता है। साथ-साथ बाप द्वारा बड़े-ते-बड़ी प्राप्ति भी अभी होती है। बापदादा सभी बच्चों को बड़े-ते-बड़ा ''पुरुषोत्तम'' अब बनाते हैं। जैसे आज के दिन की विशेषता है खुशियां मनाना और एक-दो को गिफ्ट देना, मुबारक देना और फॉदर द्वारा ही गिफ्ट मिलने का दिन मनाते हैं। आप सबको बाप ने संगमयुग पर ही बड़े-ते-बड़ी गिफ्ट क्या दी है? बापदादा सदा कहते हैं कि मैंने आप बच्चों के लिए हथेली पर स्वर्ग का राज्य-भाग्य लाया है। तो सबकी हथेली पर स्वर्ग का राज्य-भाग्य है ना। जिसको कहते हैं - तिरी पर बहिश्त। इससे बड़ी गिफ्ट और कोई दे सकता है? कितने भी बड़े आदमी बड़ी गिफ्ट दें लेकिन बाप की गिफट के आगे वह क्या होगी? जैसे सूर्य के आगे दीपक। तो संगमयुग की यादगार निशा-नियां अन्य धर्मो में भी रह गई हैं। आपको बड़े युग में बड़े बाप ने बड़े-ते-बड़ी गिफ्ट दी है, इसलिए आज के बड़े दिन पर इस विधि से मनाते हैं। वह क्रिसमस फॉदर कहते हैं। फॉदर सदा बच्चों को देने वाला ''दाता'' है। चाहे लौकिक रीति से भी देखो -फॉदर बच्चों का दाता होता है। यह है बेहद का फॉदर। बेहद का फॉदर गिफ्ट भी बेहद की देते हैं। और कोई भी गिफ्ट कितना समय चलेगी? कितने अच्छे-अच्छे मुबारक के कार्ड गिफ्ट में देते हैं। लेकिन आज का दिन बीत गया, फिर उस कार्ड को क्या करेंगे? थोड़ा समय चलता हैं ना। खाने-पीने की मीठी चीजें भी देंगे, वह भी कितना समय चलेंगी! कितना समय खुशी मनायेंगे! नाचेंगे, गायेंगे - एक रात। लेकिन आप आत्माओं को बाप ऐसी गिफ्ट देते हैं जो इस जन्म में तो साथ है ही लेकिन जन्म-जन्म साथ रहेगी। दुनिया वाले कहते हैं खाली हाथ आये और खाली हाथ जाना है। लेकिन आप क्या कहेंगे? आप फलक से कहते हो कि हम आत्माएं बाप द्वारा मिले हुए खजानों से भरपूर होकर जायेंगी और अनेक जन्म भरपूर रहेंगी। २१ जन्मों तक यह गिफ्ट साथ रहेगी। ऐसी गिफ्ट कभी देखी है? चाहे किसी भी फॉरेन के देश के राजा वा रानी हों, ऐसी गिफ्ट दे सकते हैं? चाहे पूरा तख्त दे देवें, ऑफर करें - यह तख्त आप ले लो। आप क्या करेंगे, कोई लेगा? बाप के दिलतख्त के आगे यह तख्त भी क्या है! इसलिए आप सभी फखुर में रहते हो, फखुर अर्थात् रूहानी नशा। इस रूहानी फखुर में रहने वाले किसी भी बात का फिक्र नहीं करते, बेफिक्र बादशाह बन जाते हैं। अभी के भी बादशाह और भविष्य में भी राजाई प्राप्त करते हो इसलिए सबसे बड़ी और सबसे अच्छी यह बेफिक्र बादशाही है। कोई फिक्र है? और प्रवृत्ति में रहने वालों को बाल-बच्चों का फिक्र है? कुमारों को खाना बनाने का फिक्र ज्यादा है, कुमारियों को क्या फिक्र होता है? नौकरी का कि अच्छी नौकरी मिले, फिक्र है क्या? बेफिक्र हो ना! जिसको फिक्र होगा वह बेफिक्र बादशाही का मजा नहीं ले सकेंगे। विश्व की राजाई तो २० जन्म होगी लेकिन यह बेफिक्र बादशाही और दिल-तख्त–यह एक ही इस युग में मिलते हैं एक जन्म के लिए। तो एक का महत्व है ना!

बापदादा सदा बच्चों को यही कहते –''ब्राह्मण जीवन अर्थात् बेफिक्र बादशा''। ब्रह्मा बाप बेफिक्र बादशाह बने तो क्या गीत गाया–पाना था सो पा लिया, बाम बाकी क्या रहा, आप क्या कहते हो? सेवा का काम बाकी रहा हुआ है, लेकिन वह भी करावन-हार बाप करा रहे हैं और कराते रहेंगे। हमको करना है–इससे बोझ हो जाता है। बाप हमारे द्वारा करा रहे हैं–तो बेफिक्र हो जायेंगे। निश्चय है यह श्रेष्ठ कार्य होना ही है वा हुआ ही पड़ा है इसलिए निश्चयबुद्धि, निश्चिंत, बेफिक्र रहते हैं। यह तो सिर्फ बच्चों को बिजी रहने लिए सेवा का एक खेल करा रहे हैं। निमित्त बनाए वर्तमान और भविष्य सेवा के फल का अधिकारी बना रहे हैं। काम बाप का, नाम बच्चों का। फल बच्चों को खिलाते, खुद नहीं खाते हैं। तो बेफिक्र हुए ना। सेवा में सफलता का सहज साधन ही यह है, कराने वाला करा रहा है। अगर ''मैं कर रहा हूँ'' तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो बाप सर्वशक्तिवान है। कर्म का फल भी इतना ही श्रेष्ठ मिलता है। तो सदा बाप द्वारा प्राप्त हुई बेफिक्र बादशाही वा हथेली पर स्वर्ग के

राज्य-भाग्य की गॉडली गिफ्ट स्मृति में रखो। बाप और गिफ्ट दोनों की याद से हर दिन तो क्या लेकिन हर घड़ी बड़े-ते-बड़ी घड़ी है, बड़ा दिन है–ऐसी अनुभूति करेंगे। दुनिया वाले तो सिर्फ मुबारक देते हैं। क्या कहते हैं? हैप्पी हो, हेल्दी-वेल्दी हो... कह देते हैं। लेकिन बन तो नहीं जाते हैं ना। बाप तो ऐसी मुबारक देते जो सदा के लिए हेल्थ-वेल्थ हैपी वरदानों के रूप में साथ रहती है। सिर्फ मुख से कहकरके खुश नहीं करते हौ, लेकिन बनाते हैं और बनना ही मनाना है क्योंकि अविनाशी बाप की मुबारक भी अविनाशी होगी ना। तो मुबारक वरदान बन जाती है।

आप तना से निकले हुए हो। यह सब शाखायें हैं, यह सभी धर्म आपकी शाखायें हैं ना! कल्प वृक्ष की शाखायें हैं। इसलिए वृक्ष की निशानी क्रिसमस ट्री दिखाते हैं। क्रिसमस ट्री कभी सजी हुई देखी है? इसमें क्या करते हैं? (स्टेज पर दो क्रिसमस वृक्ष सजे रखे हैं) इसमें क्या दिखाया है? विशेष चमकते हुए जगे हुए बल्ब दिखाते हैं। छोटे-छोटे बल्बों से ही सजाते हैं। इसका अर्थ क्या है? कल्प वृक्ष की आप चमकती हुई आत्मायें हो और जो भी धर्म पितायें आते हैं वह भी अपने हिसाब से सतोप्रधान होते हैं। इसलिए गोल्डन एजेड आत्मा चमकती हुई होती है। इसलिए यह कल्प वृक्ष की निशानी अन्य धर्म की शाखाएं भी हर वर्ष निशानी मनाते रहते हैं। सारे वृक्ष का ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर है ना। कौन सा बाप ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर है? बाप ने ब्रह्मा को आगे रखा है। साकार सृष्टि की आत्माओं का आदि पति, आदिनाथ ब्रह्मा है। इसलिए ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर है। आदि देव के साथ आप भी हो ना कि अकेले आदि देव है। आप आदि आत्मायें अभी आदि देव के साथ हो और आगे भी साथ रहेंगी, इतना नशा है? खुशी के गीत सदा गाते रहते हो ना या सिर्फ आज गायेंगे?

आजा विशेष डबल फारेनर्स का दिन है। आप के लिए रोज़ बड़ा दिन है या आज है? चारों ओर देश-विदेश के बच्चे कल्प वृक्ष में चमकते हुए सितारे दिखाई दे रहे हैं। सूक्ष्म रूप में तो सब मधुबन में पहुंचे हुए हैं। वह भी सब आकारी रूप में मना रहे हैं। आप साकारी रूप में मना रहे हो। सभी का मन बाप की गॉडली गिफ्ट को देख खुशी में नाच रहा है। बापदादा भी सर्व साकार रूप और आकार रूपधारी बच्चों को सदा हर्षित भव की मुबारक दे रहे हैं। सदा दिलखुश मिठाई खाते रहो और प्राप्ति के गीत गाते रहो। ड्रामा अनुसार भारत वालों को विशेष भाग्य मिला हुआ है। अच्छा।

सभी टीचर्स ने बड़ा दिन मनाया कि रोज़ मनाती हो? बड़ा बाप है और बड़े आप भी हो इसलिए जो दुनिया वालों के बड़े दिन हैं उसको महत्व देते हैं। इसमें भी आप बड़े, छोटे भाईयों को उत्साह दिलाते हो। सभी टीचर्स बेफिक्र बादशाह हो? बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में स्थित रहने वाले क्योंकि निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊंचा उड़ाता है। तो बेफिक्र बादशाह ही होंगे ना! कोई फिक्र है क्या? सेवा कैसे बढ़ेगी, अच्छे-अच्छे जिज्ञासु पता नहीं कब आयेंगे, कब तक सेवा करनी पड़ेगी–यह सोचते तो नहीं हो? असोच बनाने से ही सेवा बढ़ेगी, सोचने से नहीं बढ़ेगी। असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे। सोचने में ही बुद्धि बिजी रखेंगे तो बाप की टचिंग, बाप की शक्ति ग्रहण नहीं कर सकेंगे। बाबा और हम –कम्बाइन्ड हैं, करावनहार और करने के निमित्त मैं आत्मा। इसको कहते हैं असोच अर्थात् एक की याद। शुभचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जहाँ चिंता है वहाँ शुभचिंतन नहीं और जहाँ शुभचिंतन है वहाँ चिंता नहीं। अच्छा!

चारों ओर के गाडॅली गिफ्ट के अधिकारी, बड़े ते बड़े बाप के बड़े ते बड़े भाग्यवान आत्मायें, आदि पता के सदा साथी आदि आत्मायें, सदा बड़े ते बड़े बाप द्वारा मुहब्बत की मुबारक, अविनाशी वरदान प्राप्त करने वाले सर्व साकारी रूपधारी और आकारी रूपधारी–सभी बच्चों को दिलखुश मिठाई के साथ यादप्यार और नमस्ते।

पूना-बीदर ग्रुप:-

रोज़ अमृतवेले दिलखुश मिठाई खाते हो? जो रोज़ अमृतवेले दिलखुश मिठाई खाते हैं वो स्वयं भी सारा दिन खुश रहते हैं और दूसरे भी उनको देख खुश होते हैं। यह ऐसी खुराक है जो कोई भी परिस्थित आ जाए लेकिन यह दिलखुश खुराक परिस्थिति को छोटा बना देती है, पहाड़ को रूई बना देती है। इतनी ताकत है इस खुराक में! जैसे शरीर के हिसाब से भी जो तन्दरूस्त वा शक्तिशाली होगा वह हर परिस्थिति को सहज पार करेगा और जो कमजोर होगा वह छोटी सी बात में भी घबरा जायेगा। कमजोर के आगे परिस्थिति बड़ी हो जाती है और शक्तिशाली के आगे परिस्थिति पहाड़ से रूई बन जाती है। तो रोज दिलखुश मिठाई खाना माना सदा दिलखुश रहें। यह अलौकिक खुशी के दिन कितने थोड़े हैं! देवताई खुशी और ब्राह्मणों की खुशी में भी फर्क है। यह ब्राह्मण जीवन की परमात्म-खुशी, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति देवताई जीवन में भी नहीं होगी। इसलिए इस खुशी को जितना चाहे मनाओ। रोज़ समझो आज खुशी मनाने का दिन है। यहाँ आने से खुशी बढ़ गई है ना! यहाँ से नीचे उतरेंगे तो कम तो नहीं होगी? उड़ती कला अभी है, फिर तो जितना पाया उतना खाते रहेंगे। तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम दिलखुश मिठाई खाने वाले हैं और दूसरों को खिलाने वाले हैं क्योंकि जितना देंगे उतना और बढ़ती जायेगी। देखो, खुशी का चेहरा सबको अच्छा लगता है और कोई दु:ख अशान्ति में घबराया हुआ चेहरा तो तो अच्छा नहीं लगेगा ना! जब दूसरों का अच्छा नहीं लगेगा तो अपना भी नहीं लगना चाहिए। तो सदैव खुशी के चेहरे से सेवा करते रहो। मातायें ऐसी सेवा करती हो? घर वाले आपको देखकर खुश हो जाएं। चाहे

कोई ज्ञान को बुरा भी समझते हो फिर भी खुशी की जीवन को देखकर मन से अनुभव जरूर करते हैं कि इनको कुछ मिला है जो खुश रहते हैं। बाहर अभिमान से न भी बोलें लेकिन अन्दर महसूस करते हैं और आखिर तो झुकना ही है। आज गाली देते हैं कल चरणों पर झुकेंगे। कहाँ झुकेंगे? ''अहो प्रभू'' कहकर झुकना जरूर है। तो ऐसी स्थिति होगी तब तो झुकेंगे ना! कोई भी किसी के आगे झुकता है तो उसमें कोई बड़ापन होता है, कोई विशेषता होती है–उस विशेषता पर झुकता है। ऐसे तो कोई नहीं झुकेगा ना। दिखाई दे–इन जैसी जीवन कोई की है ही नहीं, सदा खुश रहते हैं। रोने की परिस्थिति में भी खुश रहें, मन खुश रहे। ऐसे नहीं हंसते रहो, लेकिन मन खुश हो। पाण्डव क्या समझते हो? ऐसा अनुभव दूसरों को होता है या अभी कम होता है?

खुशमिजाज़ रहने वाले अपने चेहरे से बहुत सेवा करते हैं। मुख से बोलो, नहीं बोलो लेकिन आपकी सूरत, ज्ञान की सीरत को स्वत: प्रत्यक्ष करेगी। तो यही याद रखना कि दिलखुश मिठाई खानी है और औरों को भी खिलानी है। जो स्वयं खाता है वह खिलाने के बिना रह नहीं सकता है। अच्छा!

बेलगाम, सोलापुर ग्रुप

अपने इस श्रेष्ठ जीवन का देख हर्षित होते हो? क्योंकि यह जीवन हीरे तुल्य जीवन है। हीरे का मूल्य होता है ना! तो इस जीवन को इतना अमूल्य समझकर हर कर्म करो। ब्राह्मण जीवन अर्थात् अलौकिक जीवन। अलौकिक जीवन में साधारण चलन नहीं हो सकती। जो भी कर्म करते हो वह अलौकिक होना चाहिए, साधारण नहीं। अलौकिक कर्म तब होता है जब अलौकिक स्वरूप की स्मृति रहती है। क्योंकि जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति होगी। स्मृति में रहे-एक बाप दूसरा न कोई। तो बाप की स्मृति सदा समर्थ बनाती है, इसलिए कर्म मभी श्रेष्ठ अलौकिक होता है। सारा दिन जैसे अज्ञानी जीवन में मेरा-मेरा करते रहे, अब यही मेरा बाप की तरफ लगा दिया ना! अभी और सब मेरा-मेरा खत्म हो गया। ब्राह्मण बनना अर्थात् सब कुछ तेरा कर दिया। यह गलती तो नहीं करते हो–मेरे को तेरा, तेरे को मेरा तो नहीं बना देते हो? जब कोई मतलब होगा तो कहेंगे–मेरा, और कोई मतलब नहीं होगा तो कहेंगे तेरा। मेरा भले कहो लेकिन ''मेरा बाबा'' कहो। बाकी सब मेरा-मेरा छोड़कर एक मेरा। एक मेरा कहने से मेहनत से छूट जायेंगे, बोझ उतर जायेगा। नहीं तो गृहस्थी जीवन में कितना बोझ है! अभी हल्के डबल लाइट हो गये इसलिए सदा उड़ती कला वाले हो। उड़ती कला के सिवाए रूकती कला में रूकना नहीं है। सदा ही उड़ते चलो। बाप ने अपना बना लिया–सदा इसी खुशी में रहो।

वैराइटी ग्रुप

सदा अपने को भगवान के बगीचे के रूहानी गुलाब समझते हैं? सबसे खुशबूदार पुष्प है रूहे गुलाब। तो आप हो रूहानी गुलाब जो चारों ओर रूहानी खुशबू फैलाते है। खुशबू स्वत: ही अपनी तरफ आकर्षित करती है। अगर कहाँ बदबू होगी तो वहाँ से भागने की कोशिश करेंगे लेकिन खुशबू होगी तो नजदीक आने की कोशिश करेंगे। तो रूहानी खुशबू सभी को आकर्षित करती है। ऐसे रूहानी गुलाब हो ना! गुलाब के साथ कांटा लगा हुआ तो नहीं है? गुलदस्ता बनाते हैं तो पहले कांटे निकालते हैं ना! कांटे वाला गुलदस्ता नहीं बनाते, कांटे निकालकर साफ करके फिर गुलदस्ता बनाते हैं। किसी भी देवता के आगे पुष्प चढ़ायेंगे तो पहले साफ करेंगे, फिर भेंट करेंगे। आप भी रूहानी गुलाब बाप के आगे वैराइटी रूप में, गुलदस्ते के रूप में हो। भक्ति मार्ग में भी यहाँ की रस्म चलती रहती है। आप रूहानी गुलाब बाप के आगे अर्पण हुए हो, इसलिए देवताओं को भी पुष्प ही अर्पण करते हैं। रूहानी गुलाब अर्थात् कभी भी रूहानियत से दूर होने वाला नहीं। जैसे फूलों में खुशबू समाई हुई होती है ना, अलग तो नहीं होती है ना। ऐसे आप लोगों में रूहानियत की खुशबू समाई हुई है। आर्टीफिशियल बाहर की नहीं है। समाई हुई है या कभी-कभी खुशबू डाल देते हो? आप खुशबूदार बनते हो, इसलिए मन्दिरों में आपके जड़ चित्रों के आगे भी सदैव खुशबू जलायेंगे। कोई भी मन्दिर में अगर-बत्ती कितने प्यार से जलाते हैं! अगर मन्दिर में खुशबू नहीं हो तो कहेंगे–यहाँ पुजारी अच्छा नहीं है, मन्दिर का वातावरण नहीं है। तो यह खुशबू क्यों रखते हैं? अगरबत्ती क्यों जलाते हैं? क्योंकि आप खुशबूदार बनते हो। तो यह नशा है कि यह हमारे ही चित्र हैं? हर एक समझता है कि यह मेरे चित्र हैं। एक नहीं–सभी चित्र आपके हैं! पाण्डव क्या समझते हो? हनूमान, गणेश–यह आपके चित्र हैं? आपमें हनूमान वा गणेश कौन है? सभी गणेश हो? गणेश और विद्यापति। जो नॉलोजफुल हैं वो विद्यापति अर्थात् गणेश हैं और हनूमान अर्थात् जिसके हृदय में सिवाए बाप के और कोई नहीं। सेवाधारी भी हैं और हृदय में बाप समाया हुआ है। तो ऐसे हो या दिल में कभी-कभी और कोई आ जाता है? माताओं के दिल में क्या है? और कोई पोत्रा-धोत्रा है? पोत्रे-धोत्रे प्यारे लगते हैं ना या पोत्रा भी बाप है तो धोत्रा भी बाप है? सब कुछ बाप को बना दिया तो कोई याद नहीं आयेगा और अगर नहीं बनाया तो याद आयेगा इसलिए बाप कहते हैं –सर्व संबंध से याद करो। अच्छा।

डाक्टर्स प्रति

सभी डाक्टर्स के दिल में क्या है? हॉस्पिटल तो नहीं है? बाप को दिल में बिठाना अर्थात् सदा के लिए अनेकों को शफा देना। आजकल तो डॉक्टर्स भी कहते हैं कि दवाई इतना काम नहीं करेगी जितना दुआ करेगी। वो भी दवाईयों से दिलशिकस्त हो गये हैं।

क्योंकि जानते हैं ना कि इसकी रिजल्ट क्या है और क्या निकलेगी! इसलिए अभी सबकी नजर दुआओं तरफ जा रही है। अभी योग एक्सरसाइज़ के रूप में चारों ओर बढ़ता जा रहा है। अभी योग तक आये हैं, सहजयोग तक आ जायेंगे। दवाईयों के बजाए दूसरी तरफ अभी बुद्धि तो गई है ना। आखिर ठिकाने पर आ जायेंगे तो डॉक्टर्स यही काम करते हो ना। सबकी बुद्धि को ठिकाने पर लगाने वाले हो ना? अच्छा है, हिम्मत रखने से बाप की मदद स्वत: मिल रही है, मिलती रहेगी। जहाँ हिम्मत है वहाँ असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। सभी असम्भव को सम्भव करने वाले हो। जो दुनिया वाले कहते हैं मन को एकाग्र करना बहुत मुश्किल है, असम्भव भी कह देते हैं और आप क्या कहते हो? आपके लिए तो सेकण्ड की बात है ना। बस बाबा कहा और मन ठिकाने पर पहुंचा। तो आपके लिए सेकण्ड का काम है और उन्हों के लिए असम्भव है। कितना अन्तर आ गया! टाइम तो नहीं लगता है? ऐसे तो नहीं–गीत बजे, लाल बत्ती जले तब ही मन टिकेगा? मेहनत तो नहीं करनी पड़ती? अपना बाप है ना। कोई दूसरे का बाप तो नहीं है। अपना बाप नहीं हो और कोई कहे–यह आपका बाप है, इसे याद करो तो याद नहीं कर सकेंगे ना! लेकिन यह तो अपना है। अपनी चीज़ को याद करना कभी मुश्किल नहीं होता। पराये को याद करना मुश्किल होता है। आप तो अधिकार से याद करते हो या भगवान है, बहुत बड़ा है, सूर्य समान है–ऐसे याद करते हो? सब कुछ मेरा है–इस अधिकार से याद करो।

रूहानी गुलाब बन सारा दिन खुशबु फैलाते रहो। खुशबू ऐसी चीज़ होती है जो दूर वालों को भी आकर्षित करती है। दूर से ही सोचेंगे–यह खुशबू कहाँ से आ रही है। तो आपकी रूहानियत विश्व को आकर्षित करेगी। देखो, रूहानियत की खुशबू ने देश से विदेश को भी आकर्षित किया ना! विदेश तक खुशबू पहुंचना! कोई भी काम करते शुभ संकल्प से यह खुशबू फैलाते रहो। कोई भी काम करते चेक करो कि बुद्धि कितने तरफ जा रही है? न चाहते भी अनेक तरफ जाती है, एक तरफ नहीं होती। तो जब और तरफ जा सकती है तो सेवा भी तो कर सकते हो ना, याद भी कर सकते हो। बहुत थोड़ा समय होता है जो फुल बुद्धि उस काम में रहती है। जो ऐसा कोई काम होगा–जैसे डॉटर्स ऑपरेशन करते हौ, जरूरी आपरेशन है तो फुल बुद्धि होगी। बाकी दवाई दे रहे हैं, देख रहे हैं तो बुद्धि और काम भी करती है। जब वह कर सकती है तो यह क्यों नहीं कर सकती। मन और बुद्धि की आदत है चक्र लगाने की। चाहे ज्ञान का चक्र चलाओ और चाहो व्यर्थ चलाओ लेकिन चक्कर चलता जरूर है। आप स्वदर्शन-चक्र चलाओ तो और चक्कर खत्म हो जायेंगे।

तो सभी सेवा में सहयोगी हो? जिसे समय नहीं मिलता, सरकमस्टांस हैं–वह हाथ उठाओ। मन्सा सेवा तो सब कर सकते हो ना? बिजी रहने के लिए सेवा बहुत अच्छा साधन है। जितना अपने को बिजी रखेंगे उतना सेफ रहेंगे। चाहे मन्सा करो, चाहे वाचा करो, चाहे कर्मणा करो लेकिन बुद्धि से बिजी जरूर रहो। हाथ-पांव से तो रहते हो लेकिन बुद्धि से बिजी रहो। अपना टाइम-टेबल बनाओ। जितना बड़ा आदमी उतना टाइम-टेबल फिक्स होता है। तो आप बड़े-ते-बड़े आदमी हो ना! सारे कल्प में ढूंढकर के आओ ब्राह्मणों से बड़ा कोई है! देवतायें भी नहीं हैं। चाहे आप ही देवता बनेंगे लेकिन इस जीवन के आगे वह भी कुछ नहीं है। जीवन है तो ब्राह्मण जीवन अति श्रेष्ठ है। अच्छा।

अपने को बड़े ते बड़ा खुशनसीब अनुभव करते हो? आप जैसा खुशनसीब और कोई है? जिसका नसीब अर्थात् भाग्य इतना श्रेष्ठ है उसकी निशानी क्या होगी? सदा खुश रहेंगे। नसीब वाला सदा सम्पन्न होता है। कोई विद्या में, पढ़ाई में होशियार होता है तो कहते हैं इसका नसीब बहुत अच्छा है। अच्छे नसीब की निशानी–वह हर बात में सम्पन्न होगा, कमजोर नहीं होगा, बहादुर होगा। तो आप सभी खुशनसीब हो ना! सदा खुशी के गीत बजते रहते हैं। जैसे भक्ति मार्ग में कहते हैं –अनहद शब्द चलता रहे तो अनहद शब्द सुनने के लिए, चलाने के लिए कितनी मेहनत करते हैं, आप लोगों ने क्या मेहनत की? सदा खुशी के गीत स्वत: बजते रहते हैं, यह कभी खत्म नहीं होते। वह कितना भी बड़ा गीत बनाओ तो भी बंद हो जायेगा। आटोमेटिक भी होगा तो भी बैटरी खत्म हो जायेगी। ज्यादा टाइम चलायेंगे तो बैटरी खत्म हो जायेगी या गर्म हो जायेगी और आपकी बैटरी कभी खत्म होती है? अविनाशी गीत है, इसीलिए अनहद है अर्थात् हद नहीं है। तो अनहद गीत बजता है या बजाना पड़ता है? और काम ही क्या है! गाओ और नाचो। योग लगाना भी क्या है! खुशी में नाचना ही तो है ना। बाप की महिमा गाते हो, खुशी में नाचते हो और क्या करते हो! इसी में ही सेवा है, इसी में ही योग है, इसी में ही ज्ञान वा धारणा है। नाचो और गाओ, ब्रह्मा-भोजन खाओ। जब भोग लगाया तो ब्रह्मा-भोजन हो गया ना। अगर भाग लगाकर, याद करके नहीं खाया तो साधारण खाना हो गया, उससे ताकत नहीं आयेगी, उससे सिर्फ पेट भरेगा लेकिन आत्मा में शक्ति नहीं आयेगी। तो क्या करना है? खाओ, नाचो और गाओ। मेहनत से छुड़ा दिया हैना! नहीं तो कितनी मेहनत करते–प्राणायाम् चढ़ाओ, एक ही मूर्ति को देखते रहो, मन को अमन करो। कितनी मेहनत कराते हैं, आप लोगों ने मन को बाप की तरफ लगा दिया, बस, बिजी कर दिया। मन को सुमन बना दिया, दमन नहीं किया। अभी आपका मन श्रेष्ठ संकल्प करता है, इसीलिए सु-मन है। मन का भटकना बन्द हो गया। जब तक ठिकाना नहीं होता है तो भटकना होता है। ठिकाने का मालूम हो फिर कौन भटकेगा! अगर फिर भी भटके तो कहेंगे–इसका दिमाग ठीक नहीं है। आपका दिमाग तो विशाल हो गया। दूरादेशी, विशाल हो गये। इतनी विशाल बुद्धि है जो आदि-मध्य-अन्त, पास्ट, प्रेजन्ट, फ्युटर–तीनों कालों को जानते हो। तो सदा

यही याद रखना कि खुशनसीब हैं, कभी कमजोर नहीं बनना है, कमाल करने वाला बनना है। आधाकल्प तो कमजोर रहे। अभी कमजोर क्यों रहें। तो जो भी संकल्प चलें, बोल निकले या कोई भी कर्म हो तो चेक करो–कमाल का है, कमजोरी का तो नहीं? हर संकल्प, बोल में कमाल अनुभव हो। अच्छा।

२९-१२-८९

पढ़ाई का सार–‘‘आना और जाना’’

आज मुरलीधर बाप अपने मास्टर मुरलीधर बच्चों को देख रहे हैं। सभी बच्चे मुरली और मिलन के चात्रक हैं। ऐसे चात्रक सिवाए ब्राह्मण-आत्माओं के और कोई हो नहीं सकता। यह ज्ञान-मुरली और परमात्म मिलन न्यारा और प्यारा है। दुनिया की अनेक आत्मायें परमात्म-मिलन की प्यासी हैं, इन्तजार में हैं। लेकिन आप ब्राह्मण-आत्मायें दुनिया के कोने में गुप्त रूप में अपना श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कर रही हो क्योंकि दिव्य बाप को जानने अथवा देखने के लिए दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि चाहिए जो बाप ने आप विशेष आत्माओं को दी है इसलिए आप ब्राह्मण ही जान सकते और मिलन मना सकते हो। दुनिया वाले तो पुकारते रहते–‘‘एक बूंद के प्यासे हम’’ और आप क्या कहते हो–हम वर्से के अधिकारी हौ, कितना अन्तर है–कहाँ प्यासी और कहाँ अधिकारी! अभी भी सभी अधिकारी बनकर अधिकार से आकर पहुंचे हो। दिल में यह नशा है कि हम अपने बाप के घर में अथवा अपने घर में आये हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि हम आश्रम में आये हैं। अपने घर में आये हैं–ऐसे समझते हो ना? अधिकार की निशानी है अपनापन। अपने बाप के पास आये हैं, अपने परिवार में आये हैं। मेहमान बनकर के नहीं आते लेकिन बच्चे आये हैं अपने घर में। चाहे चार दिन के लिए आते हो लेकिन समझते हो–मधुबन अपने स्थान पर पहुंचे हैं। तो यह आना और जाना। आप ब्राह्मणों की जो पढ़ाई है वा मुर-लीधर की जो मुरली है उसका सार यह दो शब्द ही हैं–‘‘आना और जाना’’। याद की यात्रा का अभ्यास क्या करते हो? कर्मयोगी का अर्थ ही है–मैं अशरीरी आत्मा शरीर के बंधन से न्यारी हूँ, कर्म करने को लिए कर्म में आती हूँ और कर्म समाप्त कर कर्म-सम्बन्ध से न्यारीहो जाती हूँ, सम्बन्ध में रहते हैं, बंधन में नहीं रहते। तो यह क्या हुआ? कर्म के लिए ‘‘आना’’ और फिर न्यारा हो जाना। कर्म के बन्धन-वश कर्म में नहीं आते हो लेकिन कर्मेन्द्रियों को अधीन कर अधिकार से कर्म करने के लिए कर्मयोगी बनते हो। इन्द्रियों के कर्म के वशीभूत नहीं हो। कोई भी किसी के वश हो जाता तो वश हुई आत्मा मजबूर हो जाती है और मालिक बनने वाली आत्मा कभी किससे मजबूर नहीं होती, अपने स्वमान में मजबूत होती है। कई बच्चे अभी भी कभी-कभी किसी-न-किसी कर्मेन्द्रिय के वश हो जाते हैं, फिर कहते हैं–आज आंख ने धोखा दे दिया, आज मुख ने धोखा दे दिया, दृष्टि ने धोखा दे दिया। पर-वश होना अर्थात् धोखा खाना और धोखे की निशानी है दु:ख की अनुभूति होना। और धोखा खाना चाहते नहीं हैं लेकिन न चाहते हुए भी कर लेते हैं, इसको ही कहा जाता है वशीभूत होना। दुनिया वाले कहते हैं–चक्कर में आ गये...चाहते भी नहीं थे लेकिन पता नहीं कैसे चक्कर में आ गये। आप स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा किसी धोखे के चक्कर में नहीं आ सकती क्योंकि स्वदर्शन चक्र अनेक चक्कर से छुड़ाने वाला है। न सिर्फ अपने को, लेकिन औरों को भी छुड़ाने के निमित्त बनते हैं। अनेक प्रकार के दु:ख के चक्करों से बचने के लिए सोचते हैं–इस सृष्टि-चक्र से निकल जायें...। लेकिन सृष्टि चक्र के अन्दर पार्ट बजाते हुए अनेक दु:ख के चक्करों से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं–यह कोई नहीं जानता है। आप चैलेन्ज करते हो कि हम आपको जीवन में मुक्ति डबल दिला सकते हैं–जीवन भी हो और मुक्ति भी हो ऐसी चैलेन्ज की है ना? नशे से कहते हो कि जीवनमुक्ति आपका और हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, तो स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् दु:ख के चक्करों से मुक्त रहने वाले और मुक्त करने वाले। वशीभूत होने वाले नहीं लेकिन अधिकारी बन, मालिक बन सर्व कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाले। धोखा खाने वाले नहीं लेकिन औरों को भी धोखे से छुड़ाने वाले। यही अभ्यास करते हो ना–कर्म में आना और फिर न्यारा हो जाना, तो याद का अभ्यास क्या रहा? आना और जाना। और पढ़ाई अर्थात् ज्ञान का सार क्या है? कर्मातीत बन घर जाना है और फिर राज्य करने का पार्ट बजाने अपने राज्य में आना है। यही ज्ञान का सार है ना। तो ‘‘जाना’’ और ‘‘आना’’–यही ज्ञान और योग है, इसी अभ्यास में दिन-रात लगे हुए हो। बुद्धि में घर जाने की और फिर राज्य में आने की खुशी है। जैसे मधुबन अपने घर में आते हो तो कितनी खुशी रहती है। जब से टिकेट बुक कराते हो तब से जाना है, जाना है–यह बुद्धि में याद रहता है ना! तो जब मधुबन घर की खुशी है तो आत्मा के घर जाने की भी खुशी है। लेकिन खुशी से कौन जायेगा? जितना सदा यह ‘‘आने’’ और ‘‘जाने’’ का अभ्यास होगा। जब चाहो तब अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाओ और जब चाहो तब कर्मातीत बन जाओ–यह अभ्यास बहुत पक्का चाहिए। ऐसे न हो कि आप अशरीरी बनने चाहो और शरीर का बंधन, कर्म का बंधन, व्यक्तियों का बंधन, वैभवों का बंधन, स्वभाव-संस्कारों का बंधन अपनी तरफ आकर्षित करे। कोई भी बंधन अशरीरी बनने नहीं देगा। जैसे कोई टाइट ड्रेस पहनते हैं तो समय पर सेकण्ड में उतारने चाहें तो उतार नहीं सकेंगे, खिंचावट होती है क्योंकि शरीर से चिपटा हुआ है। ऐसे कोई भी बंधन का खिचाव अपनी तरफ खीचेगा। बंधन आत्मा को टाइट कर देता है। इसलिए बापदादा सदैव यह पाठ पढ़ाते हैं –निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे। यह बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।

ज्ञान सुनना-सुनाना, सेवा करना यह अलग चीज़ है लेकिन यह अभ्यास अति आवश्यक है। पास विद् आनर बनना है तो इस अभ्यास में पास होना अति आवश्यक है। और इसी अभ्यास पर अटेन्शन देने में डबल अन्डरलाइन करो, तब ही डबल लाइट बन कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर डबल ताजधारी बनेंगे। ब्राह्मण बने, बाप के वर्से के अधिकारी बने, गॉडली स्टूडेन्ट बनें, ज्ञानी तू आत्मा बने, विश्व सेवाधारी बने–यह भाग्य तो पा लिया लेकिन अब पास विद् आनॅर होने के लिए, कर्मातीत स्थिति के समीप जाने के लिए ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। जो सभी बच्चे अनुभव सुनाते हो–सुनते हुए न्यारे, कार्य करते हुए न्यारे, बोलते हुए न्यारे रहते थे। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। न्यारापन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है। करके देखो। एक घण्टा किसको समझाने की भी मेहनत करके देखो और उसके अन्तर में १५ मिनट में सुनते हुए, बोलते हुए न्यारेपन की स्थिति में स्थित होके दूसरी आत्मा को भी न्यारे-पन की स्थिति का वायब्रेशन देकर देखो। जो १५ मिनट में सफलता होगी वह एक घण्टे में नहीं होगी। यही प्रैक्टिस ब्रह्मा बाप ने करके दिखाई। तो समझा क्या करना है!

पहले निमित्त तो टीचर्स हैं। फॉलो फादर करेंगी ना। सेवा का विस्तार भल कितना भी बढ़ाओ लेकिन विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो। वाणी द्वारा भी कहाँ तक सेवा करेंगे, कितने की करेंगे! अब तो रूहानी वायब्रेशन, अशरीरीपन की स्थिति के वायब्रेशन, न्यारे और प्यारेपन के शक्तिशाली वायब्रेशन वायुमण्डल में फैलाओ। सेवा की तीव्रगति का साधन भी यही है। दूसरों की सेवा करने के पहले स्वयं इस विधि में सम्पन्न होंगे तब सेवा की सिद्धि को प्राप्त करेंगे। अब वाणी में आना सहज हो गया है और दिल से भी करते हो क्योंकि अभ्यास पक्का हो गया है। ऐसे यह अभ्यास भी नेचुरल हो जायेगा। इस नेचुरल अभ्यास से ही नेचर बदली होगी। चाहे मनुष्य आत्माओं की नेचर, चाहे प्रकृति (नेचर)। समझा? मुश्किल तो नहीं लगता है ना! बड़े ते बड़े बाप के बच्चे हैं और बड़े-ते-बड़ी प्राप्ति के अधिकारी हैं, तो उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं। अटेन्शन रखना तो आता है ना कि टेन्शन रखना आता है। निजी संस्कार अटेन्शन के हैं। जब टेन्शन रखना आता है तो अटेन्शन रखना क्या बड़ी बात है? टेन्शन रखने में तो आदती हो गये ना। अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखो लेकिन नेचुरल अटेन्शन हो। कई ऐसा भी करते हैं –अटेन्शन को टेन्शन में बदल देते, इसलिए होता है। अटेन्शन को अटेन्शन के रूप में करो, बदली नहीं करो। ओरीज्नल अभ्यास आत्मा को न्यारे होने का है। न्यारी थी, न्यारी है, फिर न्यारी बनेगी। सिर्फ अटैचमेंट न्यारा बनने नहीं देता है। वैसे आत्मा की ओरीज्नल नेचर शरीर से न्यारे रहने की है, अलग है। शरीर आत्मा नहीं, आत्मा शरीर नहीं। तो न्यारे हुए ना। सिर्फ ६३ जन्मों से अटैचमेंट की आदत पड़ गई है। ओरीज्नल तो ओरीज्नल ही होता है। अच्छा।

डबल विदेशी भी बहुत पहुंच गये हैं–नया वर्ष मनाने के लिए। मेहमान बनकरके आये हो या बच्चे बनकर आये हो? अपनापन लगता है ना। बापदादा भी बच्चों को अपने घर में देख हर्षित होते हैं। बच्चे सदैव घर का श्रृंगार होते हैं। बच्चों से मधुबन सज जाता है, इसलिए बापदादा अपने घर के श्रृंगार को देख खुश हो रहे हैं। चाहे भारतवासी, चाहे विदेशी –दोनों ही घर के श्रृंगार हैं। बापदादा आने ही भी मुबारक देते हैं, जाने की भी मुबारक देते हैं। यहाँ आना भी अच्छा है, जाना भी अच्छा है। विदाई नहीं है, बधाइयां ही बंधाइयां हैं। जायेंगे तो सेवा की बधाइयां और यहाँ आये हो तो मिलने की बधाइयां। दोनों ही मुबारक है ना। अच्छा।

सर्व देश-विदेश के सदा अधिकारी बच्चों को, सदा ज्ञान और याद के सार में रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा आना और जाना इस स्मृति से सम्पन्न बनने वाली आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले, कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचने वाले योगी आत्माओं को, सदा अपनेपन के अनुभव और अधिकार की खुशी में रहने वाले खुशमिज़ाज बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

31-12-89

नये वर्ष पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

आज जनव विश्व-निर्माता, विश्व के बाप अपने समीप साथी नव-निर्माणकर्ता बच्चों को देख रहे हौ। आप सब बच्चे बाप के नव-निर्माण करने के कार्य में समीप संबंधी हो। वैसे विश्व नव-निर्माण के कार्य में प्रकृति भी सहयोगी बनती है, वर्तमान समय के नामी-ग्रामी वैज्ञानिक बच्चे भी सहयोगी बनते हैं लेकिन आप सभी समीप के साथी हो। सभी बच्चों के इस ब्राह्मण-जीवन का विशेष कर्तव्य अथवा सेवा क्या है? दिन-रात सेवा के उमंग-उत्साह में उड़ रहे हो। किस कार्य के लिए? विश्व को नया बनाने के लिए। दुनिया वाले तो नया वर्ष मनाते हैं लेकिन आपकी दिल में यह लग्न है–इस विश्व को ऐसा नाया बना देवें जो सब बातें नई हो जाएं। मनुष्य आत्मायें, चाहे प्रकृति सतोप्रधान नई बन जाए। पुरानी दुनिया को तो देख ही रहे हो। चारों ओर हाहाकार है। तो हाहाकार की

दुनिया से जय-जयकार की दुनिया बना रहे हो जिसमें हर घड़ी, हर कर्म, हर वस्तु नई बन जायेगी। वैसे भी हर एक व्यक्ति को सब कुछ नया ही अच्छा लगता है ना। पुरानी चीजें अगर अच्छी भी लगती हैं तो यादगार-मात्र, यूज़ करने के लिए अच्छी नहीं लगेंगी। सिर्फ म्यूजियम में यादगार बनाके रखेंगे लेकिन नई चीज़ हर एक को पसन्द आती हैं। इस समय आप ब्राह्मण आत्मायें पुरानी दुनिया में होते हुए भी नई दुनिया में हो। दूसरी आत्मायें पुरानी दुनिया में हैं लेकिन आप कहाँ हो ? आप नये युग ''संगम'' पर रहते हो। पुराना जीवन समाप्त हो गया और अब नये ब्राह्मण-जीवन में हो। दुनिया वाले एक दिन नया वर्ष मनाते हैं लेकिन आपका तो है ही नया युग, नई जीवन। हर कर्म, हर सेकण्ड नया है। तुम हो संगम पर। एक तरफ पुरानी दुनिया और दूसरी तरफ नई दुनिया देख रहे हो। तो बुद्धि किस तरफ जाती है? नये तरफ वा कभी-कभी पुरानी दुनिया तरफ भी चली जाती है? पुरानी दुनिया अच्छी लगती है क्या? जो चीज़ अच्छी नहीं लगती तो वहाँ बुद्धि क्यों जाती है? पुरानी दुनिया से दु:ख, अशान्ति, परेशानी के अनुभव कर लिये हैं या अभी थोड़ा अनुभव करना है?

आज तो मिलने और मनाने के लिए आये हैं। आप सभी भी दूरदेश से आकर पहुंचे हो नया वर्ष मनाने लिए। तो नये वर्ष के लिए, अपने लिए, विश्व की सेवा के लिए और अपने समीप साथियों के लिए, प्रकृति के लिए और अपने दूर के परिवार के लिए क्या सोचा? नये वर्ष में क्या नया करेंगे? सिर्फ अपने लिए तो नहीं सोचना है ना! बेहद के बाप के बच्चे आप भी बेहद के हो। तों सबका सोचेंगे ना, क्योंकि इस समय बापदादा के साथ आप सभी की भी जिम्मेवारी है। बाप है करावनहार लेकिन करने के निमित्त आप तो हो ना!

बापदादा ने दो वर्ष पहले–नये वर्ष में क्या नवीनता लानी है वह डॉयरेक्शन दिये थे। बीच में एक वर्ष एक्स्ट्रा मिल गया। तो आज अमृतवेले बापदादा देख रहे थे कि हर एक बच्चे ने अपने में नवीनता कहाँ तक लाइट है! मन्सा में, वाणी में, कर्म में क्या नवीनता लाई और सेवा-सम्पर्क में क्या नवीनता लाई? जो अगले वर्ष मन्सा का चार्ट रहा वह अभी मन्सा का चार्ट क्या है? ऐसे सब बातों का चार्ट चेक करो। नवीनता अर्थात् विशेषता। सब बातों में विशेषता लाई? मन्सा की विशेषता उड़ती कला के हिसाब से कैसी है? उड़ती कला वालों की विशेषता अर्थात् हर समय हर आत्मा के प्रति स्वत: ही शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन अपने को और दूसरों को भी अनुभव हों अर्थात् मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें स्वत: ही निकलती रहें। मन्सा सदा इस सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में सदा बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: ही होनी चाहिए। वाचा सेवा के बहुत अच्छे प्लैन्स बनाते हो। यह कान्फ्रेन्स करेंगे–नेशनल करेंगे, अभी इंटरनेशनल करेंगे, वर्गीकरण की करेंगे। तो वाचा की सेवा में अपने को बिजी रखने के लिए एक के पीछे दूसरा प्लैन पहले ही सोचते हो। इसमें बिजी रहना आ गया है। मैजारिटी अच्छे उमंग से इस सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। बिजी रहने का तरीका आ गया है। लेकिन मन्सा सेवा में भी बिजी रहें–इसमें मैनारिटी हैं, मैजारिटी नहीं हैं। जब कोई ऐसी बात सामने आती है तो उस समय विशेष मन्सा सेवा की स्मृति आती है। लेकिन निरन्तर जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। यह विशेषता और ज्यादा चाहिए। वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी। जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी और जो अपने प्रति भी कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है–अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी। छोटी-छोटी बात जो बड़ी बन जाती है वह सब ऐसे समाप्त हो जायेगी जो आप स्वयं सोचेंगे कि यह तो जादू हो गया! अभी जादूमंत्र पसन्द आता है ना! तो यह अभ्यास जादू का मन्त्र हो जायेगा। जहाँ मन्त्र होता है वहाँ अन्तर जल्दी आता है, इसलिए जादूमन्त्र कहते हैं। तो नये वर्ष में जादू का मन्त्र यूज़ करो। यह नवीनता वा विशेषता करो और जादू का मन्त्र क्या है? मन्सा और वाचा-दोनों का मेल करो। दोनों का बैलेन्स, दोनों का मिलन–यही जादू का मन्त्र है। जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा। संगठन में कभी-कभी घबरा जाते हो। सोचते हो–हमने तो वायदा किया था ''बाप और मैं'', यह थोड़ेही वायदा किया था कि संगठन में रहेंगे। बाप तो बहुत अच्छा है, बाप के साथ रहना भी बहुत अच्छा है लेकिन संगठन में सबके संस्कारों में रहना, यह बहुत मुश्किल है। लेकिन यह भी बहुत सहज हो जायेगा क्योंकि मन से, दिल से हर आत्मा के प्रति दुआयें, शुभभावना, शुभकामना पावरफुल होने के कारण दूसरे के संस्कार दब जायेंगे। वह आपका सामना नहीं करेंगे और दबते-दबते समाप्त हो जायेंगे। फिर कहेंगे –हाँ, हम ४० के साथ भी रह सकते हैं। इस वर्ष चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को यह हर समय की नवीनता वा विशेषता अपने में लानी है। कभी-कभी सोचते हो ना कि अभी तो ९ लाख पूरे नहीं हुए हैं। अन्त तक ३३ करोड़ देवतायें हैं–उसकी तो बात ही छोड़ो। ९ लाख तो अच्छी आत्मायें चाहिए। पहली राजधानी में अच्छी आत्मायें चाहिए।

प्रजा भी अच्छी नम्बरवन चाहिए। क्योंकि वन-वन-वन शुरू होगा। तो उसमें जो भी प्रकृति होगी, व्यक्ति होंगे, वैभव होंगे–वे सब नम्बरवन होंगे। तो अभी नम्बरवन प्रजा ९ लाख बनाई है? कितने लाख तैयार किये हैं? आप जो रिपोर्ट बनाते हो उसमें तो कभी-कभी वाले भी एड करते हो ना। लेकिन अभी तो आधा भी नहीं हुआ है। नम्बरवन प्रजा भी कम से कम बाप के स्नेह का अनुभव अवश्य करेगी। सहयोग में रहते हैं, वह पहला कदम है। लेकिन दूसरा कदम है सहयोगी, स्नेही बनेंगे। समर्पण नहीं हो, वह दूसरी बात है लेकिन सदा बाप का स्नेह रहे। सिर्फ परिवार वा भाई-बहिनों का स्नेह नहीं। अभी यहाँ तक पहुंचे हैं–जो सेवा करते हैं उन्हों प्रति स्नेही बनते। लेकिन बाप के स्नेह की अनुभूति करें। उन्हों के भी दिल से बाबा निकले तब तो प्रजा बनेंगे। ब्रह्मा की प्रजा, पहले विश्व-महाराजन की बनेगी। जिसकी प्रजा बननी है, उसका स्नेह तो अभी से चाहिए ना। यह जो सोचते हो ना कि अभी तो बहुत सेवा पड़ी है, वह इस मन्सा-वाचा की सम्मिलित सेवा में विहंग-मार्ग की सेवा का प्रभाव देखेगे। पहले की सेवा से अभी की सेवा को विहंग-मार्ग की सेवा कहते हो। आगे चल करके और विहंग-मार्ग की सेवा का अनुभव करेंगे। बापदादा बच्चों की सेवा से खुश हैं। जब एक-एक की सेवा को देखते हैं तो एक-एक के प्रति बहुत स्नेह पैदा होता है। देश चाहे विदेश में सेवा की धुन तो अच्छी लगी हुई है। कितने गांवों में चारों ओर सेवा फैल रही है! मेहनत तो करते हैं लेकिन स्नेह के कारण मेहनत नहीं लगती है। भाग-दौड़ करके अपने को बिजी रखने की युक्ति अच्छी करते हैं। बाप का स्नेह और बाप की मदद एसे चला रही है। बापदादा बच्चों को देख खुश होते हैं–कितनी सेवा करते रहे हैं! जहाँ तक जैसे की है, बहुत अच्छा किया है। अभी और विहंग-मार्ग की सेवा के लिए जो विधि सुनाई, इससे क्वालिटी की आत्मायें समीप आयेंगी और वह क्वालिटी की आत्मायें अनेकों के निमित्त बनेंगी। एक से अनेक होते हुए विहंग-मार्ग की सेवा हो जायेगी। लेकिन क्वालिटी की सेवा में उन्हों को निमित्त बनाने अथवा उन्हों की बुद्धि को टच करने के लिए अपनी मन्सा बहुत शक्तिशाली चाहिए क्योंकि क्वालिटी वाली आत्मायें वाणी में तो पहले ही होशियार होती हैं लेकिन अनुभूति में कमजोर होती हैं, बिल्कुल ही खाली होती हैं। तो जो जिस बात में कमजोर होते हैं, उसको उसी कमजोरी का ही तीर लग सकता है और जब अनुभूति होती है तब समझते हैं कि यह तो हमारे से ऊंचे हैं। नहीं तो कभी-कभी मिक्स कर देते–आप लोग भी बहुत अच्छे हैं और भी सब अच्छे हैं, आपको भी भगवान् आशीर्वाद दे। यही कहके समाप्त कर देते हैं। लेकिन यह आशी-र्वाद से चल रहे हैं, परमात्म-आशीर्वाद से इन्हों की जीवन है–अब यह अनुभूति करानी है। अभी तो थोड़ा-थोड़ा अभिमान होता है। अपने को बड़ा समझने कारण समझते हैं इन्हों को हिम्मत दिलाते हैं। लेकिन फिर समझेंगे कि यह हमको भी हिम्मत दिलाने वाले हैं। अभी ऐसा जादू का मन्त्र चलाओ। अभी तो वाणी की सेवा द्वारा धरनी बनाई है, हल चलाया है, धरनी को सीधा किया है। इतनी रिजल्ट निकाली है। बीज भी डाला है लेकिन अभी उस बीज को प्राप्ति का पानी चाहिए। तो फल निकलने का अनुभव करेंगे। मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी समीप आयेगी। इसमें डबल सेवा है। स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। भविष्य प्रालब्ध तो है विश्व का राज्य लेकिन इस समय की प्रालब्ध है ''सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों सेसम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना''। इस समय की प्रालब्ध सबसे श्रेष्ठ है। भविष्य की तो है ही गारंटी। भगवान की गारंटी कभी बदल नहीं सकती। तो ऐसा नया वर्ष मनायेंगे ना? सबसे पहले सेवा आरम्भ कौन करेगा? मधुबन। क्योंकि मधुबन वालों को कहते हैं–चुल पर भी हैं और दिल पर भी हैं, बेहद के भण्डारे से सदा ब्रह्मा भोजन खाने वाले हैं। वैसे तो इस समय आप सब मधुबन में बैठे हो, मधुबन निवासी हो और आप लोगों से अगर कोई पूछे–आपकी परमानेंट एड्रेस कौन सी है? तो मधुबन ही कहेंगे ना! वा जहाँ रहते हो वह परमानेंट एड्रेस है? ब्रह्माकुमार/कुमारी अर्थात् परमानेंट एड्रेस एक ही है, बाकी वहाँ सेवा के लिए भेजा गया है। ऐसे नहीं–हम तो विदेशी हैं, नहीं। हम ब्राह्मण हैं, बाप ने वहाँ भेजा है सेवा अर्थ। यह बुद्धि की टचिंग से आपको वहाँ भेजा गया है। बाप के संकल्प से वहाँ पहुंचे हो। राज्य भारत में करेंगे वा लण्डन में? कभी भी यह नहीं सोचना हम तो विदेश में पैदा हुए हैं तो वहाँ के हैं। ब्रह्मा से पैदा हुए न कि विदेश से। नहीं तो फिर विदेश-कुमार, विदेशी कुमारी कहलाओ। ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी हो ना! जैसे भारत में कोई यू.पी. के हैं, कोई देहली के हैं। वैसे आप भी सेवा अर्थ गये हो विदेश में। विदेशी हो नहीं। यह नशा है ना। सेवास्थान वह है, जन्म स्थान मधुबन है। वह हिसाब-किताब खत्म हुआ तब तो ब्राह्मण बनें। हिसाब खत्म तो हिसाब का किताब ही जल गया। गवर्मेन्ट से छूटने के लिए भी कितना को ही जला देते हैं ना। तो पुराना खाता खत्म कर दिया ना! कोई होशियार होते हैं तो वह पूरा ही अपना खाता खत्म कर देते हैं और जो होशियार नहीं होते वह कहीं-न कहीं कर्ज में अटके हुए होते हैं, उधार में फंसे हुए होते हैं। होशियार कभी भी फंसे हुए नहीं होते। तो हिसाब का किताब खत्म माना कोई उधार नहीं, सब खाते साफ। सबसे अच्छी रीति-रस्म ब्राह्मणों की है। अच्छा।

चारों ओर के सर्व सेवा के समीप साथियों को, सर्व हिम्मतवान और बाप के मदद के पात्र आत्माओं को, सदा मन्सा और वाचा–डबल सेवा साथ-साथ करने वाले विहंग-मार्ग के सेवाधारियों को, सदा बाप के समान सर्व आत्माओं प्रति दुआयें देने वाले मास्टर सतगुरू बच्चों को, सदा स्वयं में हर समय नवीनता वा विशेषता लाने वाले सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

1-1-90 प्रात: अमृतवेले 1.45 पर बापदादा ने नये वर्ष की मुबारक दी–

चारों ओर के सर्व नव-निर्माण करने वाले सेवाधारी बच्चों को, नव जीवन में हर समय नवीनता लाने वाले, हर समय अपने वायब्रेशन्स द्वारा सर्व को नई जीवन देने वाले–ऐसे नव जीवन और नवयुग और नई राजधानी में चलने वाले, सदा नवीनता अनुभव करने वाले ऐसे बच्चों को नये वर्ष की अविनाशी मुबारक हो। सदा ही सेवा और बाप, एक आंख में सेवा दूसरी आंख में बाप–इस विधि से सेवा में भी नवीनता लाते रहो। नया दिन है, नई रात है और नये ते नई सेवा सफलता को पाती रहेगी। सफलता की मुबारक। अच्छा! सभी बच्चों को गोल्डन मार्निंग।

डबल विदेशी भाई-बहिनों से अव्यक्त-बापदादा की मुलाकात

सदा अपने को विशेष आत्मायें समझते हो? विशेष आत्माओं का कार्य वा सेवा क्या है? विशेष आत्माओं की विशेषता वा सेवा हर कर्म में यही होगी जो उनका एक-एक कर्म विशेषता अनुभव करायेगा। उनकी वृत्ति विशेष होगी, साधारण नहीं होगी। दृष्टि में विशेषता होने के कारण अलौकिक अनुभव होंगे। सबको महसूस होगा कि इनकी दृष्टि में अलौकिकता है, रिवाजी नहीं है। उनका हर कर्म विशेष है, यह अनुभव होगा। साधारण रीति से जो काम-काज के लिए बोल होते हैं, उस बोल में भी साधारणता नहीं होगी, विशेषता होगी। चाहे साधारण कार्य कर रहे हैं–खाना बना रहे हैं, कपड़े धुलाई कर रहे हैं। कोई भी साधारण कार्य कर रहे हैं लेकिन उस कार्य में भी विशेषता अनुभव होगी। क्या विशेषता अनुभव होगी? सभी अनुभव करेंगे कि यह काम तो हाथ से कर रहे हैं लेकिन काम करते हुए भी यह शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हैं, कर्मयोगी हैं। सिर्फ कर्मकर्ता नहीं हैं लेकिन योगयुक्त होकर कर्म कर रहे हैं–यह महसूसता आयेगी। चाहे साधारण रीति से चल रहे हैं, खड़े हैं लेकिन उसकी रूहानी पर्सनैलिटी दूर से अनुभव होगी। जैसे दुनियावी पर्सनैलिटी उनको आकर्षित करती है, अटेन्शन जाता है। ऐसा रूहानी पर्सनैलिटी, प्योरिटी की पर्सनैलिटी, ज्ञानी वा योगी तू आत्मा की पर्सनैलिटी स्वत: आकर्षित करेगी। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–चाहे बच्चों के साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनैलिटी सदा आकर्षित करती रही। तो ऐसे विशेष आत्माओं की भी यही निशानी दिखाई देगी।

आप लोग तो कहेंगे कि हमने ब्रह्मा बाप को तो देखा नहीं। आपने देखा है? जिन्होंने देखा है, उनके लिए तो सहज है लेकिन आप सबने ब्रह्मा बाप को नहीं देखा है! ब्रह्मा बाप के कमरे में जब जाते हो तो पर्सनैलिटी अनुभव नहीं होती है? डबल फॉरेनर्स ने जो बहुत अच्छी तरह से देखा है। क्योंकि ब्रह्मा बाप विशेष जिन्होंने साकार रूप में नहीं देखा, उन्हें कभी अव्यक्त रूप में विशेष अनुभव कराते हैं। इसीलिए साकार आंखों से देखने से ज्यादा अनुभव की आंख से देखना श्रेष्ठ है। तो अनुभव की आंख से देखा है ना! बापदादा अच्छे-अच्छे अनुभव सुनते रहते हैं। तो सदा अपने इस रूहानी पर्सनैलिटी में रहो तब बाप के समीप अनुभव करेंगे।

अच्छा! बापदादा का विशेष प्यार किससे है? सभी को कहना चाहिए–मेरे से है। हर एक कहता है–मेरा बाबा, यह थोड़े ही कहता है–फलाने का बाबा। तो हरेक से बाप का विशेष प्यार है। प्यार में नम्बर है? बाप प्यार किसको करते हैं? हर-एक बच्चे की विशेषता से प्यार करते हैं और कोई ऐसा बच्चा नहीं है जिसमें विशेषता न हो, इसीलिए सभी से प्यार है। आप भी हर एक की विशेषता को देखो तो सबसे प्यार होगा। अगर दूसरी बात देखेंगे तो किससे ज्यादा प्यार होगा, किससे कम होगा, किसकी बातें अच्छी लगेंगी, किसकी अच्छी नहीं लगेंगी, किसके साथ रहना अच्छा लगेगा, किसके साथ नहीं। लेकिन बाप देखते हुए भी और बातें नहीं देखते, विशेषता ही देखते हैं, इसलिए सबसे प्यार है। तो इसमें फॉलो फॉदर करो। जैसे हंस होता है, हंस का काम है पत्थर-कंकड़ और रत्न को छांटना। रत्न चुगता है, पत्थर नहीं। तो आप भी होलीहंस हो, आपका काम है हरेक की विशेषता को देखना और उनकी विशेषता को सेवा में लगाना। उन्हें विशेषता के उमंग में लाकर उन द्वारा उनकी विशेषता सेवा में लगाओ तो उनकी दुआयें आपको मिलेगी। तो विशेषता सिर्फ देखना नहीं लेकिन देखकरके अपने में धारण करना और धारण करने के साथ-साथ उनकी विशेषता से सेवा लो और उनको भी महत्व बताकर सेवा में लगाओ तो दुआयें मिलेंगी और आपने उनकी विशेषता द्वारा उनको सेवा में लगाया तो वह जो सेवा करेगा उसका शेयर आपको मिलेगा। तो शेयर-होल्डर हो जायेंगे।

आजकल की दुनिया में भी यह कमाई बहुत होती है। तो आपका एक-एक शेयर पद्मों से भी बड़ा है। तो जैसे बाप ने आप सबकी विशेषता से कार्य लिया है तब तो सेन्टर सम्भाल रहे हो, सेवा कर रहे हो। बाप ने स्मृति दिलाई–आप ऐसे हो...! बापदादा सदैव बच्चों को विशेष आत्माओं की नजर से देखते हैं, साधारण नजर से नहीं देखते। यह प्यारा है, यह घोड़े सवार है, यह महारथी है–जानते भी हैं लेकिन देखते उसी नजर से हैं। ऐसे ही आप भी विशेषता को देखो। अपनी भी विशेषता को जानो और उसे सेवा में लगाओ। अभिमान में नहीं आना क्योंकि यह विशेषतायें ब्राह्मण-जीवन में बाप की देन है, बाप का दिया हुआ वरदान है। इसमें अगर अभिमान किया तो विशेषता गायब हो जायेगी। इसलिए सेवा में जरूर लगाओ, अभिमान में नहीं आओ। अच्छा।